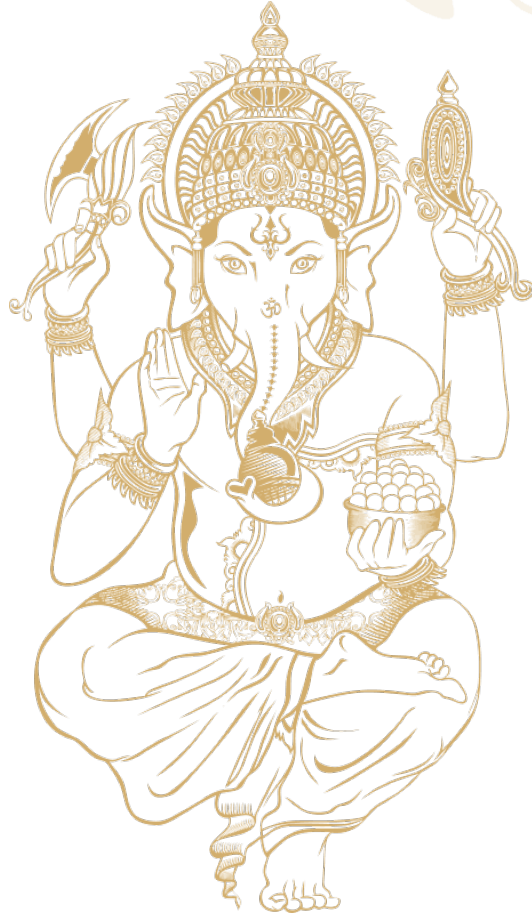




ADREETA

13 Nov 2008

11:57 AM

Gzb

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120176701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 13/11/2008
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 11:57:00 घंटे
इष्ट _____: 13:08:15 घटी
स्थान _____: Gzb
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:40:08 उत्तर
रेखांश _____: 77:27:13 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:11 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:36:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:43 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:07:47 घंटे
सूर्योदय _____: 06:41:41 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:27:15 घंटे
दिनमान _____: 10:45:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 27:15:56 तुला
लग्न के अंश _____: 09:34:58 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: वरियान
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: अ-आकांक्षा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	कार्तिक	22
पंजाबी	संवत : 2065	कार्तिक	29
बंगाली	सन् : 1415	कार्तिक	27
तमिल	संवत : 2065	आइपसी	28
केरल	कोल्लम : 1184	तुलम	28
नेपाली	संवत : 2065	कार्तिक	28
चैत्रादि	संवत : 2065	कार्तिक	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2065	कार्तिक	शुक्ल 15

पंचांग

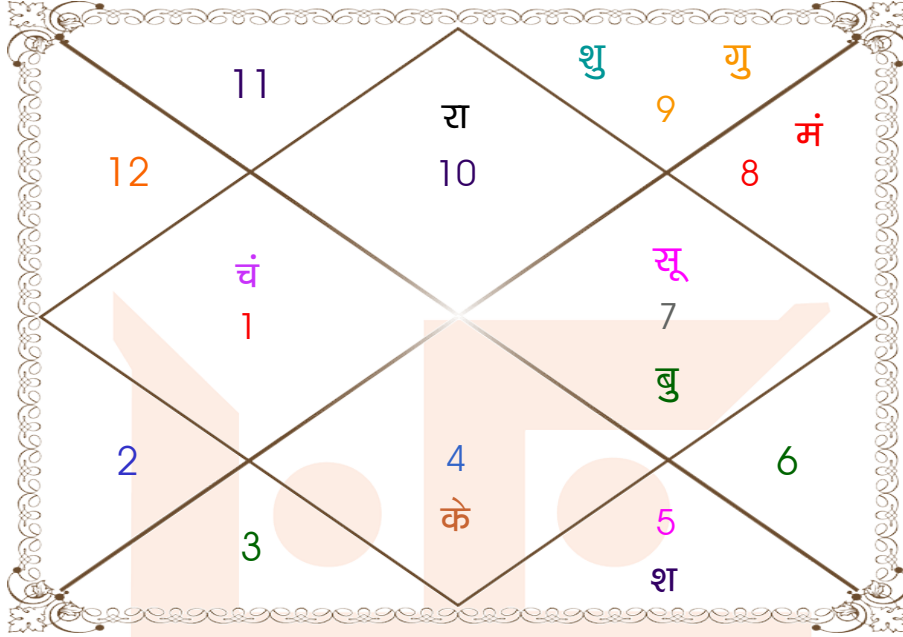
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
 तिथि समाप्ति काल _____ : 11:47:22
 जन्म तिथि _____ : 1
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : भरणी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:50:50 घंटे
 जन्म योग _____ : कृतिका
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वरियान
 योग समाप्ति काल _____ : 19:57:18 घंटे
 जन्म योग _____ : वरियान
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
 करण समाप्ति काल _____ : 11:47:22 घंटे
 जन्म करण _____ : बालव
 भयात _____ : 02:45:27
 भभोग _____ : 52:52:32
 भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 5 वर्ष 8 मा 7 दि

घात चक्र

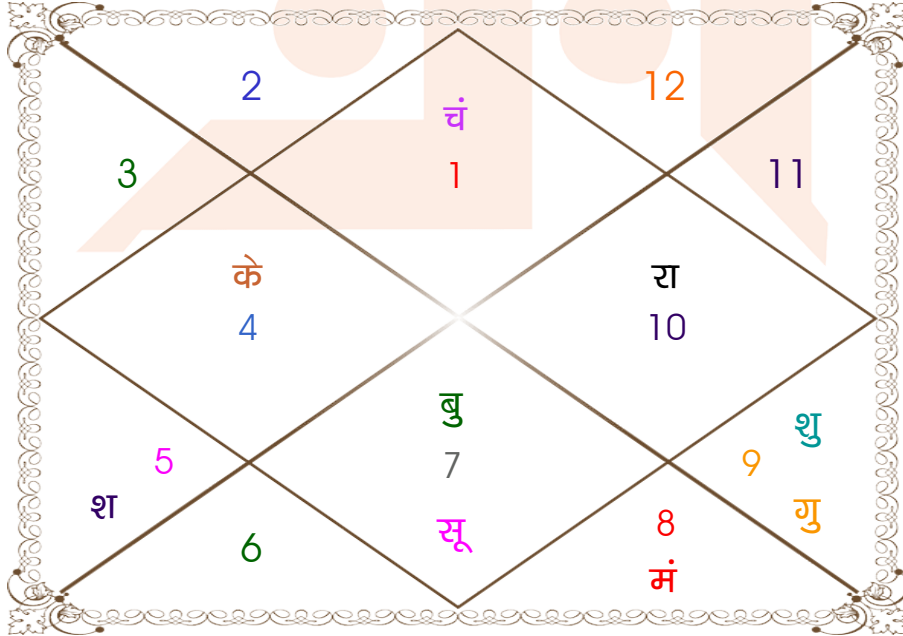
मास _____ : कार्तिक
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : रविवार
 नक्षत्र _____ : मघा
 योग _____ : विष्कुम्भ
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : सर्प
 लग्न _____ : मेष
 सूर्य _____ : कर्क
 चन्द्र _____ : मेष
 मंगल _____ : सिंह
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कन्या
 शुक्र _____ : तुला
 शनि _____ : मिथुन
 राहु _____ : वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	चं		
			के
रा ल			श
शु गु	मं	बु सू	

लग्न कुंडली

	चं		
के			रा ल
श		सू बु	गु शु
		मं	

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 8मा 7दि
सूर्य

13/11/2008

23/07/2128

सूर्य	23/07/2014
चन्द्र	22/07/2024
मंगल	23/07/2031
राहु	22/07/2049
गुरु	22/07/2065
शनि	22/07/2084
बुध	23/07/2101
केतु	23/07/2108
शुक्र	23/07/2128

योगिनी
उल्का 5वर्ष 8मा 7दि
संकटा

22/07/2021

22/07/2029

संकटा	03/05/2023
मंगला	23/07/2023
पिंगला	01/01/2024
धान्या	01/09/2024
भ्रामरी	22/07/2025
भद्रिका	01/09/2026
उल्का	01/01/2028
सिद्धा	22/07/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



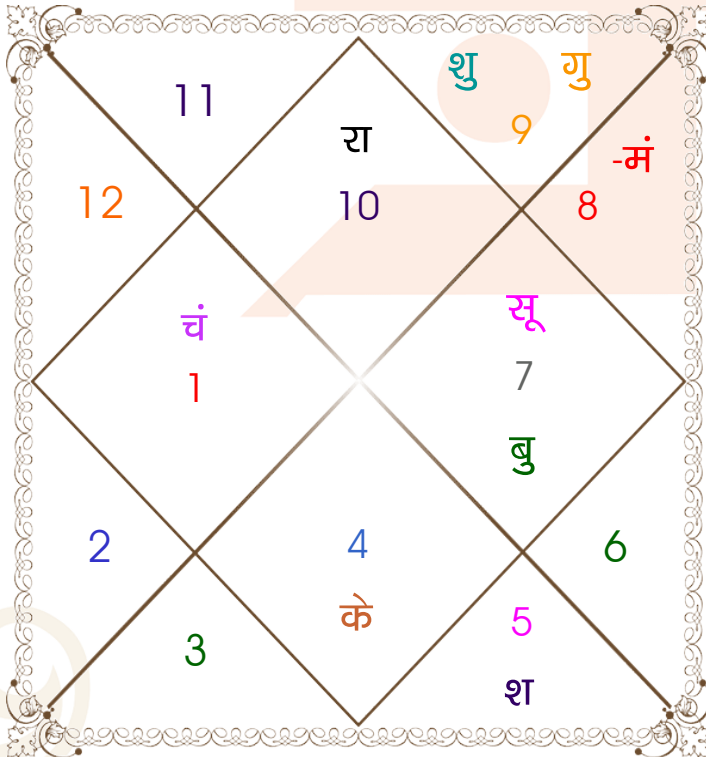
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	09:34:58	408:33:29	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			तुला	27:15:56	01:00:22	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			मेष	27:21:34	15:05:01	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	सम राशि
मंगल	अ		वृश्चि	03:49:03	00:42:42	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	स्वराशि
बुध	अ		तुला	19:58:25	01:37:03	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मित्र राशि
गुरु			धनु	24:50:54	00:10:26	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	स्वराशि
शुक्र			धनु	06:45:59	01:11:50	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
शनि			सिंह	25:43:24	00:04:49	पूर्वाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
राहु	व		मक	19:09:13	00:11:10	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	19:09:13	00:11:10	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	मित्र राशि
हर्ष	व		कुंभ	24:50:32	00:00:43	पूर्वाभाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	---
नेप			मक	27:31:06	00:00:22	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
प्लूटो			धनु	05:34:21	00:01:49	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	---
दशम भाव			तुला	25:25:09	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	बुध	--

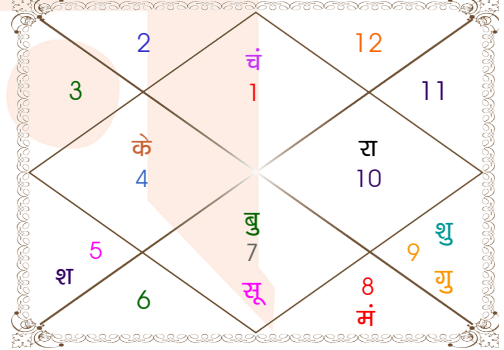
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:59:02

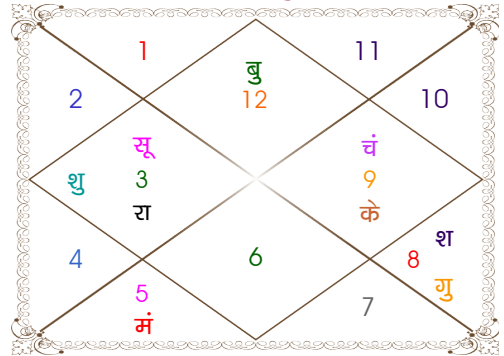
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 27:13:20	मकर 09:34:58
2	मकर 27:13:20	कुम्भ 14:51:42
3	मीन 02:30:04	मीन 20:08:25
4	मेष 07:46:47	मेष 25:25:09
5	वृष 07:46:47	वृष 20:08:25
6	मिथुन 02:30:04	मिथुन 14:51:42
7	मिथुन 27:13:20	कर्क 09:34:58
8	कर्क 27:13:20	सिंह 14:51:42
9	कन्या 02:30:04	कन्या 20:08:25
10	तुला 07:46:47	तुला 25:25:09
11	वृश्चिक 07:46:47	वृश्चिक 20:08:25
12	धनु 02:30:04	धनु 14:51:42

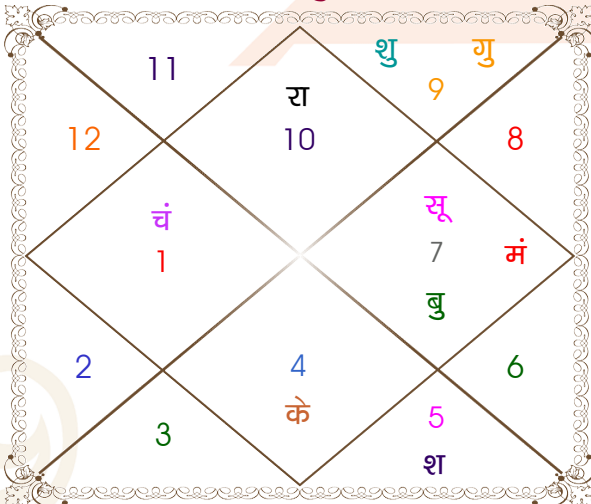
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	09:34:58
2	कुम्भ	19:14:08
3	मीन	25:55:33
4	मेष	25:25:09
5	वृष	19:58:08
6	मिथुन	13:16:07
7	कर्क	09:34:58
8	सिंह	19:14:08
9	कन्या	25:55:33
10	तुला	25:25:09
11	वृश्चिक	19:58:08
12	धनु	13:16:07

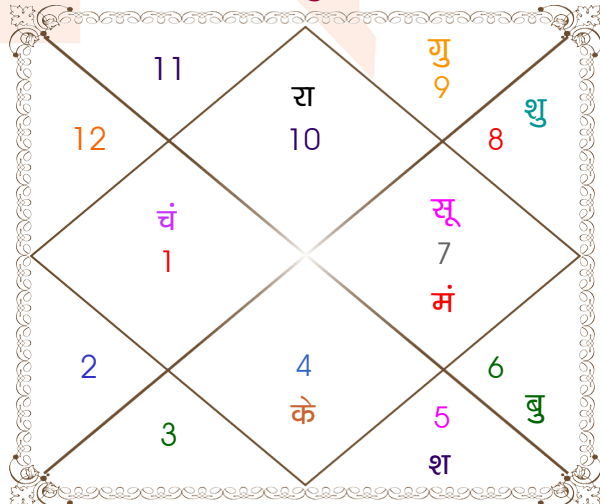
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



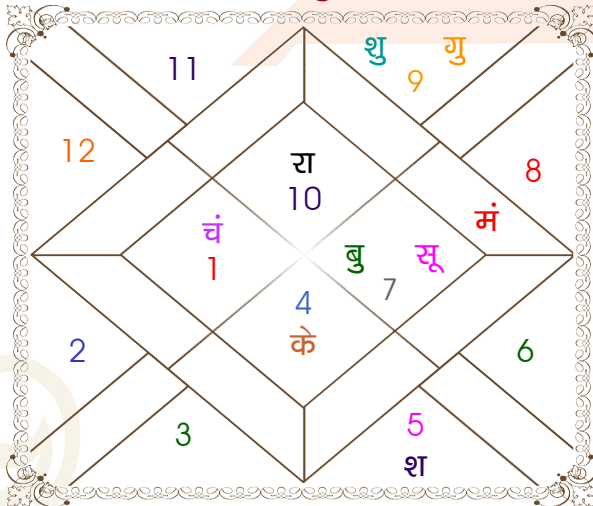
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	मृत भीत उपवेशन 0.96 68 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत शक्त आगम 4.36 71 %
मंगल	कलत्र	भातृ	मृत विकल आगम 0.00 28 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध विकल उपवेशन 0.00 43 %
गुरु	मातृ	धन	मृत स्वस्थ नृत्यलिप्सा 0.59 32 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार शान्त आगम 1.55 40 %
शनि	भातृ	आयु	मृत खल आगमन 3.49 31 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार मुदित उपवेशन 0.00 45 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार मुदित आगम 0.00 45 %
कुल			10.95

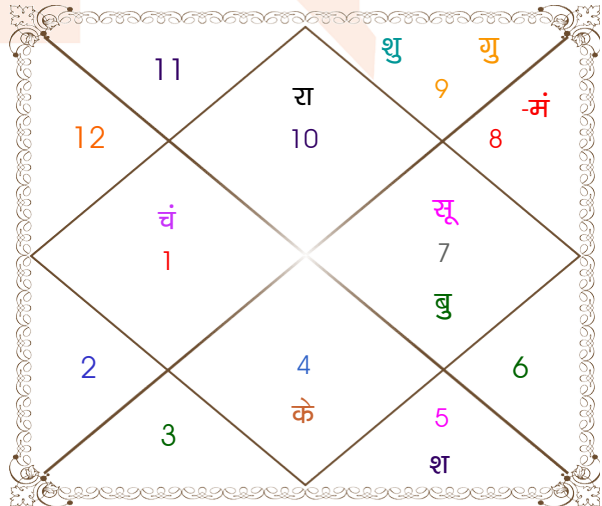
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



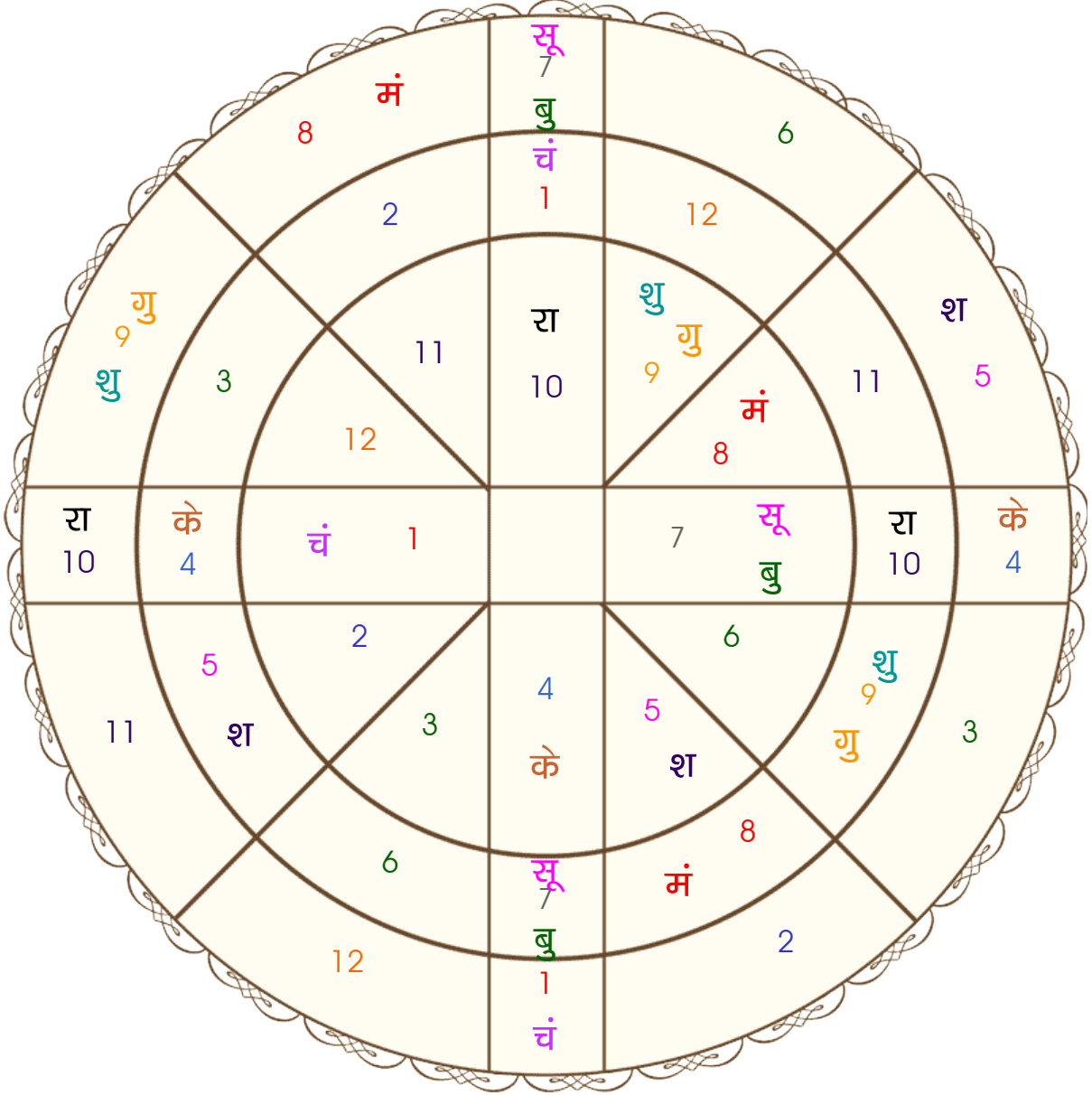
लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

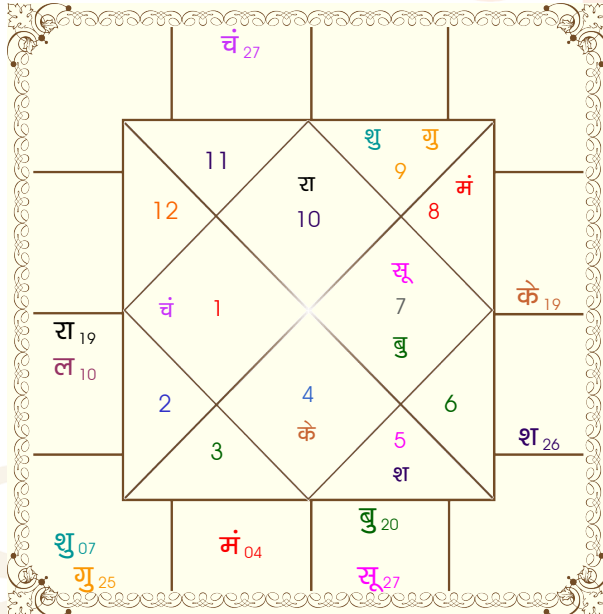
भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 7 मास 20 दिन

ग्रह				निरयण भाव			
ग्रह	व	राशि अंश	रा न अं. प्र.	भाव राशि अंश	रा न अं. प्र.	भाव राशि अंश	रा न अं. प्र.
सूर्य	तुला	27:22:24	शुक्र गुरु शुक्र राहु	1 मक	09:41:26	शनि सूर्य शुक्र बुध	शुक्र बुध
चंद्र	मेष	27:28:03	मंगलसूर्य चंद्र मंगल	2 कुंभ	19:20:36	शनि राहु मंगलराहु	मंगलराहु
मंगल	वृश्चि	03:55:31	मंगलशनि शनि बुध	3 मीन	26:02:01	गुरु बुध राहु मंगल	राहु मंगल
बुध	तुला	20:04:53	शुक्र गुरु गुरु गुरु	4 मेष	25:31:37	मंगलशुक्र बुध गुरु	बुध गुरु
गुरु	धनु	24:57:22	गुरु शुक्र बुध मंगल	5 वृष	20:04:36	शुक्र चंद्र केतु राहु	केतु राहु
शुक्र	धनु	06:52:27	गुरु केतु राहु शुक्र	6 मिथु	13:22:35	बुध राहु बुध चंद्र	बुध चंद्र
शनि	सिंह	25:49:53	सूर्य शुक्र बुध शनि	7 कर्क	09:41:26	चंद्र शनि शुक्र शनि	शुक्र शनि
राहु	व	मक	19:15:41	शनि चंद्र बुध गुरु	8 सिंह	19:20:36	सूर्य शुक्र राहु केतु
केतु	व	कर्क	19:15:41	चंद्र बुध केतु बुध	9 कन्या	26:02:01	बुध मंगलराहु मंगल
हर्ष	व	कुंभ	24:57:01	शनि गुरु बुध राहु	10 तुला	25:31:37	शुक्र गुरु बुध शनि
नेप	मक	27:37:35	शनि मंगलगुरु राहु	11 वृश्चि	20:04:36	मंगलबुध शुक्र मंगल	शुक्र मंगल
प्लूटो	धनु	05:40:50	गुरु केतु राहु राहु	12 धनु	13:22:35	गुरु शुक्र शुक्र शुक्र	शुक्र शुक्र

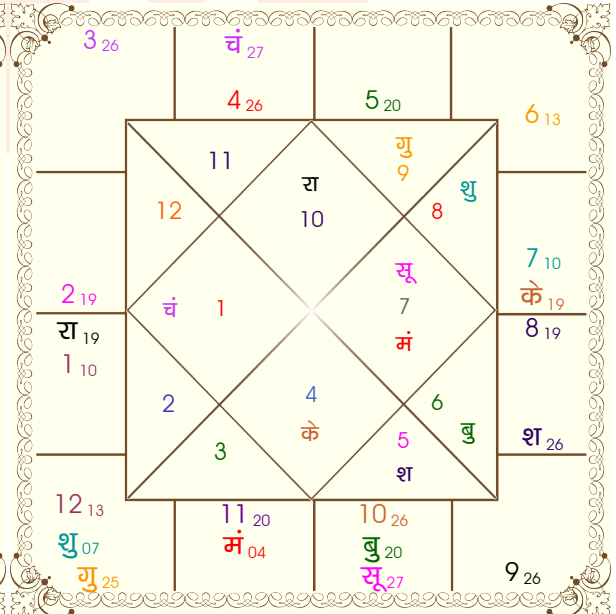
के.पी. अयनांश : 23:52:34

फॉरच्युना : कर्क 09:47:05

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- शनि- राहु,
2	मंगल- शनि-
3	सूर्य- बुध- गुरु-
4	चंद्र, मंगल- राहु,
5	गुरु- शुक्र- शनि-
6	बुध- केतु-
7	चंद्र- शुक्र, राहु- केतु,
8	सूर्य- चंद्र- मंगल, शनि,
9	बुध, केतु+
10	सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु- शुक्र- शनि-
11	मंगल- गुरु, शुक्र, शनि,
12	सूर्य+ बुध+ गुरु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 8- 10, 12+
चंद्र	4, 7- 8- 10,
मंगल	1- 2- 4- 8, 10, 11-
बुध	3- 6- 9, 12+
गुरु	3- 5- 10- 11, 12,
शुक्र	5- 7, 10- 11,
शनि	1- 2- 5- 8, 10- 11,
राहु	1, 4, 7-
केतु	6- 7, 9+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
लग्न राशि स्वामी
राशि नक्षत्र स्वामी
राशि स्वामी
वार स्वामी
लग्न अन्तर स्वामी
राशि अन्तर स्वामी

सूर्य
शनि
सूर्य
मंगल
गुरु
शुक्र
चन्द्र



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	रा	मं	श
2	--	--	मं	श
3	--	--	सू बु	गु
4	रा	चं	--	मं
5	--	--	गु श	शु
6	--	--	के	बु
7	शु	के	रा	चं
8	मं	श	चं	सू
9	के	बु	के	बु
10	चं	सू मं	गु श	शु
11	गु श	शु	--	मं
12	सू बु	गु	सू बु	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	8	1	तुला	10
चंद्र	7	5	मेष	4
मंगल	4,11	9	वृश्चिक	10
बुध	6,9	3,11	तुला	9
गुरु	3,12	10	धनु	12
शुक्र	5,10	4,8,12	धनु	11
शनि	1,2	7	सिंह	8
राहु	---	2,6	मकर	1
केतु	---	---	कर्क	7

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	3,12	10	12	5,10	4,8,12	11
चंद्र	8	1	10	7	5	4
मंगल	1,2	7	8	1,2	7	8
बुध	3,12	10	12	3,12	10	12
गुरु	5,10	4,8,12	11	6,9	3,11	9
शुक्र	---	---	7	---	2,6	1
शनि	5,10	4,8,12	11	6,9	3,11	9
राहु	7	5	4	6,9	3,11	9
केतु	6,9	3,11	9	---	---	7



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह दृष्टि विचार

दृश्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	207.27	27.36	213.82	199.97	264.85	246.77	145.72	289.15	109.15	324.84	297.52	245.57
सूर्य	--	सप्त	युति	युति	तृती	नवां	--	--	--	पंच	चतु	--
207.27	0.00	10.00	7.74	7.22	2.42	0.71	0.00	0.00	0.00	2.42	2.99	0.00
चंद्र	सप्त	--	सप्त	सप्त	--	--	पंच	--	--	--	--	--
27.36	10.00	0.00	7.80	7.15	0.00	0.00	2.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	युति	सप्त	--	युति	--	--	--	4था	--	--	4था	--
213.82	7.74	7.80	0.00	1.21	0.00	0.00	0.00	0.35	0.00	0.00	7.90	0.00
बुध	युति	सप्त	युति	--	तृती	--	--	चतु	--	पंच	--	अष्ट
199.97	7.22	7.15	1.21	0.00	0.87	0.00	0.00	2.93	0.00	0.88	0.00	0.59
गुरु	--	5वां	--	--	--	--	9वां	--	--	तृती	--	--
264.85	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00	3.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति
246.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92
शनि	3रा	--	3रा	3रा	पंच	--	--	--	--	सप्त	--	--
145.72	9.87	0.00	6.62	8.24	2.92	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	युति	--
289.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	6.40	0.00
केतु	--	--	--	चतु	--	--	--	सप्त	--	--	सप्त	--
109.15	0.00	0.00	0.00	2.93	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	6.40	0.00
हर्ष	--	तृती	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
324.84	0.00	2.37	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	चतु	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	--
297.52	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.40	6.40	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
245.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	279.58	314.86	350.14	25.42	50.14	74.86	99.58	134.86	170.14	205.42	230.14	254.86
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
207.27	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--	सप्त	--	--
27.36	0.00	0.00	0.00	9.79	0.00	0.00	0.94	0.00	0.00	9.79	0.00	0.00
मंगल	तृती	4था	--	सप्त	8वां	8वां	--	--	--	युति	--	--
213.82	0.18	4.03	0.00	6.38	1.38	4.03	0.00	0.00	0.00	6.38	0.00	0.00
बुध	--	पंच	षष्ठ	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
199.97	0.00	0.69	0.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.42	0.00	0.69
गुरु	युति	--	चतु	5वां	--	सप्त	सप्त	9वां	--	--	--	युति
264.85	0.28	0.00	1.00	9.98	0.00	5.01	0.28	5.01	0.00	0.00	0.00	5.01
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति
246.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.62
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	उरा	चतु	--
145.72	0.00	4.20	0.00	0.00	8.34	0.00	0.00	4.20	0.00	9.99	0.33	0.00
राहु	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
289.15	5.38	0.00	2.90	0.00	2.90	0.00	5.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--
109.15	5.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.38	0.00	0.00	0.00	2.90	0.00
हर्ष	--	युति	--	तृती	चतु	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--
324.84	0.00	5.02	0.00	2.97	1.00	0.00	0.92	5.02	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--
297.52	0.00	0.00	0.00	2.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
245.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

भाव दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	279.58	319.24	355.93	25.42	49.97	73.27	99.58	139.24	175.93	205.42	229.97	253.27
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
207.27	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	युति	--	अष्ट	पंचा	--	--	सप्त	--	--
27.36	0.00	0.00	0.00	9.79	0.00	0.14	0.94	0.00	0.00	9.79	0.00	0.00
मंगल	तृती	--	--	सप्त	8वां	8वां	--	--	--	युति	--	नवां
213.82	0.18	0.00	0.00	6.38	1.20	5.49	0.00	0.00	0.00	6.38	0.00	0.65
बुध	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
199.97	0.00	2.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.42	0.00	0.00
गुरु	युति	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	सप्त	9वां	--	--	--	युति
264.85	0.28	0.30	2.88	9.98	0.00	3.51	0.28	8.32	0.00	0.00	0.00	3.51
शुक्र	--	पंचा	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति
246.77	0.00	0.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.77
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	उरा	चतु	--
145.72	0.00	7.78	0.00	0.00	8.24	0.00	0.00	7.78	0.00	9.99	0.19	0.00
राहु	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
289.15	5.38	0.00	0.00	0.00	2.93	0.00	5.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--
109.15	5.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.38	0.00	0.00	0.00	2.93	0.00
हर्ष	--	युति	--	तृती	चतु	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--
324.84	0.00	8.33	0.00	2.97	0.87	0.00	0.92	8.33	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	तृती	चतु	--	अष्टां	--	--	--	--	--	--
297.52	0.00	0.00	2.74	2.56	0.00	0.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
245.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।



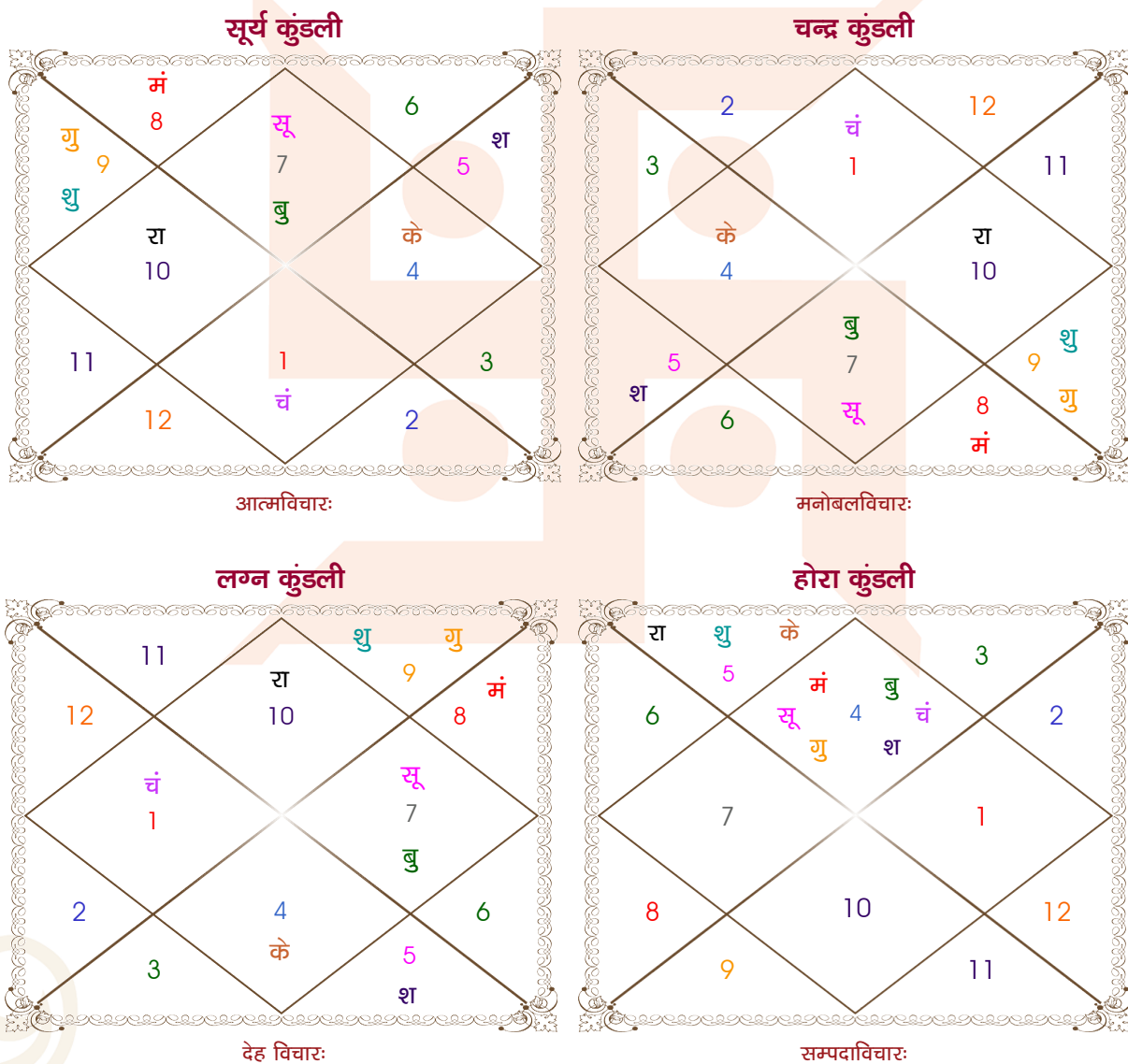
FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

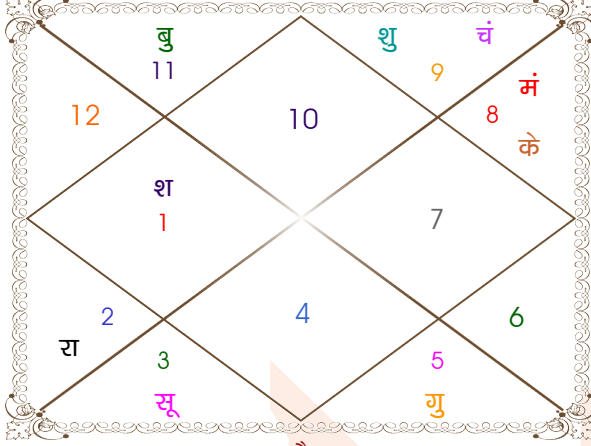
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



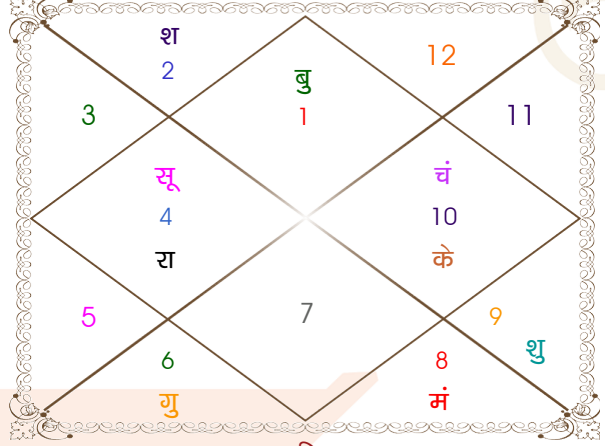
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



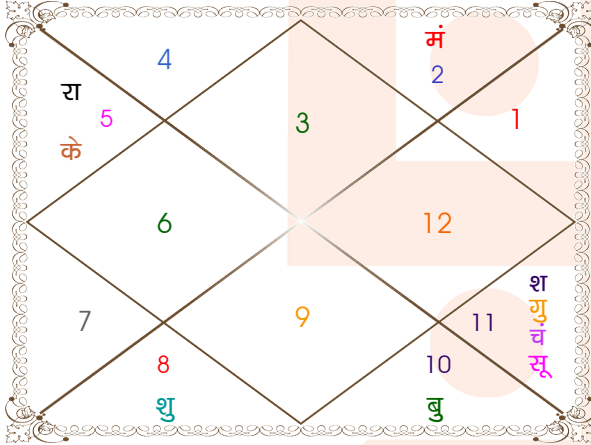
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



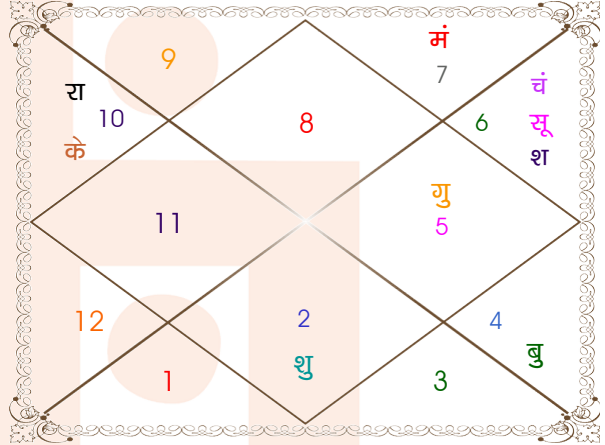
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



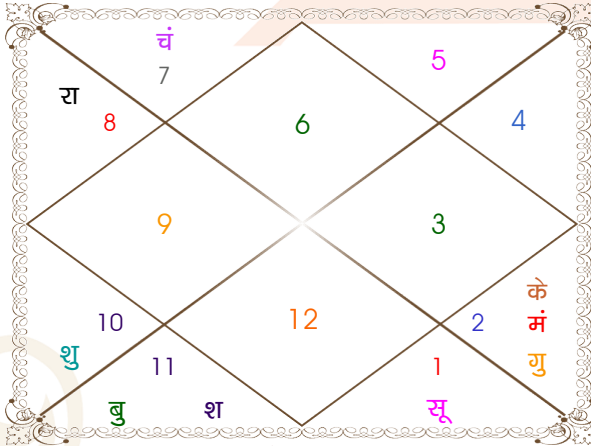
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



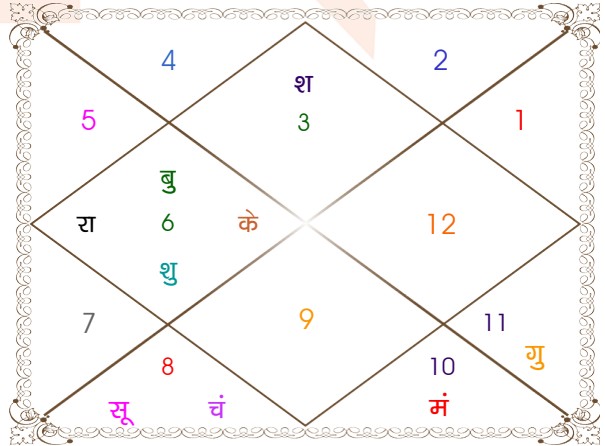
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

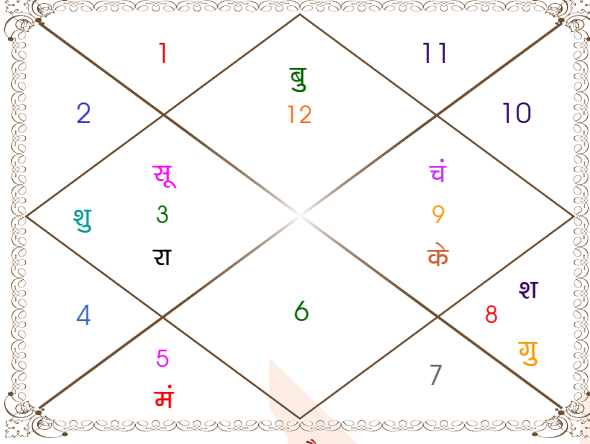


FUTUREPOINT
Astro Solutions



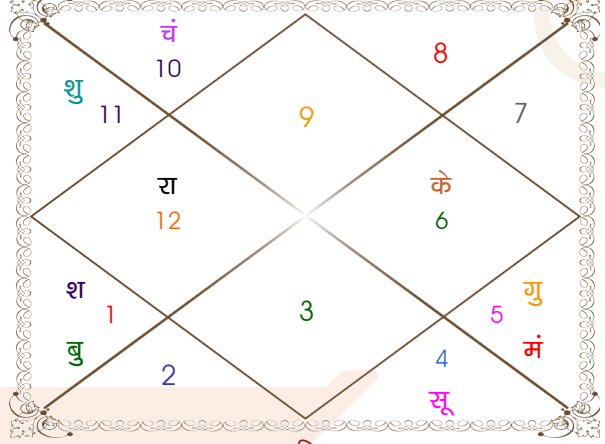
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



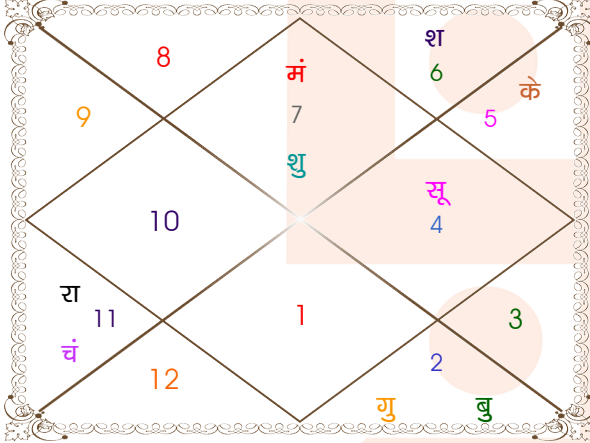
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



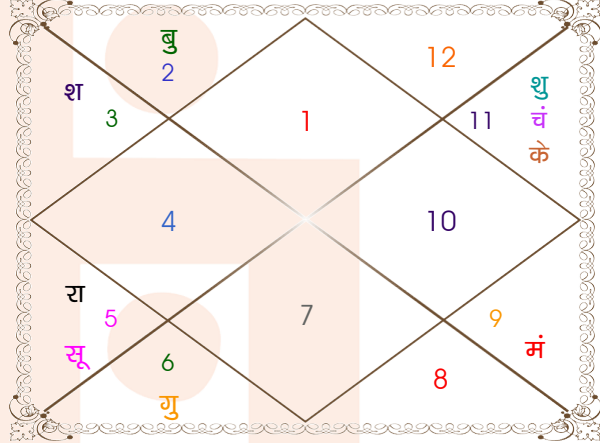
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



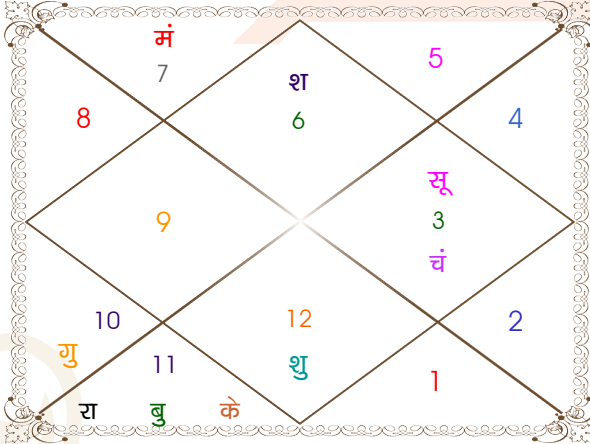
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



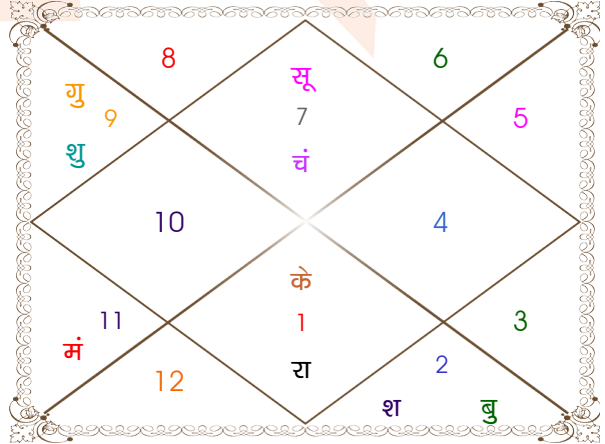
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

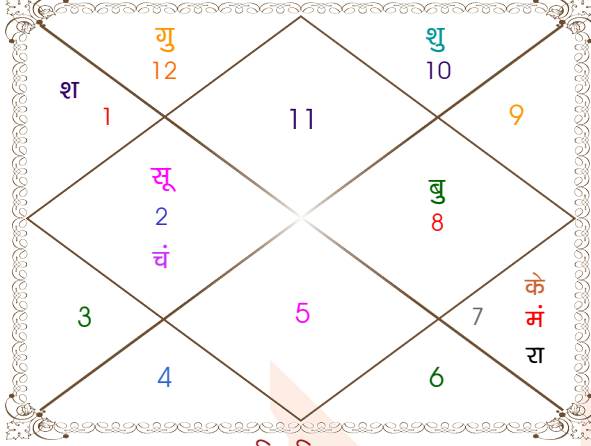


FUTUREPOINT
Astro Solutions



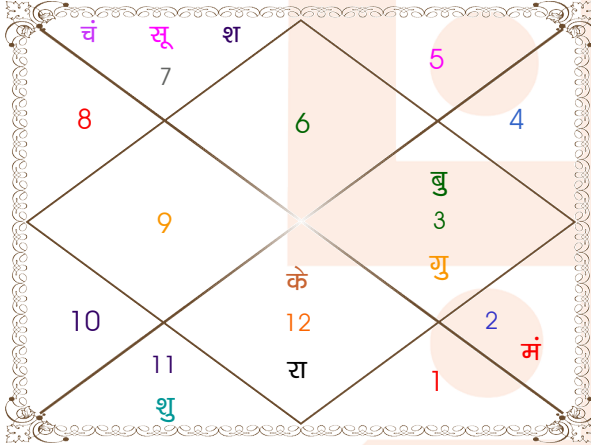
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



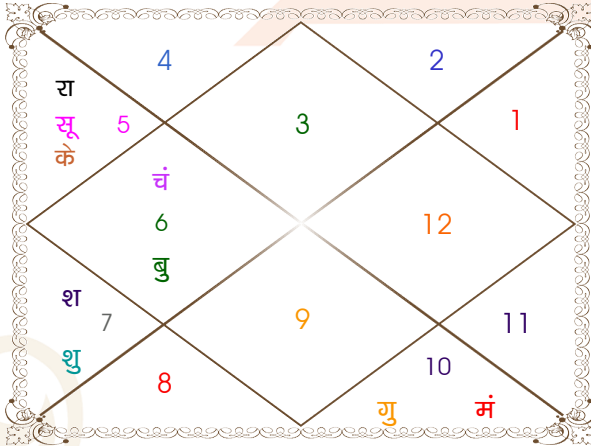
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



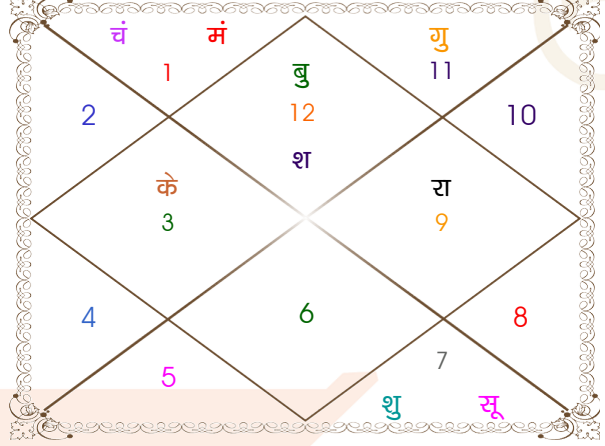
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



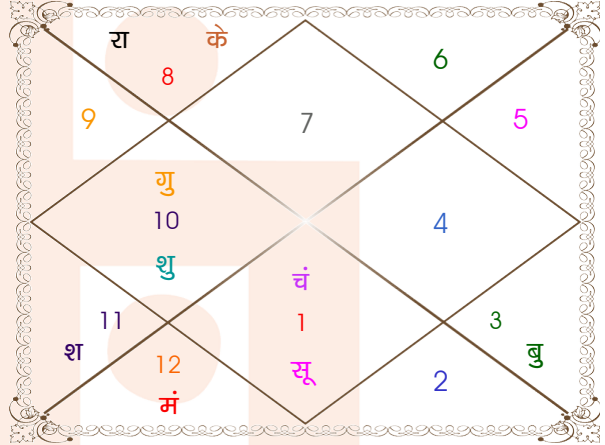
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



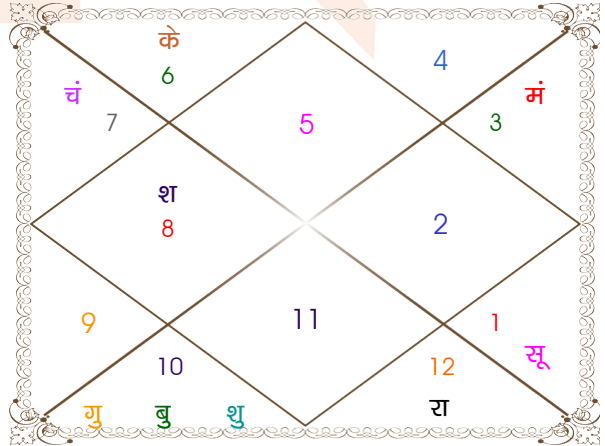
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	तुला	मेष	वृश्चि	तुला	धनु	धनु	सिंह	मक	कर्क
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	मिथु	धनु	वृश्चि	कुंभ	सिंह	धनु	मेष	वृष	वृश्चि
चतुर्थांश	मेष	कर्क	मक	वृश्चि	मेष	कन्या	धनु	वृष	कर्क	मक
सप्तमांश	कन्या	मेष	तुला	वृष	कुंभ	वृष	मक	कुंभ	वृश्चि	वृष
नवमांश	मीन	मिथु	धनु	सिंह	मीन	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	मिथु	धनु
दशमांश	धनु	कर्क	मक	सिंह	मेष	सिंह	कुंभ	मेष	मीन	कन्या
द्वादशांश	मेष	सिंह	कुंभ	धनु	वृष	कन्या	कुंभ	मिथु	सिंह	कुंभ
षोडशांश	कन्या	मिथु	मिथु	तुला	कुंभ	मक	मीन	कन्या	कुंभ	कुंभ
विंशांश	तुला	तुला	तुला	कुंभ	वृष	धनु	धनु	वृष	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	कुंभ	वृष	वृष	तुला	वृश्चि	मीन	मक	मेष	तुला	तुला
सप्तविंशांश	मीन	तुला	मेष	मेष	मीन	कुंभ	तुला	मीन	धनु	मिथु
त्रिंशांश	कन्या	तुला	तुला	वृष	मिथु	मिथु	कुंभ	तुला	मीन	मीन
खवेदांश	तुला	मेष	मेष	मीन	मिथु	मक	मक	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	मिथु	सिंह	कन्या	मक	कन्या	मक	तुला	तुला	सिंह	सिंह
षष्ठ्यंश	सिंह	मेष	तुला	मिथु	मक	मक	मक	वृश्चि	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.65	8.30	18.05	15.45	16.60	10.50	10.30	13.10	9.10
सप्तवर्ग	10.88	8.30	17.48	15.30	14.88	10.60	11.55	12.58	9.18
दशवर्ग	12.68	8.20	15.18	15.30	11.95	9.70	11.58	12.98	11.18
षोडशवर्ग	11.60	8.03	15.80	15.68	12.80	10.58	11.18	12.85	10.65



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	6	58	32	48	3	23	42
सप्तवर्गज बल	83	53	143	122	114	60	84
ओजयुग्मक बल	30	0	15	15	15	0	15
केन्द्र बल	60	60	30	60	15	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	15	15	0	0	0
कुल स्थान बल	178	186	234	260	148	98	171
कुल दिग्बल	59	59	57	33	55	14	45
नतोन्नत बल	59	1	1	60	59	59	1
पक्ष बल	0	120	0	0	60	60	0
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	13	7	5	51	2	0	25
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	133	187	20	111	226	119	55
कुल चेष्टाबल	0	0	4	9	21	27	23
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	0	-31	-3	9	-11	-3	27
कुल षट्बल	430	452	330	448	474	298	330
रूप षट्बल	7.2	7.5	5.5	7.5	7.9	5.0	5.5
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.3	1.1	1.1	1.2	0.9	1.1
संबंधित पद	1	2	4	6	3	7	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	8.62	59.04	10.97	21.20	8.49	25.12	31.33
कष्ट फल	50.54	0.24	39.72	24.31	46.80	34.75	25.73

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	330	330	474	330	298	448	452	430	448	298	330	474
भावदिग्बल	30	50	50	0	10	10	30	40	20	30	20	50
भावदृष्टि बल	25	18	33	87	57	53	78	49	51	10	-9	9
कुल भाव बल	385	397	557	417	365	512	560	519	520	338	341	533
रूप भाव बल	6.4	6.6	9.3	7.0	6.1	8.5	9.3	8.7	8.7	5.6	5.7	8.9
संबंधित पद	9	8	2	7	10	6	1	5	4	12	11	3

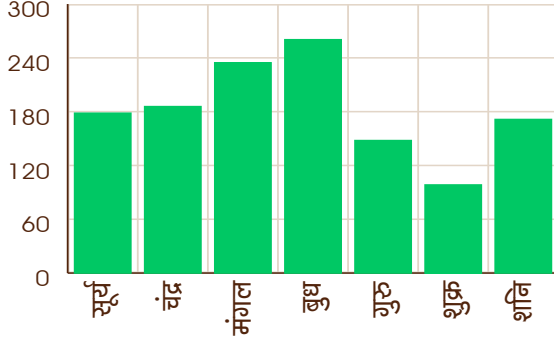


FUTUREPOINT
Astro Solutions

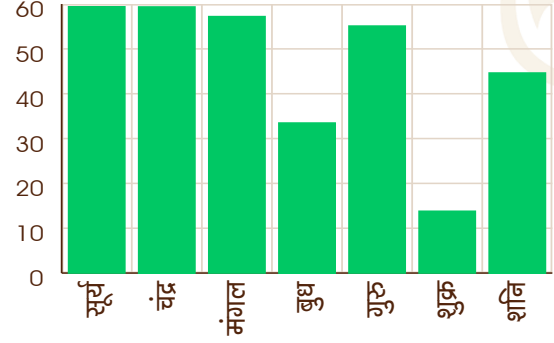


षट्बल ग्राफ

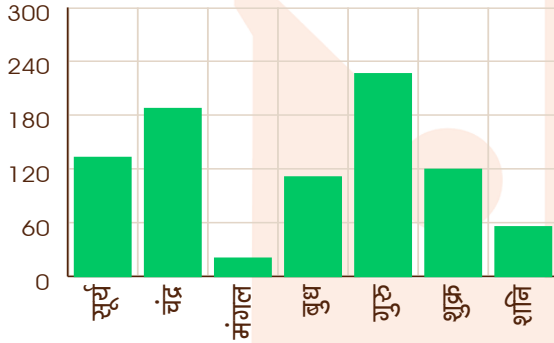
स्थान बल



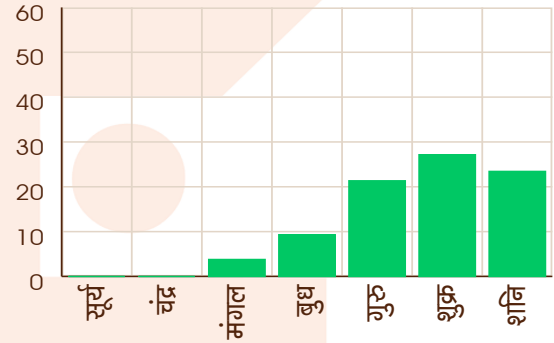
दिग्बल



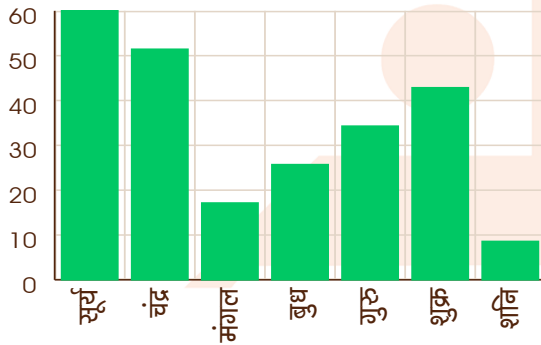
कालबल



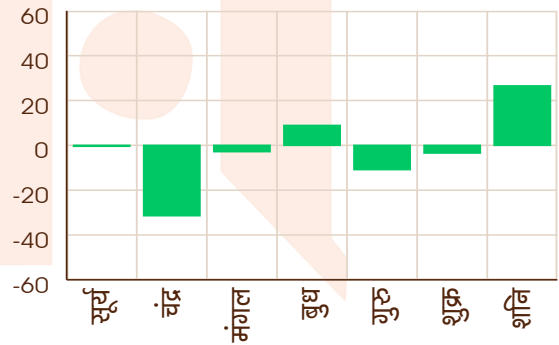
चेष्टाबल



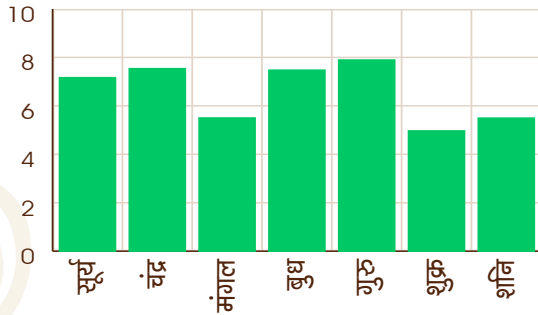
नैसर्गिक बल



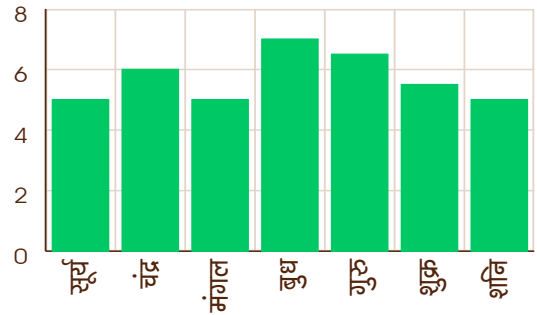
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल

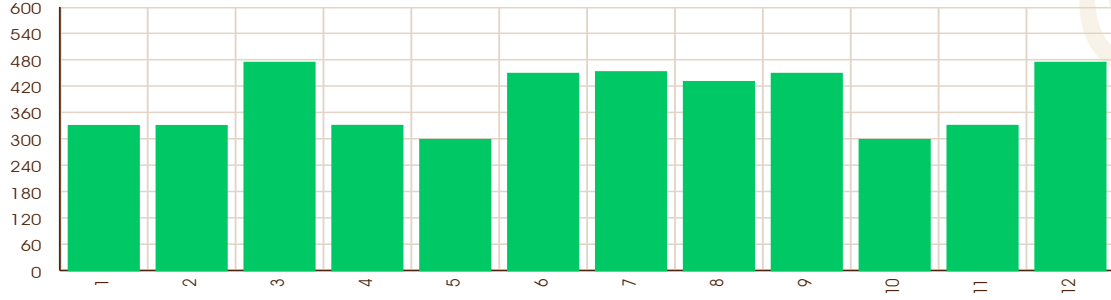


FUTUREPOINT
Astro Solutions

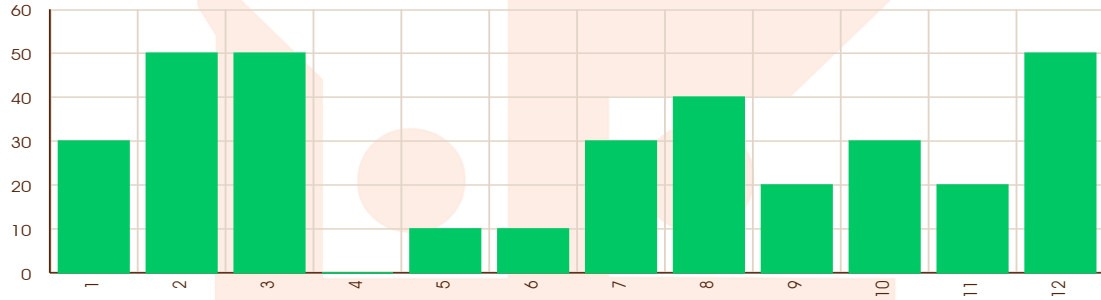


भाव बल ग्राफ

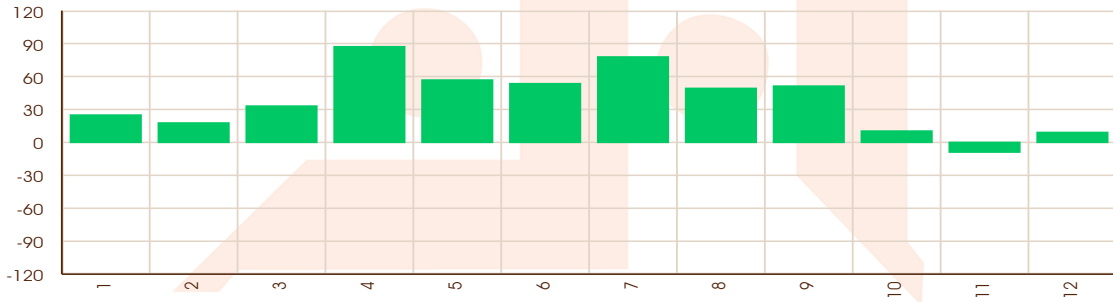
भावाधिपति बल



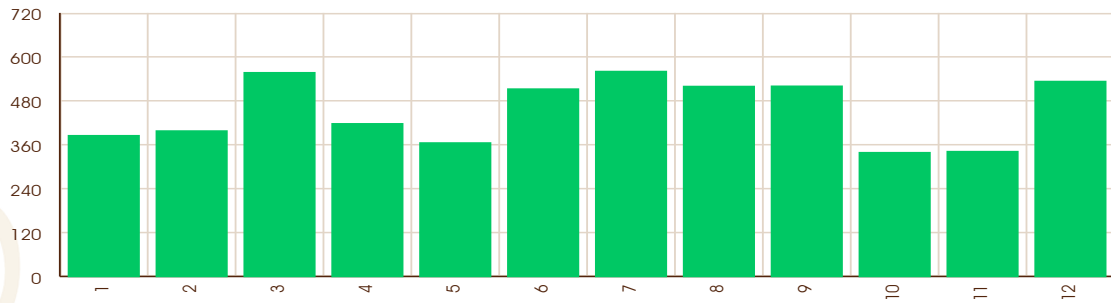
भावदिग्बल



भावदृष्टि बल



भाव बल

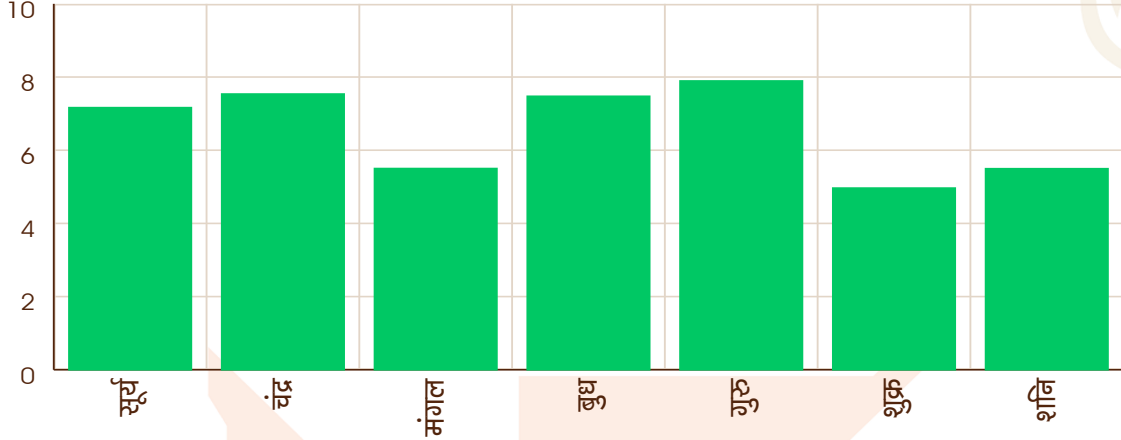


FUTUREPOINT
Astro Solutions

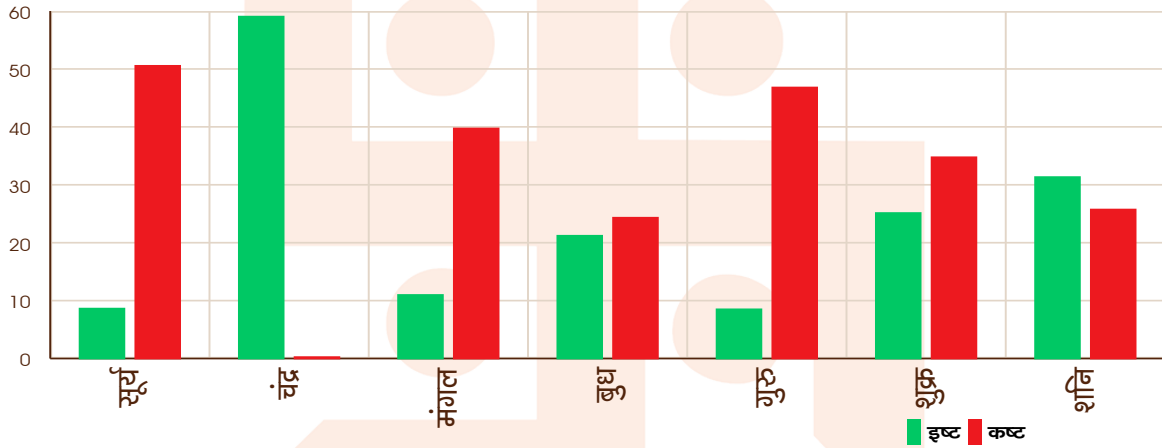


षट्बल तथा भावबल ग्राफ

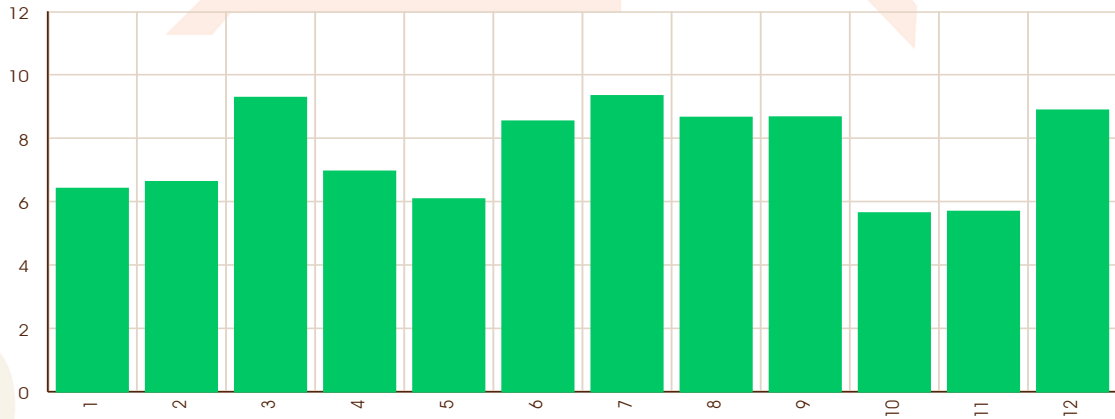
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

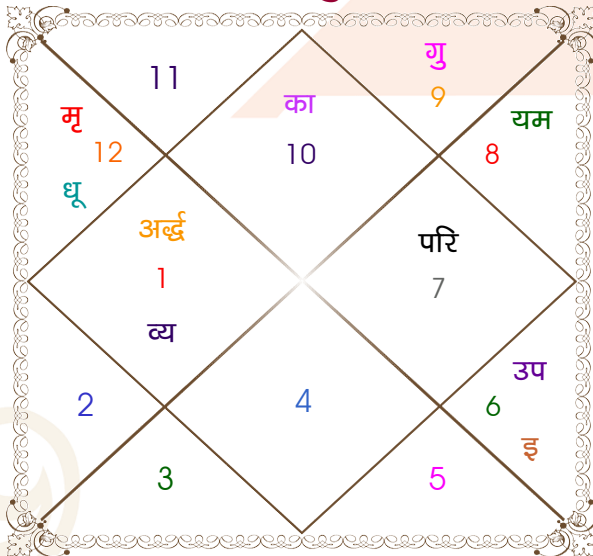


उपग्रह एवं आरुढ़

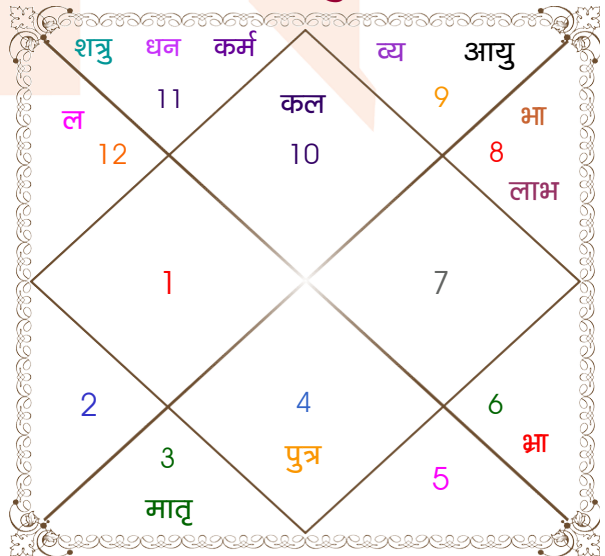
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	09:34:58	--	--	उत्तराषाढ़ा	4	21
गुलिक	गु	धनु	20:25:57	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20
काल	का	मक	11:42:50	--	मूल	श्रवण	1	22
मृत्यु	मृ	मीन	05:21:00	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
यमघंटक	यम	वृश्चि	13:28:42	--	--	अनुराधा	4	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	03:38:54	--	--	अश्विनी	2	1
धूम	धू	मीन	10:35:56	--	--	उ०भाद्रपद	3	26
व्यतिपात	व्य	मेष	19:24:04	--	--	भरणी	2	2
परिवेश	परि	तुला	19:24:04	--	--	स्वाति	4	15
इन्द्रचाप	इ	कन्या	10:35:56	--	--	हस्त	1	13
उपकेतु	उप	कन्या	27:15:56	--	--	चित्रा	2	14

प्राणपद	:	मीन	13:46:54	कारकौश लग्न	:	धनु	06:14:10
भाव लग्न	:	मीन	28:24:31	होरा लग्न	:	मिथु	17:14:04
घटी लग्न	:	धनु	01:23:40	वर्णद लग्न	:	मेष	03:10:58

उपग्रह कुंडली



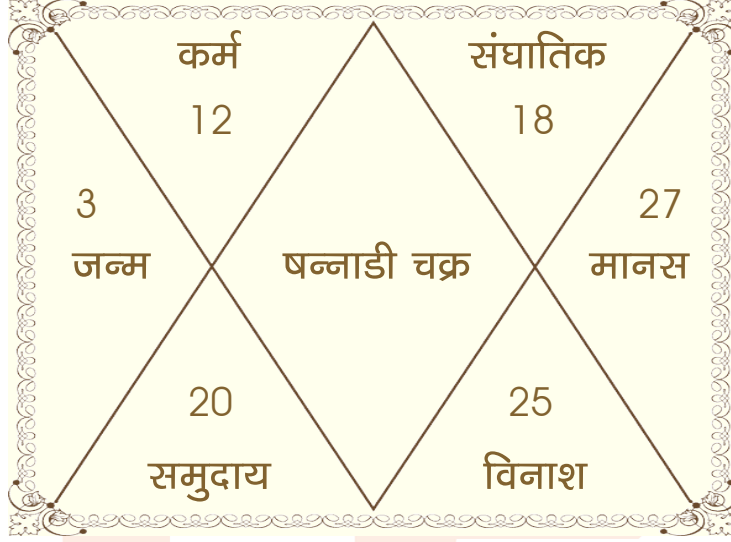
आरुढ़ कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षण्णाडी चक्र



त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	3	5	3	2	4	3	4	5	7	3	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
कुल	5	2	5	3	4	4	6	1	6	5	3	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	3	1	5	4	1	4	4	2	4	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	4	5	3	3	7	4	3	4	5	5	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	5	6	5	2	3	5	5	5	4	7	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	3	5	5	6	4	3	4	6	5	4	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	3	6	4	1	4	1	3	4	4	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	7	2	6	3	3	4	3	6	4	4	4	3	49



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	4	4	2	3	3	6	4	1	4	1	3	39
गुरु	3	5	5	5	5	4	7	4	5	6	5	2	56
मंगल	1	4	4	2	4	3	3	5	3	1	5	4	39
सूर्य	4	5	7	3	5	4	3	5	3	2	4	3	48
शुक्र	6	4	3	4	6	5	4	3	4	3	5	5	52
बुध	3	4	5	5	6	5	4	5	3	3	7	4	54
चंद्र	5	2	5	3	4	4	6	1	6	5	3	5	49
बिन्दु	26	28	33	24	33	28	33	27	25	24	30	26	337
रेखा	30	28	23	32	23	28	23	29	31	32	26	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	3	0	2	0	5	2	0	1	0	1	18
गुरु	0	1	0	3	2	0	2	2	2	2	0	0	14
मंगल	0	3	1	0	3	2	0	3	2	0	2	2	18
सूर्य	1	3	4	0	2	2	0	2	0	0	1	0	15
शुक्र	2	1	0	1	2	2	1	0	0	0	2	2	13
बुध	0	1	1	1	3	2	0	1	0	0	3	0	12
चंद्र	1	0	2	2	0	2	3	0	2	3	0	4	19
रेखा	7	10	11	7	14	10	11	10	6	6	8	9	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	0	3	0	2	0	5	2	0	1	0	1	17
गुरु	0	0	0	3	2	0	2	2	2	2	0	0	13
मंगल	0	3	1	0	3	1	0	3	2	0	2	0	15
सूर्य	1	3	2	0	2	2	0	2	0	0	1	0	13
शुक्र	2	0	0	1	2	2	1	0	0	0	2	2	12
बुध	0	1	1	1	3	1	0	1	0	0	3	0	11
चंद्र	1	0	0	2	0	0	3	0	2	3	0	2	13
रेखा	7	7	7	7	14	6	11	10	6	6	8	5	94

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	110	93	137	98	90	101	133
ग्रह पिंड	31	69	73	23	80	30	91
शोध्य पिंड	141	162	210	121	170	131	224



FUTUREPOINT
Astro Solutions

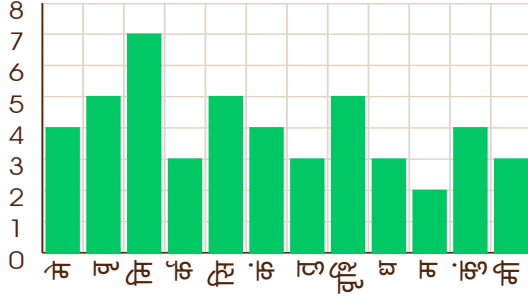


अष्टकवर्ग सारिणी

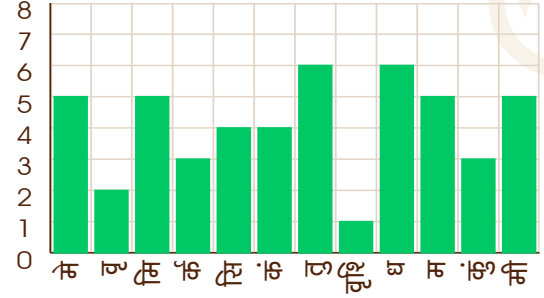
सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टक ग्राफ

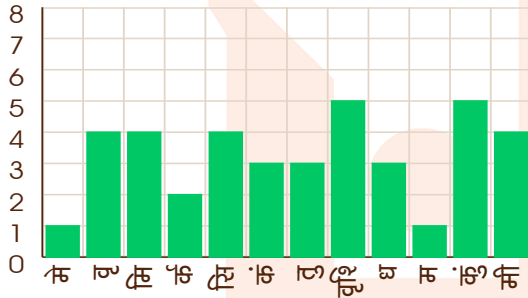
सूर्य



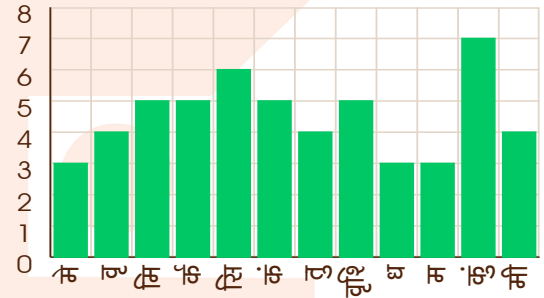
चन्द्र



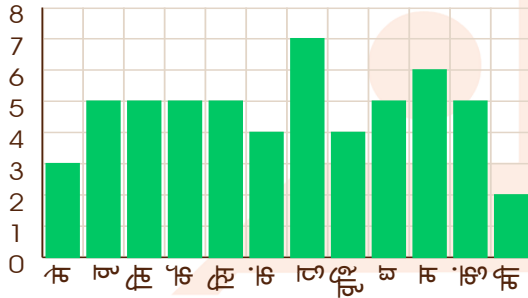
मंगल



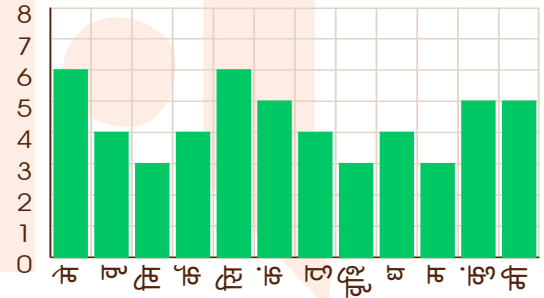
बुध



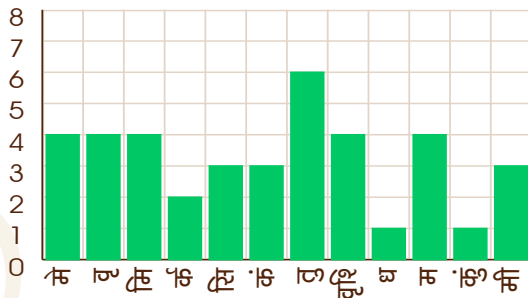
गुरु



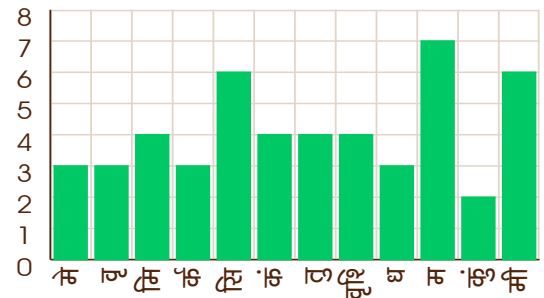
शुक्र



शनि

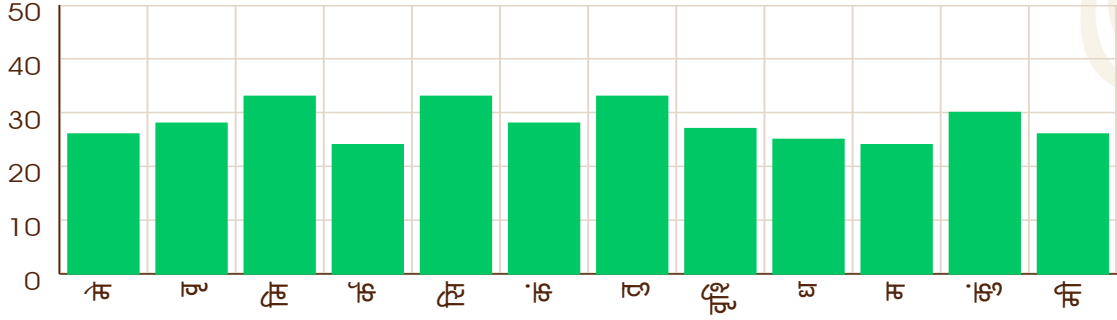


लग्न

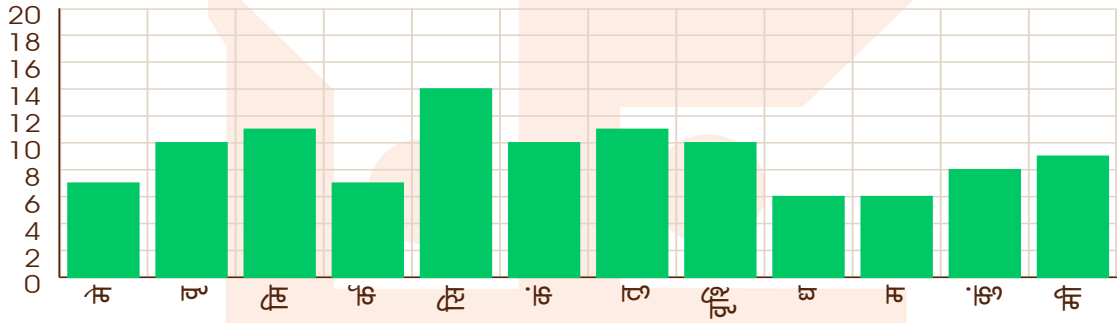


अष्टकवर्ग ग्राफ

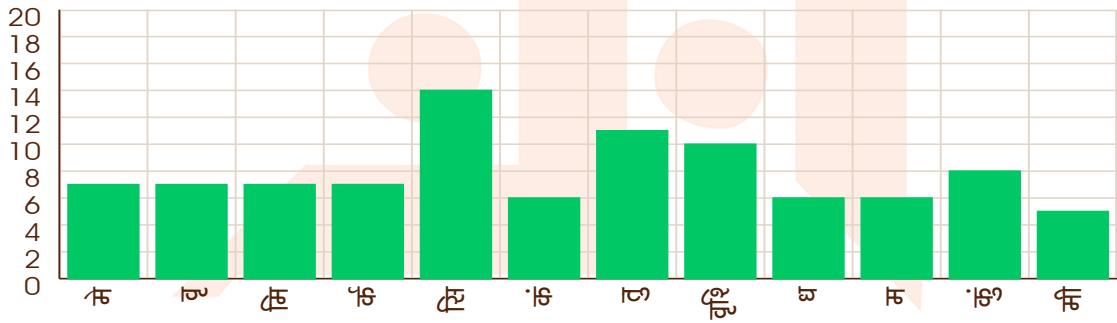
सर्वाष्टकवर्ग



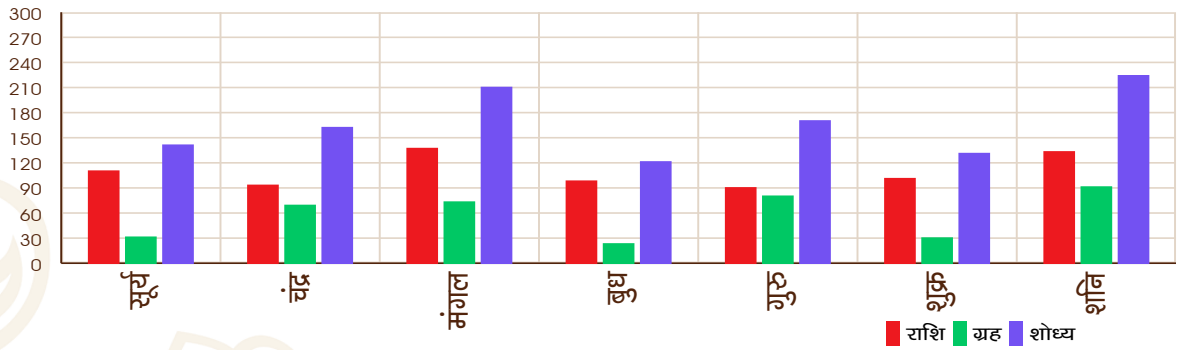
त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 8 मास 7 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
13/11/2008	23/07/2014	22/07/2024	23/07/2031	22/07/2049
23/07/2014	22/07/2024	23/07/2031	22/07/2049	22/07/2065
13/11/2008	चंद्र 23/05/2015	मंगल 18/12/2024	राहु 04/04/2034	गुरु 10/09/2051
चंद्र 10/05/2009	मंगल 22/12/2015	राहु 06/01/2026	गुरु 28/08/2036	शनि 23/03/2054
मंगल 15/09/2009	राहु 22/06/2017	गुरु 13/12/2026	शनि 05/07/2039	बुध 28/06/2056
राहु 10/08/2010	गुरु 22/10/2018	शनि 21/01/2028	बुध 21/01/2042	केतु 04/06/2057
गुरु 29/05/2011	शनि 22/05/2020	बुध 18/01/2029	केतु 08/02/2043	शुक्र 03/02/2060
शनि 10/05/2012	बुध 22/10/2021	केतु 16/06/2029	शुक्र 08/02/2046	सूर्य 21/11/2060
बुध 17/03/2013	केतु 23/05/2022	शुक्र 16/08/2030	सूर्य 03/01/2047	चंद्र 23/03/2062
केतु 22/07/2013	शुक्र 21/01/2024	सूर्य 22/12/2030	चंद्र 04/07/2048	मंगल 27/02/2063
शुक्र 23/07/2014	सूर्य 22/07/2024	चंद्र 23/07/2031	मंगल 22/07/2049	राहु 22/07/2065
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
22/07/2065	22/07/2084	23/07/2101	23/07/2108	23/07/2128
22/07/2084	23/07/2101	23/07/2108	23/07/2128	00/00/0000
शनि 25/07/2068	बुध 19/12/2086	केतु 20/12/2101	शुक्र 23/11/2111	सूर्य 10/11/2128
बुध 04/04/2071	केतु 16/12/2087	शुक्र 19/02/2103	सूर्य 22/11/2112	चंद्र 14/11/2128
केतु 13/05/2072	शुक्र 16/10/2090	सूर्य 26/06/2103	चंद्र 24/07/2114	00/00/0000
शुक्र 14/07/2075	सूर्य 22/08/2091	चंद्र 26/01/2104	मंगल 23/09/2115	00/00/0000
सूर्य 25/06/2076	चंद्र 21/01/2093	मंगल 23/06/2104	राहु 22/09/2118	00/00/0000
चंद्र 24/01/2078	मंगल 18/01/2094	राहु 11/07/2105	गुरु 23/05/2121	00/00/0000
मंगल 05/03/2079	राहु 06/08/2096	गुरु 17/06/2106	शनि 23/07/2124	00/00/0000
राहु 09/01/2082	गुरु 12/11/2098	शनि 27/07/2107	बुध 24/05/2127	00/00/0000
गुरु 22/07/2084	शनि 23/07/2101	बुध 23/07/2108	केतु 23/07/2128	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 8 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र 13/11/2008 10/05/2009	सूर्य - मंगल 10/05/2009 15/09/2009	सूर्य - राहु 15/09/2009 10/08/2010	सूर्य - गुरु 10/08/2010 29/05/2011	सूर्य - शनि 29/05/2011 10/05/2012
चंद्र 24/11/2008 मंगल 05/12/2008 राहु 01/01/2009 गुरु 25/01/2009 शनि 23/02/2009 बुध 21/03/2009 केतु 01/04/2009 शुक्र 01/05/2009 सूर्य 10/05/2009	मंगल 18/05/2009 राहु 06/06/2009 गुरु 23/06/2009 शनि 13/07/2009 बुध 31/07/2009 केतु 08/08/2009 शुक्र 29/08/2009 सूर्य 04/09/2009 चंद्र 15/09/2009	राहु 03/11/2009 गुरु 17/12/2009 शनि 07/02/2010 बुध 26/03/2010 केतु 14/04/2010 शुक्र 08/06/2010 सूर्य 24/06/2010 चंद्र 22/07/2010 मंगल 10/08/2010	गुरु 18/09/2010 शनि 03/11/2010 बुध 14/12/2010 केतु 01/01/2011 शुक्र 18/02/2011 सूर्य 05/03/2011 चंद्र 29/03/2011 मंगल 15/04/2011 राहु 29/05/2011	शनि 23/07/2011 बुध 10/09/2011 केतु 30/09/2011 शुक्र 27/11/2011 सूर्य 15/12/2011 चंद्र 13/01/2012 मंगल 02/02/2012 राहु 25/03/2012 गुरु 10/05/2012
सूर्य - बुध 10/05/2012 17/03/2013	सूर्य - केतु 17/03/2013 22/07/2013	सूर्य - शुक्र 22/07/2013 23/07/2014	चंद्र - चंद्र 23/07/2014 23/05/2015	चंद्र - मंगल 23/05/2015 22/12/2015
बुध 23/06/2012 केतु 11/07/2012 शुक्र 01/09/2012 सूर्य 16/09/2012 चंद्र 12/10/2012 मंगल 30/10/2012 राहु 16/12/2012 गुरु 26/01/2013 शनि 17/03/2013	केतु 24/03/2013 शुक्र 14/04/2013 सूर्य 21/04/2013 चंद्र 01/05/2013 मंगल 09/05/2013 राहु 28/05/2013 गुरु 14/06/2013 शनि 04/07/2013 बुध 22/07/2013	शुक्र 21/09/2013 सूर्य 09/10/2013 चंद्र 09/11/2013 मंगल 30/11/2013 राहु 24/01/2014 गुरु 14/03/2014 शनि 11/05/2014 बुध 01/07/2014 केतु 23/07/2014	चंद्र 17/08/2014 मंगल 04/09/2014 राहु 19/10/2014 गुरु 29/11/2014 शनि 16/01/2015 बुध 28/02/2015 केतु 18/03/2015 शुक्र 08/05/2015 सूर्य 23/05/2015	मंगल 04/06/2015 राहु 06/07/2015 गुरु 04/08/2015 शनि 07/09/2015 बुध 07/10/2015 केतु 19/10/2015 शुक्र 24/11/2015 सूर्य 04/12/2015 चंद्र 22/12/2015
चंद्र - राहु 22/12/2015 22/06/2017	चंद्र - गुरु 22/06/2017 22/10/2018	चंद्र - शनि 22/10/2018 22/05/2020	चंद्र - बुध 22/05/2020 22/10/2021	चंद्र - केतु 22/10/2021 23/05/2022
राहु 13/03/2016 गुरु 25/05/2016 शनि 20/08/2016 बुध 06/11/2016 केतु 08/12/2016 शुक्र 09/03/2017 सूर्य 05/04/2017 चंद्र 21/05/2017 मंगल 22/06/2017	गुरु 26/08/2017 शनि 11/11/2017 बुध 19/01/2018 केतु 16/02/2018 शुक्र 09/05/2018 सूर्य 02/06/2018 चंद्र 12/07/2018 मंगल 10/08/2018 राहु 22/10/2018	शनि 21/01/2019 बुध 13/04/2019 केतु 17/05/2019 शुक्र 22/08/2019 सूर्य 19/09/2019 चंद्र 07/11/2019 मंगल 10/12/2019 राहु 06/03/2020 गुरु 22/05/2020	बुध 04/08/2020 केतु 03/09/2020 शुक्र 28/11/2020 सूर्य 24/12/2020 चंद्र 05/02/2021 मंगल 07/03/2021 राहु 24/05/2021 गुरु 01/08/2021 शनि 22/10/2021	केतु 03/11/2021 शुक्र 09/12/2021 सूर्य 19/12/2021 चंद्र 06/01/2022 मंगल 18/01/2022 राहु 19/02/2022 गुरु 20/03/2022 शनि 23/04/2022 बुध 23/05/2022

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र 23/05/2022 21/01/2024	चंद्र - सूर्य 21/01/2024 22/07/2024	मंगल - मंगल 22/07/2024 18/12/2024	मंगल - राहु 18/12/2024 06/01/2026	मंगल - गुरु 06/01/2026 13/12/2026
शुक्र 01/09/2022 सूर्य 02/10/2022 चंद्र 21/11/2022 मंगल 27/12/2022 राहु 28/03/2023 गुरु 17/06/2023 शनि 22/09/2023 बुध 17/12/2023 केतु 21/01/2024	सूर्य 31/01/2024 चंद्र 15/02/2024 मंगल 25/02/2024 राहु 24/03/2024 गुरु 17/04/2024 शनि 16/05/2024 बुध 11/06/2024 केतु 22/06/2024 शुक्र 22/07/2024	मंगल 31/07/2024 राहु 22/08/2024 गुरु 11/09/2024 शनि 05/10/2024 बुध 26/10/2024 केतु 04/11/2024 शुक्र 28/11/2024 सूर्य 06/12/2024 चंद्र 18/12/2024	राहु 14/02/2025 गुरु 06/04/2025 शनि 06/06/2025 बुध 30/07/2025 केतु 21/08/2025 शुक्र 24/10/2025 सूर्य 12/11/2025 चंद्र 14/12/2025 मंगल 06/01/2026	गुरु 20/02/2026 शनि 15/04/2026 बुध 02/06/2026 केतु 22/06/2026 शुक्र 18/08/2026 सूर्य 04/09/2026 चंद्र 03/10/2026 मंगल 23/10/2026 राहु 13/12/2026
मंगल - शनि 13/12/2026 21/01/2028	मंगल - बुध 21/01/2028 18/01/2029	मंगल - केतु 18/01/2029 16/06/2029	मंगल - शुक्र 16/06/2029 16/08/2030	मंगल - सूर्य 16/08/2030 22/12/2030
शनि 15/02/2027 बुध 13/04/2027 केतु 07/05/2027 शुक्र 13/07/2027 सूर्य 02/08/2027 चंद्र 05/09/2027 मंगल 29/09/2027 राहु 29/11/2027 गुरु 21/01/2028	बुध 13/03/2028 केतु 03/04/2028 शुक्र 02/06/2028 सूर्य 20/06/2028 चंद्र 21/07/2028 मंगल 11/08/2028 राहु 04/10/2028 गुरु 21/11/2028 शनि 18/01/2029	केतु 26/01/2029 शुक्र 20/02/2029 सूर्य 28/02/2029 चंद्र 12/03/2029 मंगल 21/03/2029 राहु 12/04/2029 गुरु 02/05/2029 शनि 26/05/2029 बुध 16/06/2029	शुक्र 26/08/2029 सूर्य 16/09/2029 चंद्र 22/10/2029 मंगल 16/11/2029 राहु 18/01/2030 गुरु 16/03/2030 शनि 23/05/2030 बुध 22/07/2030 केतु 16/08/2030	सूर्य 22/08/2030 चंद्र 02/09/2030 मंगल 09/09/2030 राहु 29/09/2030 गुरु 16/10/2030 शनि 05/11/2030 बुध 23/11/2030 केतु 30/11/2030 शुक्र 22/12/2030
मंगल - चंद्र 22/12/2030 23/07/2031	राहु - राहु 23/07/2031 04/04/2034	राहु - गुरु 04/04/2034 28/08/2036	राहु - शनि 28/08/2036 05/07/2039	राहु - बुध 05/07/2039 21/01/2042
चंद्र 09/01/2031 मंगल 21/01/2031 राहु 22/02/2031 गुरु 22/03/2031 शनि 25/04/2031 बुध 25/05/2031 केतु 07/06/2031 शुक्र 12/07/2031 सूर्य 23/07/2031	राहु 18/12/2031 गुरु 27/04/2032 शनि 30/09/2032 बुध 17/02/2033 केतु 16/04/2033 शुक्र 27/09/2033 सूर्य 15/11/2033 चंद्र 06/02/2034 मंगल 04/04/2034	गुरु 30/07/2034 शनि 16/12/2034 बुध 19/04/2035 केतु 09/06/2035 शुक्र 02/11/2035 सूर्य 16/12/2035 चंद्र 27/02/2036 मंगल 18/04/2036 राहु 28/08/2036	शनि 08/02/2037 बुध 06/07/2037 केतु 05/09/2037 शुक्र 25/02/2038 सूर्य 18/04/2038 चंद्र 14/07/2038 मंगल 13/09/2038 राहु 16/02/2039 गुरु 05/07/2039	बुध 14/11/2039 केतु 07/01/2040 शुक्र 10/06/2040 सूर्य 27/07/2040 चंद्र 12/10/2040 मंगल 06/12/2040 राहु 24/04/2041 गुरु 27/08/2041 शनि 21/01/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु 21/01/2042 08/02/2043	राहु - शुक्र 08/02/2043 08/02/2046	राहु - सूर्य 08/02/2046 03/01/2047	राहु - चंद्र 03/01/2047 04/07/2048	राहु - मंगल 04/07/2048 22/07/2049
केतु 12/02/2042 शुक्र 17/04/2042 सूर्य 06/05/2042 चंद्र 07/06/2042 मंगल 30/06/2042 राहु 26/08/2042 गुरु 16/10/2042 शनि 16/12/2042 बुध 08/02/2043	शुक्र 10/08/2043 सूर्य 04/10/2043 चंद्र 03/01/2044 मंगल 07/03/2044 राहु 19/08/2044 गुरु 12/01/2045 शनि 04/07/2045 बुध 06/12/2045 केतु 08/02/2046	सूर्य 25/02/2046 चंद्र 24/03/2046 मंगल 12/04/2046 राहु 01/06/2046 गुरु 14/07/2046 शनि 04/09/2046 बुध 21/10/2046 केतु 09/11/2046 शुक्र 03/01/2047	चंद्र 18/02/2047 मंगल 22/03/2047 राहु 12/06/2047 गुरु 24/08/2047 शनि 19/11/2047 बुध 04/02/2048 केतु 07/03/2048 शुक्र 06/06/2048 सूर्य 04/07/2048	मंगल 26/07/2048 राहु 22/09/2048 गुरु 12/11/2048 शनि 12/01/2049 बुध 07/03/2049 केतु 29/03/2049 शुक्र 01/06/2049 सूर्य 20/06/2049 चंद्र 22/07/2049
गुरु - गुरु 22/07/2049 10/09/2051	गुरु - शनि 10/09/2051 23/03/2054	गुरु - बुध 23/03/2054 28/06/2056	गुरु - केतु 28/06/2056 04/06/2057	गुरु - शुक्र 04/06/2057 03/02/2060
गुरु 03/11/2049 शनि 07/03/2050 बुध 25/06/2050 केतु 09/08/2050 शुक्र 17/12/2050 सूर्य 25/01/2051 चंद्र 31/03/2051 मंगल 16/05/2051 राहु 10/09/2051	शनि 03/02/2052 बुध 13/06/2052 केतु 06/08/2052 शुक्र 07/01/2053 सूर्य 23/02/2053 चंद्र 11/05/2053 मंगल 04/07/2053 राहु 19/11/2053 गुरु 23/03/2054	बुध 18/07/2054 केतु 04/09/2054 शुक्र 20/01/2055 सूर्य 03/03/2055 चंद्र 11/05/2055 मंगल 28/06/2055 राहु 30/10/2055 गुरु 18/02/2056 शनि 28/06/2056	केतु 18/07/2056 शुक्र 12/09/2056 सूर्य 30/09/2056 चंद्र 28/10/2056 मंगल 17/11/2056 राहु 07/01/2057 गुरु 21/02/2057 शनि 16/04/2057 बुध 04/06/2057	शुक्र 13/11/2057 सूर्य 01/01/2058 चंद्र 23/03/2058 मंगल 19/05/2058 राहु 12/10/2058 गुरु 19/02/2059 शनि 23/07/2059 बुध 08/12/2059 केतु 03/02/2060
गुरु - सूर्य 03/02/2060 21/11/2060	गुरु - चंद्र 21/11/2060 23/03/2062	गुरु - मंगल 23/03/2062 27/02/2063	गुरु - राहु 27/02/2063 22/07/2065	शनि - शनि 22/07/2065 25/07/2068
सूर्य 17/02/2060 चंद्र 13/03/2060 मंगल 30/03/2060 राहु 12/05/2060 गुरु 20/06/2060 शनि 06/08/2060 बुध 16/09/2060 केतु 03/10/2060 शुक्र 21/11/2060	चंद्र 31/12/2060 मंगल 29/01/2061 राहु 12/04/2061 गुरु 16/06/2061 शनि 01/09/2061 बुध 09/11/2061 केतु 07/12/2061 शुक्र 27/02/2062 सूर्य 23/03/2062	मंगल 12/04/2062 राहु 02/06/2062 गुरु 17/07/2062 शनि 09/09/2062 बुध 28/10/2062 केतु 16/11/2062 शुक्र 12/01/2063 सूर्य 29/01/2063 चंद्र 27/02/2063	राहु 08/07/2063 गुरु 02/11/2063 शनि 20/03/2064 बुध 22/07/2064 केतु 11/09/2064 शुक्र 04/02/2065 सूर्य 20/03/2065 चंद्र 01/06/2065 मंगल 22/07/2065	शनि 12/01/2066 बुध 17/06/2066 केतु 20/08/2066 शुक्र 19/02/2067 सूर्य 15/04/2067 चंद्र 16/07/2067 मंगल 18/09/2067 राहु 01/03/2068 गुरु 25/07/2068

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 25/07/2068 04/04/2071	शनि - केतु 04/04/2071 13/05/2072	शनि - शुक्र 13/05/2072 14/07/2075	शनि - सूर्य 14/07/2075 25/06/2076	शनि - चंद्र 25/06/2076 24/01/2078
बुध 11/12/2068 केतु 07/02/2069 शुक्र 21/07/2069 सूर्य 08/09/2069 चंद्र 29/11/2069 मंगल 25/01/2070 राहु 22/06/2070 गुरु 31/10/2070 शनि 04/04/2071	केतु 28/04/2071 शुक्र 04/07/2071 सूर्य 25/07/2071 चंद्र 27/08/2071 मंगल 20/09/2071 राहु 20/11/2071 गुरु 13/01/2072 शनि 17/03/2072 बुध 13/05/2072	शुक्र 22/11/2072 सूर्य 19/01/2073 चंद्र 25/04/2073 मंगल 02/07/2073 राहु 22/12/2073 गुरु 25/05/2074 शनि 24/11/2074 बुध 07/05/2075 केतु 14/07/2075	सूर्य 31/07/2075 चंद्र 29/08/2075 मंगल 18/09/2075 राहु 09/11/2075 गुरु 26/12/2075 शनि 18/02/2076 बुध 08/04/2076 केतु 28/04/2076 शुक्र 25/06/2076	चंद्र 12/08/2076 मंगल 15/09/2076 राहु 10/12/2076 गुरु 26/02/2077 शनि 28/05/2077 बुध 18/08/2077 केतु 21/09/2077 शुक्र 26/12/2077 सूर्य 24/01/2078
शनि - मंगल 24/01/2078 05/03/2079	शनि - राहु 05/03/2079 09/01/2082	शनि - गुरु 09/01/2082 22/07/2084	बुध - बुध 22/07/2084 19/12/2086	बुध - केतु 19/12/2086 16/12/2087
मंगल 17/02/2078 राहु 18/04/2078 गुरु 11/06/2078 शनि 14/08/2078 बुध 11/10/2078 केतु 03/11/2078 शुक्र 10/01/2079 सूर्य 30/01/2079 चंद्र 05/03/2079	राहु 08/08/2079 गुरु 25/12/2079 शनि 07/06/2080 बुध 01/11/2080 केतु 01/01/2081 शुक्र 23/06/2081 सूर्य 14/08/2081 चंद्र 09/11/2081 मंगल 09/01/2082	गुरु 12/05/2082 शनि 06/10/2082 बुध 14/02/2083 केतु 09/04/2083 शुक्र 10/09/2083 सूर्य 26/10/2083 चंद्र 11/01/2084 मंगल 05/03/2084 राहु 22/07/2084	बुध 24/11/2084 केतु 14/01/2085 शुक्र 10/06/2085 सूर्य 24/07/2085 चंद्र 05/10/2085 मंगल 25/11/2085 राहु 06/04/2086 गुरु 01/08/2086 शनि 19/12/2086	केतु 09/01/2087 शुक्र 10/03/2087 सूर्य 28/03/2087 चंद्र 28/04/2087 मंगल 19/05/2087 राहु 12/07/2087 गुरु 29/08/2087 शनि 26/10/2087 बुध 16/12/2087
बुध - शुक्र 16/12/2087 16/10/2090	बुध - सूर्य 16/10/2090 22/08/2091	बुध - चंद्र 22/08/2091 21/01/2093	बुध - मंगल 21/01/2093 18/01/2094	बुध - राहु 18/01/2094 06/08/2096
शुक्र 05/06/2088 सूर्य 27/07/2088 चंद्र 21/10/2088 मंगल 21/12/2088 राहु 25/05/2089 गुरु 10/10/2089 शनि 23/03/2090 बुध 16/08/2090 केतु 16/10/2090	सूर्य 31/10/2090 चंद्र 26/11/2090 मंगल 14/12/2090 राहु 30/01/2091 गुरु 12/03/2091 शनि 30/04/2091 बुध 13/06/2091 केतु 02/07/2091 शुक्र 22/08/2091	चंद्र 04/10/2091 मंगल 04/11/2091 राहु 20/01/2092 गुरु 29/03/2092 शनि 19/06/2092 बुध 31/08/2092 केतु 01/10/2092 शुक्र 26/12/2092 सूर्य 21/01/2093	मंगल 11/02/2093 राहु 06/04/2093 गुरु 24/05/2093 शनि 21/07/2093 बुध 10/09/2093 केतु 01/10/2093 शुक्र 01/12/2093 सूर्य 19/12/2093 चंद्र 18/01/2094	राहु 07/06/2094 गुरु 09/10/2094 शनि 05/03/2095 बुध 15/07/2095 केतु 08/09/2095 शुक्र 10/02/2096 सूर्य 27/03/2096 चंद्र 13/06/2096 मंगल 06/08/2096

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 06/08/2096 12/11/2098	बुध - शनि 12/11/2098 23/07/2101	केतु - केतु 23/07/2101 20/12/2101	केतु - शुक्र 20/12/2101 19/02/2103	केतु - सूर्य 19/02/2103 26/06/2103
गुरु 25/11/2096 शनि 05/04/2097 बुध 31/07/2097 केतु 17/09/2097 शुक्र 02/02/2098 सूर्य 16/03/2098 चंद्र 24/05/2098 मंगल 11/07/2098 राहु 12/11/2098	शनि 17/04/2099 बुध 03/09/2099 केतु 31/10/2099 शुक्र 12/04/2100 सूर्य 01/06/2100 चंद्र 21/08/2100 मंगल 18/10/2100 राहु 14/03/2101 गुरु 23/07/2101	केतु 01/08/2101 शुक्र 26/08/2101 सूर्य 02/09/2101 चंद्र 15/09/2101 मंगल 24/09/2101 राहु 16/10/2101 गुरु 05/11/2101 शनि 28/11/2101 बुध 20/12/2101	शुक्र 01/03/2102 सूर्य 22/03/2102 चंद्र 26/04/2102 मंगल 21/05/2102 राहु 24/07/2102 गुरु 19/09/2102 शनि 25/11/2102 बुध 25/01/2103 केतु 19/02/2103	सूर्य 25/02/2103 चंद्र 08/03/2103 मंगल 15/03/2103 राहु 03/04/2103 गुरु 20/04/2103 शनि 11/05/2103 बुध 29/05/2103 केतु 05/06/2103 शुक्र 26/06/2103
केतु - चंद्र 26/06/2103 26/01/2104	केतु - मंगल 26/01/2104 23/06/2104	केतु - राहु 23/06/2104 11/07/2105	केतु - गुरु 11/07/2105 17/06/2106	केतु - शनि 17/06/2106 27/07/2107
चंद्र 14/07/2103 मंगल 27/07/2103 राहु 28/08/2103 गुरु 25/09/2103 शनि 29/10/2103 बुध 28/11/2103 केतु 10/12/2103 शुक्र 15/01/2104 सूर्य 26/01/2104	मंगल 03/02/2104 राहु 26/02/2104 गुरु 16/03/2104 शनि 09/04/2104 बुध 30/04/2104 केतु 09/05/2104 शुक्र 03/06/2104 सूर्य 10/06/2104 चंद्र 23/06/2104	राहु 19/08/2104 गुरु 09/10/2104 शनि 09/12/2104 बुध 01/02/2105 केतु 24/02/2105 शुक्र 29/04/2105 सूर्य 18/05/2105 चंद्र 19/06/2105 मंगल 11/07/2105	गुरु 26/08/2105 शनि 19/10/2105 बुध 06/12/2105 केतु 26/12/2105 शुक्र 21/02/2106 सूर्य 10/03/2106 चंद्र 07/04/2106 मंगल 27/04/2106 राहु 17/06/2106	शनि 20/08/2106 बुध 17/10/2106 केतु 09/11/2106 शुक्र 16/01/2107 सूर्य 05/02/2107 चंद्र 11/03/2107 मंगल 03/04/2107 राहु 03/06/2107 गुरु 27/07/2107
केतु - बुध 27/07/2107 23/07/2108	शुक्र - शुक्र 23/07/2108 23/11/2111	शुक्र - सूर्य 23/11/2111 22/11/2112	शुक्र - चंद्र 22/11/2112 24/07/2114	शुक्र - मंगल 24/07/2114 23/09/2115
बुध 16/09/2107 केतु 07/10/2107 शुक्र 07/12/2107 सूर्य 25/12/2107 चंद्र 24/01/2108 मंगल 14/02/2108 राहु 08/04/2108 गुरु 27/05/2108 शनि 23/07/2108	शुक्र 11/02/2109 सूर्य 13/04/2109 चंद्र 23/07/2109 मंगल 02/10/2109 राहु 03/04/2110 गुरु 12/09/2110 शनि 24/03/2111 बुध 13/09/2111 केतु 23/11/2111	सूर्य 11/12/2111 चंद्र 10/01/2112 मंगल 01/02/2112 राहु 26/03/2112 गुरु 14/05/2112 शनि 11/07/2112 बुध 01/09/2112 केतु 22/09/2112 शुक्र 22/11/2112	चंद्र 12/01/2113 मंगल 16/02/2113 राहु 18/05/2113 गुरु 08/08/2113 शनि 12/11/2113 बुध 06/02/2114 केतु 14/03/2114 शुक्र 23/06/2114 सूर्य 24/07/2114	मंगल 17/08/2114 राहु 20/10/2114 गुरु 16/12/2114 शनि 22/02/2115 बुध 23/04/2115 केतु 18/05/2115 शुक्र 28/07/2115 सूर्य 18/08/2115 चंद्र 23/09/2115

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - चंद्र 12/11/2025 22:29 14/12/2025 21:30	मंगल - राहु - मंगल 14/12/2025 21:30 06/01/2026 06:25	मंगल - गुरु - गुरु 06/01/2026 06:25 20/02/2026 17:18	मंगल - गुरु - शनि 20/02/2026 17:18 15/04/2026 16:43
चंद्र 15/11/2025 14:24 मंगल 17/11/2025 11:08 राहु 22/11/2025 06:11 गुरु 26/11/2025 12:28 शनि 01/12/2025 13:54 बुध 06/12/2025 02:34 केतु 07/12/2025 23:19 शुक्र 13/12/2025 07:09 सूर्य 14/12/2025 21:30	मंगल 16/12/2025 04:49 राहु 19/12/2025 13:22 गुरु 22/12/2025 12:57 शनि 26/12/2025 01:58 बुध 29/12/2025 06:01 केतु 30/12/2025 13:21 शुक्र 03/01/2026 06:50 सूर्य 04/01/2026 09:41 चंद्र 06/01/2026 06:25	गुरु 12/01/2026 07:52 शनि 19/01/2026 12:35 बुध 25/01/2026 23:08 केतु 28/01/2026 14:46 शुक्र 05/02/2026 04:35 सूर्य 07/02/2026 11:07 चंद्र 11/02/2026 06:02 मंगल 13/02/2026 21:40 राहु 20/02/2026 17:18	शनि 01/03/2026 06:24 बुध 08/03/2026 21:55 केतु 12/03/2026 01:29 शुक्र 21/03/2026 01:24 सूर्य 23/03/2026 18:10 चंद्र 28/03/2026 06:07 मंगल 31/03/2026 09:41 राहु 08/04/2026 12:00 गुरु 15/04/2026 16:43
मंगल - गुरु - बुध 15/04/2026 16:43 02/06/2026 23:47	मंगल - गुरु - केतु 02/06/2026 23:47 22/06/2026 21:02	मंगल - गुरु - शुक्र 22/06/2026 21:02 18/08/2026 16:38	मंगल - गुरु - सूर्य 18/08/2026 16:38 04/09/2026 17:43
बुध 22/04/2026 12:55 केतु 25/04/2026 08:32 शुक्र 03/05/2026 09:42 सूर्य 05/05/2026 19:40 चंद्र 09/05/2026 20:15 मंगल 12/05/2026 15:52 राहु 19/05/2026 21:43 गुरु 26/05/2026 08:16 शनि 02/06/2026 23:47	केतु 04/06/2026 03:37 शुक्र 07/06/2026 11:10 सूर्य 08/06/2026 11:01 चंद्र 10/06/2026 02:48 मंगल 11/06/2026 06:38 राहु 14/06/2026 06:14 गुरु 16/06/2026 21:52 शनि 20/06/2026 01:26 बुध 22/06/2026 21:02	शुक्र 02/07/2026 08:18 सूर्य 05/07/2026 04:29 चंद्र 09/07/2026 22:07 मंगल 13/07/2026 05:40 राहु 21/07/2026 18:12 गुरु 29/07/2026 08:01 शनि 07/08/2026 07:55 बुध 15/08/2026 09:06 केतु 18/08/2026 16:38	सूर्य 19/08/2026 13:06 चंद्र 20/08/2026 23:11 मंगल 21/08/2026 23:03 राहु 24/08/2026 12:24 गुरु 26/08/2026 18:57 शनि 29/08/2026 11:43 बुध 31/08/2026 21:41 केतु 01/09/2026 21:32 शुक्र 04/09/2026 17:43
मंगल - गुरु - चंद्र 04/09/2026 17:43 03/10/2026 03:31	मंगल - गुरु - मंगल 03/10/2026 03:31 23/10/2026 00:47	मंगल - गुरु - राहु 23/10/2026 00:47 13/12/2026 04:01	मंगल - शनि - शनि 13/12/2026 04:01 15/02/2027 06:20
चंद्र 07/09/2026 02:32 मंगल 08/09/2026 18:18 राहु 13/09/2026 00:35 गुरु 16/09/2026 19:29 शनि 21/09/2026 07:26 बुध 25/09/2026 08:01 केतु 26/09/2026 23:48 शुक्र 01/10/2026 17:26 सूर्य 03/10/2026 03:31	मंगल 04/10/2026 07:22 राहु 07/10/2026 06:57 गुरु 09/10/2026 22:35 शनि 13/10/2026 02:09 बुध 15/10/2026 21:46 केतु 17/10/2026 01:36 शुक्र 20/10/2026 09:09 सूर्य 21/10/2026 09:00 चंद्र 23/10/2026 00:47	राहु 30/10/2026 16:52 गुरु 06/11/2026 12:30 शनि 14/11/2026 14:49 बुध 21/11/2026 20:40 केतु 24/11/2026 20:15 शुक्र 03/12/2026 08:48 सूर्य 05/12/2026 22:10 चंद्र 10/12/2026 04:26 मंगल 13/12/2026 04:01	शनि 23/12/2026 07:35 बुध 01/01/2027 09:31 केतु 05/01/2027 03:15 शुक्र 15/01/2027 19:38 सूर्य 19/01/2027 00:33 चंद्र 24/01/2027 08:44 मंगल 28/01/2027 02:28 राहु 06/02/2027 17:13 गुरु 15/02/2027 06:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शनि - बुध 15/02/2027 06:20 13/04/2027 14:43	मंगल - शनि - केतु 13/04/2027 14:43 07/05/2027 05:28	मंगल - शनि - शुक्र 07/05/2027 05:28 13/07/2027 16:44	मंगल - शनि - सूर्य 13/07/2027 16:44 02/08/2027 22:31
बुध 23/02/2027 09:19 केतु 26/02/2027 17:36 शुक्र 08/03/2027 07:00 सूर्य 11/03/2027 03:49 चंद्र 15/03/2027 22:31 मंगल 19/03/2027 06:49 राहु 27/03/2027 21:16 गुरु 04/04/2027 12:47 शनि 13/04/2027 14:43	केतु 14/04/2027 23:46 शुक्र 18/04/2027 22:14 सूर्य 20/04/2027 02:34 चंद्र 22/04/2027 01:48 मंगल 23/04/2027 10:51 राहु 26/04/2027 23:52 गुरु 30/04/2027 03:26 शनि 03/05/2027 21:10 बुध 07/05/2027 05:28	शुक्र 18/05/2027 11:20 सूर्य 21/05/2027 20:18 चंद्र 27/05/2027 11:15 मंगल 31/05/2027 09:42 राहु 10/06/2027 12:35 गुरु 19/06/2027 12:30 शनि 30/06/2027 04:53 बुध 09/07/2027 18:17 केतु 13/07/2027 16:44	सूर्य 14/07/2027 17:01 चंद्र 16/07/2027 09:30 मंगल 17/07/2027 13:51 राहु 20/07/2027 14:43 गुरु 23/07/2027 07:29 शनि 26/07/2027 12:24 बुध 29/07/2027 09:13 केतु 30/07/2027 13:33 शुक्र 02/08/2027 22:31
मंगल - शनि - चंद्र 02/08/2027 22:31 05/09/2027 16:09	मंगल - शनि - मंगल 05/09/2027 16:09 29/09/2027 06:54	मंगल - शनि - राहु 29/09/2027 06:54 29/11/2027 00:15	मंगल - शनि - गुरु 29/11/2027 00:15 21/01/2028 23:40
चंद्र 05/08/2027 17:59 मंगल 07/08/2027 17:13 राहु 12/08/2027 18:40 गुरु 17/08/2027 06:37 शनि 22/08/2027 14:48 बुध 27/08/2027 09:30 केतु 29/08/2027 08:44 शुक्र 03/09/2027 23:40 सूर्य 05/09/2027 16:09	मंगल 07/09/2027 01:13 राहु 10/09/2027 14:14 गुरु 13/09/2027 17:48 शनि 17/09/2027 11:32 बुध 20/09/2027 19:49 केतु 22/09/2027 04:53 शुक्र 26/09/2027 03:20 सूर्य 27/09/2027 07:40 चंद्र 29/09/2027 06:54	राहु 08/10/2027 09:30 गुरु 16/10/2027 11:49 शनि 26/10/2027 02:34 बुध 03/11/2027 17:01 केतु 07/11/2027 06:02 शुक्र 17/11/2027 08:55 सूर्य 20/11/2027 09:47 चंद्र 25/11/2027 11:14 मंगल 29/11/2027 00:15	गुरु 06/12/2027 04:58 शनि 14/12/2027 18:05 बुध 22/12/2027 09:36 केतु 25/12/2027 13:10 शुक्र 03/01/2028 13:04 सूर्य 06/01/2028 05:50 चंद्र 10/01/2028 17:47 मंगल 13/01/2028 21:21 राहु 21/01/2028 23:40
मंगल - बुध - बुध 21/01/2028 23:40 13/03/2028 07:10	मंगल - बुध - केतु 13/03/2028 07:10 03/04/2028 10:15	मंगल - बुध - शुक्र 03/04/2028 10:15 02/06/2028 19:05	मंगल - बुध - सूर्य 02/06/2028 19:05 20/06/2028 21:44
बुध 29/01/2028 06:08 केतु 01/02/2028 05:58 शुक्र 09/02/2028 19:13 सूर्य 12/02/2028 08:48 चंद्र 16/02/2028 15:25 मंगल 19/02/2028 15:15 राहु 27/02/2028 07:59 गुरु 05/03/2028 04:11 शनि 13/03/2028 07:10	केतु 14/03/2028 12:45 शुक्र 18/03/2028 01:16 सूर्य 19/03/2028 02:37 चंद्र 20/03/2028 20:53 मंगल 22/03/2028 02:27 राहु 25/03/2028 06:31 गुरु 28/03/2028 02:08 शनि 31/03/2028 10:25 बुध 03/04/2028 10:15	शुक्र 13/04/2028 11:44 सूर्य 16/04/2028 12:10 चंद्र 21/04/2028 12:54 मंगल 25/04/2028 01:25 राहु 04/05/2028 02:45 गुरु 12/05/2028 03:55 शनि 21/05/2028 17:19 बुध 30/05/2028 06:34 केतु 02/06/2028 19:05	सूर्य 03/06/2028 16:49 चंद्र 05/06/2028 05:02 मंगल 06/06/2028 06:23 राहु 08/06/2028 23:35 गुरु 11/06/2028 09:32 शनि 14/06/2028 06:22 बुध 16/06/2028 19:56 केतु 17/06/2028 21:17 शुक्र 20/06/2028 21:44

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - बुध - चंद्र 20/06/2028 21:44 21/07/2028 02:09	मंगल - बुध - मंगल 21/07/2028 02:09 11/08/2028 05:14	मंगल - बुध - राहु 11/08/2028 05:14 04/10/2028 13:10	मंगल - बुध - गुरु 04/10/2028 13:10 21/11/2028 20:14
चंद्र 23/06/2028 10:06 मंगल 25/06/2028 04:21 राहु 29/06/2028 17:01 गुरु 03/07/2028 17:36 शनि 08/07/2028 12:18 बुध 12/07/2028 18:56 केतु 14/07/2028 13:11 शुक्र 19/07/2028 13:55 सूर्य 21/07/2028 02:09	मंगल 22/07/2028 07:43 राहु 25/07/2028 11:47 गुरु 28/07/2028 07:24 शनि 31/07/2028 15:41 बुध 03/08/2028 15:32 केतु 04/08/2028 21:06 शुक्र 08/08/2028 09:37 सूर्य 09/08/2028 10:58 चंद्र 11/08/2028 05:14	राहु 19/08/2028 08:49 गुरु 26/08/2028 14:41 शनि 04/09/2028 05:08 बुध 11/09/2028 21:52 केतु 15/09/2028 01:56 शुक्र 24/09/2028 03:15 सूर्य 26/09/2028 20:27 चंद्र 01/10/2028 09:07 मंगल 04/10/2028 13:10	गुरु 10/10/2028 23:43 शनि 18/10/2028 15:14 बुध 25/10/2028 11:26 केतु 28/10/2028 07:03 शुक्र 05/11/2028 08:13 सूर्य 07/11/2028 18:11 चंद्र 11/11/2028 18:46 मंगल 14/11/2028 14:23 राहु 21/11/2028 20:14
मंगल - बुध - शनि 21/11/2028 20:14 18/01/2029 04:37	मंगल - केतु - केतु 18/01/2029 04:37 26/01/2029 21:25	मंगल - केतु - शुक्र 26/01/2029 21:25 20/02/2029 18:00	मंगल - केतु - सूर्य 20/02/2029 18:00 28/02/2029 04:58
शनि 30/11/2028 22:10 बुध 09/12/2028 01:09 केतु 12/12/2028 09:26 शुक्र 21/12/2028 22:50 सूर्य 24/12/2028 19:39 चंद्र 29/12/2028 14:21 मंगल 01/01/2029 22:39 राहु 10/01/2029 13:06 गुरु 18/01/2029 04:37	केतु 18/01/2029 16:48 शुक्र 20/01/2029 03:36 सूर्य 20/01/2029 14:02 चंद्र 21/01/2029 07:26 मंगल 21/01/2029 19:37 राहु 23/01/2029 02:56 गुरु 24/01/2029 06:47 शनि 25/01/2029 15:50 बुध 26/01/2029 21:25	शुक्र 31/01/2029 00:51 सूर्य 01/02/2029 06:41 चंद्र 03/02/2029 08:24 मंगल 04/02/2029 19:12 राहु 08/02/2029 12:41 गुरु 11/02/2029 20:13 शनि 15/02/2029 18:41 बुध 19/02/2029 07:12 केतु 20/02/2029 18:00	सूर्य 21/02/2029 02:57 चंद्र 21/02/2029 17:51 मंगल 22/02/2029 04:18 राहु 23/02/2029 07:09 गुरु 24/02/2029 07:00 शनि 25/02/2029 11:21 बुध 26/02/2029 12:42 केतु 26/02/2029 23:08 शुक्र 28/02/2029 04:58
मंगल - केतु - चंद्र 28/02/2029 04:58 12/03/2029 15:15	मंगल - केतु - मंगल 12/03/2029 15:15 21/03/2029 08:03	मंगल - केतु - राहु 21/03/2029 08:03 12/04/2029 16:58	मंगल - केतु - गुरु 12/04/2029 16:58 02/05/2029 14:14
चंद्र 01/03/2029 05:49 मंगल 01/03/2029 23:13 राहु 03/03/2029 19:58 गुरु 05/03/2029 11:44 शनि 07/03/2029 10:58 बुध 09/03/2029 05:14 केतु 09/03/2029 22:38 शुक्र 12/03/2029 00:20 सूर्य 12/03/2029 15:15	मंगल 13/03/2029 03:26 राहु 14/03/2029 10:45 गुरु 15/03/2029 14:36 शनि 16/03/2029 23:39 बुध 18/03/2029 05:14 केतु 18/03/2029 17:25 शुक्र 20/03/2029 04:13 सूर्य 20/03/2029 14:39 चंद्र 21/03/2029 08:03	राहु 24/03/2029 16:36 गुरु 27/03/2029 16:11 शनि 31/03/2029 05:12 बुध 03/04/2029 09:15 केतु 04/04/2029 16:35 शुक्र 08/04/2029 10:04 सूर्य 09/04/2029 12:55 चंद्र 11/04/2029 09:39 मंगल 12/04/2029 16:58	गुरु 15/04/2029 08:36 शनि 18/04/2029 12:10 बुध 21/04/2029 07:47 केतु 22/04/2029 11:38 शुक्र 25/04/2029 19:10 सूर्य 26/04/2029 19:02 चंद्र 28/04/2029 10:48 मंगल 29/04/2029 14:39 राहु 02/05/2029 14:14

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - शनि 02/05/2029 14:14 26/05/2029 04:59	मंगल - केतु - बुध 26/05/2029 04:59 16/06/2029 08:04	मंगल - शुक्र - शुक्र 16/06/2029 08:04 26/08/2029 08:34	मंगल - शुक्र - सूर्य 26/08/2029 08:34 16/09/2029 15:55
शनि 06/05/2029 07:58 बुध 09/05/2029 16:15 केतु 11/05/2029 01:19 शुक्र 14/05/2029 23:47 सूर्य 16/05/2029 04:07 चंद्र 18/05/2029 03:20 मंगल 19/05/2029 12:24 राहु 23/05/2029 01:25 गुरु 26/05/2029 04:59	बुध 29/05/2029 04:49 केतु 30/05/2029 10:24 शुक्र 02/06/2029 22:55 सूर्य 04/06/2029 00:16 चंद्र 05/06/2029 18:31 मंगल 07/06/2029 00:06 राहु 10/06/2029 04:10 गुरु 12/06/2029 23:47 शनि 16/06/2029 08:04	शुक्र 28/06/2029 04:09 सूर्य 01/07/2029 17:23 चंद्र 07/07/2029 15:25 मंगल 11/07/2029 18:51 राहु 22/07/2029 10:31 गुरु 31/07/2029 21:47 शनि 12/08/2029 03:40 बुध 22/08/2029 05:08 केतु 26/08/2029 08:34	सूर्य 27/08/2029 10:08 चंद्र 29/08/2029 04:45 मंगल 30/08/2029 10:35 राहु 02/09/2029 15:17 गुरु 05/09/2029 11:28 शनि 08/09/2029 20:25 बुध 11/09/2029 20:52 केतु 13/09/2029 02:42 शुक्र 16/09/2029 15:55
मंगल - शुक्र - चंद्र 16/09/2029 15:55 22/10/2029 04:10	मंगल - शुक्र - मंगल 22/10/2029 04:10 16/11/2029 00:45	मंगल - शुक्र - राहु 16/11/2029 00:45 18/01/2030 22:48	मंगल - शुक्र - गुरु 18/01/2030 22:48 16/03/2030 18:24
चंद्र 19/09/2029 14:56 मंगल 21/09/2029 16:39 राहु 27/09/2029 00:29 गुरु 01/10/2029 18:07 शनि 07/10/2029 09:04 बुध 12/10/2029 09:48 केतु 14/10/2029 11:31 शुक्र 20/10/2029 09:33 सूर्य 22/10/2029 04:10	मंगल 23/10/2029 14:58 राहु 27/10/2029 08:27 गुरु 30/10/2029 16:00 शनि 03/11/2029 14:27 बुध 07/11/2029 02:58 केतु 08/11/2029 13:46 शुक्र 12/11/2029 17:12 सूर्य 13/11/2029 23:02 चंद्र 16/11/2029 00:45	राहु 25/11/2029 14:51 गुरु 04/12/2029 03:23 शनि 14/12/2029 06:17 बुध 23/12/2029 07:36 केतु 27/12/2029 01:06 शुक्र 06/01/2030 16:46 सूर्य 09/01/2030 21:28 चंद्र 15/01/2030 05:18 मंगल 18/01/2030 22:48	गुरु 26/01/2030 12:36 शनि 04/02/2030 12:31 बुध 12/02/2030 13:41 केतु 15/02/2030 21:14 शुक्र 25/02/2030 08:30 सूर्य 28/02/2030 04:41 चंद्र 04/03/2030 22:19 मंगल 08/03/2030 05:51 राहु 16/03/2030 18:24
मंगल - शुक्र - शनि 16/03/2030 18:24 23/05/2030 05:40	मंगल - शुक्र - बुध 23/05/2030 05:40 22/07/2030 14:30	मंगल - शुक्र - केतु 22/07/2030 14:30 16/08/2030 11:04	मंगल - सूर्य - सूर्य 16/08/2030 11:04 22/08/2030 20:28
शनि 27/03/2030 10:47 बुध 06/04/2030 00:11 केतु 09/04/2030 22:38 शुक्र 21/04/2030 04:31 सूर्य 24/04/2030 13:29 चंद्र 30/04/2030 04:25 मंगल 04/05/2030 02:52 राहु 14/05/2030 05:46 गुरु 23/05/2030 05:40	बुध 31/05/2030 18:55 केतु 04/06/2030 07:26 शुक्र 14/06/2030 08:54 सूर्य 17/06/2030 09:21 चंद्र 22/06/2030 10:05 मंगल 25/06/2030 22:36 राहु 04/07/2030 23:55 गुरु 13/07/2030 01:06 शनि 22/07/2030 14:30	केतु 24/07/2030 01:18 शुक्र 28/07/2030 04:43 सूर्य 29/07/2030 10:33 चंद्र 31/07/2030 12:16 मंगल 01/08/2030 23:04 राहु 05/08/2030 16:33 गुरु 09/08/2030 00:06 शनि 12/08/2030 22:33 बुध 16/08/2030 11:04	सूर्य 16/08/2030 18:44 चंद्र 17/08/2030 07:31 मंगल 17/08/2030 16:28 राहु 18/08/2030 15:29 गुरु 19/08/2030 11:56 शनि 20/08/2030 12:13 बुध 21/08/2030 09:57 केतु 21/08/2030 18:54 शुक्र 22/08/2030 20:28

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - चंद्र - मंगल		मंगल - राहु - चंद्र - राहु		मंगल - राहु - चंद्र - गुरु		मंगल - राहु - चंद्र - शनि	
15/11/2025 14:24		17/11/2025 11:08		22/11/2025 06:11		26/11/2025 12:28	
17/11/2025 11:08		22/11/2025 06:11		26/11/2025 12:28		01/12/2025 13:54	
मंगल	15/11/2025 17:00	राहु	18/11/2025 04:24	गुरु	22/11/2025 19:50	शनि	27/11/2025 07:41
राहु	15/11/2025 23:43	गुरु	18/11/2025 19:44	शनि	23/11/2025 12:01	बुध	28/11/2025 00:54
गुरु	16/11/2025 05:41	शनि	19/11/2025 13:57	बुध	24/11/2025 02:31	केतु	28/11/2025 07:59
शनि	16/11/2025 12:46	बुध	20/11/2025 06:15	केतु	24/11/2025 08:28	शुक्र	29/11/2025 04:13
बुध	16/11/2025 19:06	केतु	20/11/2025 12:58	शुक्र	25/11/2025 01:31	सूर्य	29/11/2025 10:18
केतु	16/11/2025 21:43	शुक्र	21/11/2025 08:08	सूर्य	25/11/2025 06:38	चंद्र	29/11/2025 20:25
शुक्र	17/11/2025 05:10	सूर्य	21/11/2025 13:54	चंद्र	25/11/2025 15:09	मंगल	30/11/2025 03:30
सूर्य	17/11/2025 07:25	चंद्र	21/11/2025 23:29	मंगल	25/11/2025 21:07	राहु	30/11/2025 21:43
चंद्र	17/11/2025 11:08	मंगल	22/11/2025 06:11	राहु	26/11/2025 12:28	गुरु	01/12/2025 13:54
मंगल - राहु - चंद्र - बुध		मंगल - राहु - चंद्र - केतु		मंगल - राहु - चंद्र - शुक्र		मंगल - राहु - चंद्र - सूर्य	
01/12/2025 13:54		06/12/2025 02:34		07/12/2025 23:19		13/12/2025 07:09	
06/12/2025 02:34		07/12/2025 23:19		13/12/2025 07:09		14/12/2025 21:30	
बुध	02/12/2025 05:18	केतु	06/12/2025 05:11	शुक्र	08/12/2025 20:37	सूर्य	13/12/2025 09:04
केतु	02/12/2025 11:38	शुक्र	06/12/2025 12:38	सूर्य	09/12/2025 03:01	चंद्र	13/12/2025 12:16
शुक्र	03/12/2025 05:45	सूर्य	06/12/2025 14:52	चंद्र	09/12/2025 13:40	मंगल	13/12/2025 14:30
सूर्य	03/12/2025 11:11	चंद्र	06/12/2025 18:36	मंगल	09/12/2025 21:07	राहु	13/12/2025 20:15
चंद्र	03/12/2025 20:14	मंगल	06/12/2025 21:13	राहु	10/12/2025 16:18	गुरु	14/12/2025 01:22
मंगल	04/12/2025 02:35	राहु	07/12/2025 03:55	गुरु	11/12/2025 09:20	शनि	14/12/2025 07:26
राहु	04/12/2025 18:53	गुरु	07/12/2025 09:53	शनि	12/12/2025 05:35	बुध	14/12/2025 12:52
गुरु	05/12/2025 09:22	शनि	07/12/2025 16:58	बुध	12/12/2025 23:42	केतु	14/12/2025 15:07
शनि	06/12/2025 02:34	बुध	07/12/2025 23:19	केतु	13/12/2025 07:09	शुक्र	14/12/2025 21:30
मंगल - राहु - मंगल - मंगल		मंगल - राहु - मंगल - राहु		मंगल - राहु - मंगल - गुरु		मंगल - राहु - मंगल - शनि	
14/12/2025 21:30		16/12/2025 04:49		19/12/2025 13:22		22/12/2025 12:57	
16/12/2025 04:49		19/12/2025 13:22		22/12/2025 12:57		26/12/2025 01:58	
मंगल	14/12/2025 23:20	राहु	16/12/2025 16:54	गुरु	19/12/2025 22:54	शनि	23/12/2025 02:24
राहु	15/12/2025 04:02	गुरु	17/12/2025 03:38	शनि	20/12/2025 10:14	बुध	23/12/2025 14:27
गुरु	15/12/2025 08:12	शनि	17/12/2025 16:24	बुध	20/12/2025 20:23	केतु	23/12/2025 19:25
शनि	15/12/2025 13:10	बुध	18/12/2025 03:48	केतु	21/12/2025 00:33	शुक्र	24/12/2025 09:35
बुध	15/12/2025 17:36	केतु	18/12/2025 08:30	शुक्र	21/12/2025 12:29	सूर्य	24/12/2025 13:50
केतु	15/12/2025 19:25	शुक्र	18/12/2025 21:55	सूर्य	21/12/2025 16:04	चंद्र	24/12/2025 20:55
शुक्र	16/12/2025 00:39	सूर्य	19/12/2025 01:57	चंद्र	21/12/2025 22:02	मंगल	25/12/2025 01:52
सूर्य	16/12/2025 02:13	चंद्र	19/12/2025 08:40	मंगल	22/12/2025 02:13	राहु	25/12/2025 14:37
चंद्र	16/12/2025 04:49	मंगल	19/12/2025 13:22	राहु	22/12/2025 12:57	गुरु	26/12/2025 01:58

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - मंगल - बुध		मंगल - राहु - मंगल - केतु		मंगल - राहु - मंगल - शुक्र		मंगल - राहु - मंगल - सूर्य	
26/12/2025 01:58		29/12/2025 06:01		30/12/2025 13:21		03/01/2026 06:50	
29/12/2025 06:01		30/12/2025 13:21		03/01/2026 06:50		04/01/2026 09:41	
बुध	26/12/2025 12:44	केतु	29/12/2025 07:51	शुक्र	31/12/2025 04:15	सूर्य	03/01/2026 08:10
केतु	26/12/2025 17:10	शुक्र	29/12/2025 13:04	सूर्य	31/12/2025 08:44	चंद्र	03/01/2026 10:25
शुक्र	27/12/2025 05:51	सूर्य	29/12/2025 14:38	चंद्र	31/12/2025 16:11	मंगल	03/01/2026 11:58
सूर्य	27/12/2025 09:39	चंद्र	29/12/2025 17:15	मंगल	31/12/2025 21:25	राहु	03/01/2026 16:00
चंद्र	27/12/2025 15:59	मंगल	29/12/2025 19:04	राहु	01/01/2026 10:50	गुरु	03/01/2026 19:35
मंगल	27/12/2025 20:26	राहु	29/12/2025 23:46	गुरु	01/01/2026 22:46	शनि	03/01/2026 23:50
राहु	28/12/2025 07:50	गुरु	30/12/2025 03:57	शनि	02/01/2026 12:56	बुध	04/01/2026 03:38
गुरु	28/12/2025 17:59	शनि	30/12/2025 08:54	बुध	03/01/2026 01:37	केतु	04/01/2026 05:12
शनि	29/12/2025 06:01	बुध	30/12/2025 13:21	केतु	03/01/2026 06:50	शुक्र	04/01/2026 09:41
मंगल - राहु - मंगल - चंद्र		मंगल - गुरु - गुरु - गुरु		मंगल - गुरु - गुरु - शनि		मंगल - गुरु - गुरु - बुध	
04/01/2026 09:41		06/01/2026 06:25		12/01/2026 07:52		19/01/2026 12:35	
06/01/2026 06:25		12/01/2026 07:52		19/01/2026 12:35		25/01/2026 23:08	
चंद्र	04/01/2026 13:24	गुरु	07/01/2026 01:49	शनि	13/01/2026 11:13	बुध	20/01/2026 10:29
मंगल	04/01/2026 16:01	शनि	08/01/2026 00:50	बुध	14/01/2026 11:41	केतु	20/01/2026 19:30
राहु	04/01/2026 22:44	बुध	08/01/2026 21:27	केतु	14/01/2026 21:46	शुक्र	21/01/2026 21:15
गुरु	05/01/2026 04:41	केतु	09/01/2026 05:56	शुक्र	16/01/2026 02:33	सूर्य	22/01/2026 04:59
शनि	05/01/2026 11:47	शुक्र	10/01/2026 06:10	सूर्य	16/01/2026 11:11	चंद्र	22/01/2026 17:52
बुध	05/01/2026 18:07	सूर्य	10/01/2026 13:27	चंद्र	17/01/2026 01:35	मंगल	23/01/2026 02:53
केतु	05/01/2026 20:43	चंद्र	11/01/2026 01:34	मंगल	17/01/2026 11:39	राहु	24/01/2026 02:04
शुक्र	06/01/2026 04:11	मंगल	11/01/2026 10:03	राहु	18/01/2026 13:34	गुरु	24/01/2026 22:40
सूर्य	06/01/2026 06:25	राहु	12/01/2026 07:52	गुरु	19/01/2026 12:35	शनि	25/01/2026 23:08
मंगल - गुरु - गुरु - केतु		मंगल - गुरु - गुरु - शुक्र		मंगल - गुरु - गुरु - सूर्य		मंगल - गुरु - गुरु - चंद्र	
25/01/2026 23:08		28/01/2026 14:46		05/02/2026 04:35		07/02/2026 11:07	
28/01/2026 14:46		05/02/2026 04:35		07/02/2026 11:07		11/02/2026 06:02	
केतु	26/01/2026 02:51	शुक्र	29/01/2026 21:04	सूर्य	05/02/2026 07:18	चंद्र	07/02/2026 18:42
शुक्र	26/01/2026 13:27	सूर्य	30/01/2026 06:10	चंद्र	05/02/2026 11:51	मंगल	08/02/2026 00:00
सूर्य	26/01/2026 16:38	चंद्र	30/01/2026 21:19	मंगल	05/02/2026 15:02	राहु	08/02/2026 13:38
चंद्र	26/01/2026 21:56	मंगल	31/01/2026 07:55	राहु	05/02/2026 23:13	गुरु	09/02/2026 01:46
मंगल	27/01/2026 01:39	राहु	01/02/2026 11:11	गुरु	06/02/2026 06:29	शनि	09/02/2026 16:09
राहु	27/01/2026 11:12	गुरु	02/02/2026 11:26	शनि	06/02/2026 15:08	बुध	10/02/2026 05:02
गुरु	27/01/2026 19:41	शनि	03/02/2026 16:13	बुध	06/02/2026 22:51	केतु	10/02/2026 10:20
शनि	28/01/2026 05:45	बुध	04/02/2026 17:59	केतु	07/02/2026 02:02	शुक्र	11/02/2026 01:29
बुध	28/01/2026 14:46	केतु	05/02/2026 04:35	शुक्र	07/02/2026 11:07	सूर्य	11/02/2026 06:02

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 3 मास 8 दिन

शनि 14 वर्ष	केतु 15 वर्ष	चंद्र 16 वर्ष	बुध 17 वर्ष	शुक्र 18 वर्ष
13/11/2008	21/02/2022	21/02/2037	21/02/2053	21/02/2070
21/02/2022	21/02/2037	21/02/2053	21/02/2070	21/02/2088
शनि 30/10/2009	केतु 30/01/2024	चंद्र 08/05/2039	बुध 19/08/2055	शुक्र 07/12/2072
केतु 23/08/2011	चंद्र 24/02/2026	बुध 10/09/2041	शुक्र 09/04/2058	सूर्य 22/08/2074
चंद्र 28/07/2013	बुध 07/05/2028	शुक्र 05/03/2044	सूर्य 19/11/2059	मंगल 03/07/2076
बुध 16/08/2015	शुक्र 04/09/2030	सूर्य 10/09/2045	मंगल 22/08/2061	गुरु 09/07/2078
शुक्र 18/10/2017	सूर्य 06/02/2032	मंगल 08/05/2047	गुरु 19/07/2063	शनि 10/09/2080
सूर्य 15/02/2019	मंगल 25/08/2033	गुरु 21/02/2049	शनि 06/08/2065	केतु 08/01/2083
मंगल 28/07/2020	गुरु 01/05/2035	शनि 27/01/2051	केतु 18/10/2067	चंद्र 03/07/2085
गुरु 21/02/2022	शनि 21/02/2037	केतु 21/02/2053	चंद्र 21/02/2070	बुध 21/02/2088

सूर्य 11 वर्ष	मंगल 12 वर्ष	गुरु 13 वर्ष	शनि 14 वर्ष
21/02/2088	21/02/2099	22/02/2111	22/02/2124
21/02/2099	22/02/2111	22/02/2124	00/00/0000
सूर्य 08/03/2089	मंगल 20/05/2100	गुरु 07/08/2112	शनि 14/11/2124
मंगल 28/04/2090	गुरु 24/09/2101	शनि 03/03/2114	00/00/0000
गुरु 22/07/2091	शनि 07/03/2103	केतु 07/11/2115	00/00/0000
शनि 18/11/2092	केतु 23/09/2104	चंद्र 23/08/2117	00/00/0000
केतु 22/04/2094	चंद्र 21/05/2106	बुध 20/07/2119	00/00/0000
चंद्र 28/10/2095	बुध 22/02/2108	शुक्र 26/07/2121	00/00/0000
बुध 08/06/2097	शुक्र 02/01/2110	सूर्य 19/10/2122	00/00/0000
शुक्र 21/02/2099	सूर्य 22/02/2111	मंगल 22/02/2124	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि	शनि - केतु	शनि - चंद्र	शनि - बुध	शनि - शुक्र
13/11/2008	30/10/2009	23/08/2011	28/07/2013	16/08/2015
30/10/2009	23/08/2011	28/07/2013	16/08/2015	18/10/2017
00/00/0000	केतु 24/01/2010	चंद्र 28/11/2011	बुध 15/11/2013	शुक्र 17/12/2015
00/00/0000	चंद्र 25/04/2010	बुध 10/03/2012	शुक्र 11/03/2014	सूर्य 02/03/2016
13/11/2008	बुध 31/07/2010	शुक्र 28/06/2012	सूर्य 21/05/2014	मंगल 23/05/2016
बुध 16/01/2009	शुक्र 11/11/2010	सूर्य 03/09/2012	मंगल 07/08/2014	गुरु 20/08/2016
शुक्र 22/04/2009	सूर्य 12/01/2011	मंगल 15/11/2012	गुरु 30/10/2014	शनि 23/11/2016
सूर्य 19/06/2009	मंगल 22/03/2011	गुरु 02/02/2013	शनि 28/01/2015	केतु 06/03/2017
मंगल 22/08/2009	गुरु 04/06/2011	शनि 28/04/2013	केतु 05/05/2015	चंद्र 24/06/2017
गुरु 30/10/2009	शनि 23/08/2011	केतु 28/07/2013	चंद्र 16/08/2015	बुध 18/10/2017
शनि - सूर्य	शनि - मंगल	शनि - गुरु	केतु - केतु	केतु - चंद्र
18/10/2017	15/02/2019	28/07/2020	21/02/2022	30/01/2024
15/02/2019	28/07/2020	21/02/2022	30/01/2024	24/02/2026
सूर्य 03/12/2017	मंगल 10/04/2019	गुरु 30/09/2020	केतु 23/05/2022	चंद्र 13/05/2024
मंगल 22/01/2018	गुरु 09/06/2019	शनि 08/12/2020	चंद्र 29/08/2022	बुध 01/09/2024
गुरु 17/03/2018	शनि 12/08/2019	केतु 20/02/2021	बुध 11/12/2022	शुक्र 27/12/2024
शनि 15/05/2018	केतु 19/10/2019	चंद्र 10/05/2021	शुक्र 31/03/2023	सूर्य 09/03/2025
केतु 17/07/2018	चंद्र 31/12/2019	बुध 02/08/2021	सूर्य 06/06/2023	मंगल 26/05/2025
चंद्र 21/09/2018	बुध 17/03/2020	शुक्र 30/10/2021	मंगल 18/08/2023	गुरु 19/08/2025
बुध 01/12/2018	शुक्र 08/06/2020	सूर्य 23/12/2021	गुरु 06/11/2023	शनि 18/11/2025
शुक्र 15/02/2019	सूर्य 28/07/2020	मंगल 21/02/2022	शनि 30/01/2024	केतु 24/02/2026
केतु - बुध	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - मंगल	केतु - गुरु
24/02/2026	07/05/2028	04/09/2030	06/02/2032	25/08/2033
07/05/2028	04/09/2030	06/02/2032	25/08/2033	01/05/2035
बुध 22/06/2026	शुक्र 16/09/2028	सूर्य 23/10/2030	मंगल 04/04/2032	गुरु 02/11/2033
शुक्र 24/10/2026	सूर्य 05/12/2028	मंगल 16/12/2030	गुरु 07/06/2032	शनि 15/01/2034
सूर्य 08/01/2027	मंगल 03/03/2029	गुरु 12/02/2031	शनि 14/08/2032	केतु 05/04/2034
मंगल 01/04/2027	गुरु 07/06/2029	शनि 16/04/2031	केतु 26/10/2032	चंद्र 28/06/2034
गुरु 30/06/2027	शनि 17/09/2029	केतु 22/06/2031	चंद्र 13/01/2033	बुध 26/09/2034
शनि 05/10/2027	केतु 05/01/2030	चंद्र 02/09/2031	बुध 06/04/2033	शुक्र 31/12/2034
केतु 17/01/2028	चंद्र 02/05/2030	बुध 17/11/2031	शुक्र 03/07/2033	सूर्य 27/02/2035
चंद्र 07/05/2028	बुध 04/09/2030	शुक्र 06/02/2032	सूर्य 25/08/2033	मंगल 01/05/2035

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शनि 01/05/2035 21/02/2037	चंद्र - चंद्र 21/02/2037 08/05/2039	चंद्र - बुध 08/05/2039 10/09/2041	चंद्र - शुक्र 10/09/2041 05/03/2044	चंद्र - सूर्य 05/03/2044 10/09/2045
शनि 20/07/2035 केतु 14/10/2035 चंद्र 13/01/2036 बुध 19/04/2036 शुक्र 30/07/2036 सूर्य 01/10/2036 मंगल 08/12/2036 गुरु 21/02/2037	चंद्र 12/06/2037 बुध 08/10/2037 शुक्र 10/02/2038 सूर्य 27/04/2038 मंगल 20/07/2038 गुरु 18/10/2038 शनि 23/01/2039 केतु 08/05/2039	बुध 10/09/2039 शुक्र 21/01/2040 सूर्य 11/04/2040 मंगल 09/07/2040 गुरु 13/10/2040 शनि 24/01/2041 केतु 15/05/2041 चंद्र 10/09/2041	शुक्र 29/01/2042 सूर्य 25/04/2042 मंगल 28/07/2042 गुरु 06/11/2042 शनि 24/02/2043 केतु 21/06/2043 चंद्र 24/10/2043 बुध 05/03/2044	सूर्य 26/04/2044 मंगल 23/06/2044 गुरु 24/08/2044 शनि 30/10/2044 केतु 09/01/2045 चंद्र 27/03/2045 बुध 16/06/2045 शुक्र 10/09/2045
चंद्र - मंगल 10/09/2045 08/05/2047	चंद्र - गुरु 08/05/2047 21/02/2049	चंद्र - शनि 21/02/2049 27/01/2051	चंद्र - केतु 27/01/2051 21/02/2053	बुध - बुध 21/02/2053 19/08/2055
मंगल 12/11/2045 गुरु 18/01/2046 शनि 01/04/2046 केतु 18/06/2046 चंद्र 10/09/2046 बुध 07/12/2046 शुक्र 11/03/2047 सूर्य 08/05/2047	गुरु 20/07/2047 शनि 07/10/2047 केतु 31/12/2047 चंद्र 30/03/2048 बुध 04/07/2048 शुक्र 14/10/2048 सूर्य 15/12/2048 मंगल 21/02/2049	शनि 17/05/2049 केतु 16/08/2049 चंद्र 21/11/2049 बुध 04/03/2050 शुक्र 22/06/2050 सूर्य 28/08/2050 मंगल 09/11/2050 गुरु 27/01/2051	केतु 05/05/2051 चंद्र 17/08/2051 बुध 06/12/2051 शुक्र 01/04/2052 सूर्य 11/06/2052 मंगल 29/08/2052 गुरु 21/11/2052 शनि 21/02/2053	बुध 04/07/2053 शुक्र 22/11/2053 सूर्य 16/02/2054 मंगल 22/05/2054 गुरु 31/08/2054 शनि 19/12/2054 केतु 16/04/2055 चंद्र 19/08/2055
बुध - शुक्र 19/08/2055 09/04/2058	बुध - सूर्य 09/04/2058 19/11/2059	बुध - मंगल 19/11/2059 22/08/2061	बुध - गुरु 22/08/2061 19/07/2063	बुध - शनि 19/07/2063 06/08/2065
शुक्र 16/01/2056 सूर्य 16/04/2056 मंगल 25/07/2056 गुरु 10/11/2056 शनि 06/03/2057 केतु 09/07/2057 चंद्र 19/11/2057 बुध 09/04/2058	सूर्य 04/06/2058 मंगल 04/08/2058 गुरु 09/10/2058 शनि 19/12/2058 केतु 05/03/2059 चंद्र 25/05/2059 बुध 19/08/2059 शुक्र 19/11/2059	मंगल 24/01/2060 गुरु 05/04/2060 शनि 22/06/2060 केतु 13/09/2060 चंद्र 10/12/2060 बुध 15/03/2061 शुक्र 22/06/2061 सूर्य 22/08/2061	गुरु 08/11/2061 शनि 31/01/2062 केतु 01/05/2062 चंद्र 05/08/2062 बुध 15/11/2062 शुक्र 03/03/2063 सूर्य 08/05/2063 मंगल 19/07/2063	शनि 17/10/2063 केतु 22/01/2064 चंद्र 05/05/2064 बुध 23/08/2064 शुक्र 17/12/2064 सूर्य 26/02/2065 मंगल 14/05/2065 गुरु 06/08/2065

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु 06/08/2065 18/10/2067	बुध - चंद्र 18/10/2067 21/02/2070	शुक्र - शुक्र 21/02/2070 07/12/2072	शुक्र - सूर्य 07/12/2072 22/08/2074	शुक्र - मंगल 22/08/2074 03/07/2076
केतु 18/11/2065 चंद्र 09/03/2066 बुध 05/07/2066 शुक्र 06/11/2066 सूर्य 21/01/2067 मंगल 14/04/2067 गुरु 13/07/2067 शनि 18/10/2067	चंद्र 13/02/2068 बुध 18/06/2068 शुक्र 29/10/2068 सूर्य 18/01/2069 मंगल 17/04/2069 गुरु 22/07/2069 शनि 02/11/2069 केतु 21/02/2070	शुक्र 29/07/2070 सूर्य 03/11/2070 मंगल 16/02/2071 गुरु 11/06/2071 शनि 12/10/2071 केतु 21/02/2072 चंद्र 10/07/2072 बुध 07/12/2072	सूर्य 04/02/2073 मंगल 10/04/2073 गुरु 18/06/2073 शनि 02/09/2073 केतु 21/11/2073 चंद्र 15/02/2074 बुध 18/05/2074 शुक्र 22/08/2074	मंगल 01/11/2074 गुरु 16/01/2075 शनि 08/04/2075 केतु 05/07/2075 चंद्र 07/10/2075 बुध 14/01/2076 शुक्र 29/04/2076 सूर्य 03/07/2076
शुक्र - गुरु 03/07/2076 09/07/2078	शुक्र - शनि 09/07/2078 10/09/2080	शुक्र - केतु 10/09/2080 08/01/2083	शुक्र - चंद्र 08/01/2083 03/07/2085	शुक्र - बुध 03/07/2085 21/02/2088
गुरु 23/09/2076 शनि 21/12/2076 केतु 26/03/2077 चंद्र 06/07/2077 बुध 22/10/2077 शुक्र 13/02/2078 सूर्य 24/04/2078 मंगल 09/07/2078	शनि 13/10/2078 केतु 24/01/2079 चंद्र 13/05/2079 बुध 06/09/2079 शुक्र 08/01/2080 सूर्य 23/03/2080 मंगल 13/06/2080 गुरु 10/09/2080	केतु 29/12/2080 चंद्र 25/04/2081 बुध 28/08/2081 शुक्र 06/01/2082 सूर्य 28/03/2082 मंगल 24/06/2082 गुरु 27/09/2082 शनि 08/01/2083	चंद्र 13/05/2083 बुध 23/09/2083 शुक्र 11/02/2084 सूर्य 07/05/2084 मंगल 08/08/2084 गुरु 18/11/2084 शनि 07/03/2085 केतु 03/07/2085	बुध 21/11/2085 शुक्र 19/04/2086 सूर्य 20/07/2086 मंगल 28/10/2086 गुरु 12/02/2087 शनि 09/06/2087 केतु 11/10/2087 चंद्र 21/02/2088
सूर्य - सूर्य 21/02/2088 08/03/2089	सूर्य - मंगल 08/03/2089 28/04/2090	सूर्य - गुरु 28/04/2090 22/07/2091	सूर्य - शनि 22/07/2091 18/11/2092	सूर्य - केतु 18/11/2092 22/04/2094
सूर्य 28/03/2088 मंगल 07/05/2088 गुरु 19/06/2088 शनि 03/08/2088 केतु 22/09/2088 चंद्र 13/11/2088 बुध 08/01/2089 शुक्र 08/03/2089	मंगल 20/04/2089 गुरु 06/06/2089 शनि 26/07/2089 केतु 18/09/2089 चंद्र 14/11/2089 बुध 14/01/2090 शुक्र 19/03/2090 सूर्य 28/04/2090	गुरु 17/06/2090 शनि 11/08/2090 केतु 08/10/2090 चंद्र 09/12/2090 बुध 13/02/2091 शुक्र 24/04/2091 सूर्य 06/06/2091 मंगल 22/07/2091	शनि 19/09/2091 केतु 20/11/2091 चंद्र 26/01/2092 बुध 06/04/2092 शुक्र 21/06/2092 सूर्य 06/08/2092 मंगल 25/09/2092 गुरु 18/11/2092	केतु 24/01/2093 चंद्र 06/04/2093 बुध 21/06/2093 शुक्र 10/09/2093 सूर्य 29/10/2093 मंगल 22/12/2093 गुरु 18/02/2094 शनि 22/04/2094

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र	सूर्य - बुध	सूर्य - शुक्र	मंगल - मंगल	मंगल - गुरु
22/04/2094	28/10/2095	08/06/2097	21/02/2099	20/05/2100
28/10/2095	08/06/2097	21/02/2099	20/05/2100	24/09/2101
चंद्र 07/07/2094	बुध 22/01/2096	शुक्र 12/09/2097	मंगल 09/04/2099	गुरु 14/07/2100
बुध 26/09/2094	शुक्र 22/04/2096	सूर्य 10/11/2097	गुरु 30/05/2099	शनि 12/09/2100
शुक्र 21/12/2094	सूर्य 17/06/2096	मंगल 14/01/2098	शनि 23/07/2099	केतु 14/11/2100
सूर्य 12/02/2095	मंगल 17/08/2096	गुरु 25/03/2098	केतु 20/09/2099	चंद्र 21/01/2101
मंगल 10/04/2095	गुरु 22/10/2096	शनि 08/06/2098	चंद्र 22/11/2099	बुध 03/04/2101
गुरु 11/06/2095	शनि 01/01/2097	केतु 28/08/2098	बुध 27/01/2100	शुक्र 18/06/2101
शनि 17/08/2095	केतु 18/03/2097	चंद्र 22/11/2098	शुक्र 07/04/2100	सूर्य 04/08/2101
केतु 28/10/2095	चंद्र 08/06/2097	बुध 21/02/2099	सूर्य 20/05/2100	मंगल 24/09/2101
मंगल - शनि	मंगल - केतु	मंगल - चंद्र	मंगल - बुध	मंगल - शुक्र
24/09/2101	07/03/2103	23/09/2104	21/05/2106	22/02/2108
07/03/2103	23/09/2104	21/05/2106	22/02/2108	02/01/2110
शनि 26/11/2101	केतु 19/05/2103	चंद्र 16/12/2104	बुध 23/08/2106	शुक्र 07/06/2108
केतु 03/02/2102	चंद्र 05/08/2103	बुध 14/03/2105	शुक्र 01/12/2106	सूर्य 10/08/2108
चंद्र 17/04/2102	बुध 27/10/2103	शुक्र 16/06/2105	सूर्य 31/01/2107	मंगल 20/10/2108
बुध 03/07/2102	शुक्र 23/01/2104	सूर्य 12/08/2105	मंगल 07/04/2107	गुरु 04/01/2109
शुक्र 23/09/2102	सूर्य 17/03/2104	मंगल 14/10/2105	गुरु 18/06/2107	शनि 27/03/2109
सूर्य 13/11/2102	मंगल 14/05/2104	गुरु 21/12/2105	शनि 04/09/2107	केतु 23/06/2109
मंगल 06/01/2103	गुरु 17/07/2104	शनि 04/03/2106	केतु 26/11/2107	चंद्र 25/09/2109
गुरु 07/03/2103	शनि 23/09/2104	केतु 21/05/2106	चंद्र 22/02/2108	बुध 02/01/2110
मंगल - सूर्य	गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - केतु	गुरु - चंद्र
02/01/2110	22/02/2111	07/08/2112	03/03/2114	07/11/2115
22/02/2111	07/08/2112	03/03/2114	07/11/2115	23/08/2117
सूर्य 11/02/2110	गुरु 23/04/2111	शनि 15/10/2112	केतु 22/05/2114	चंद्र 06/02/2116
मंगल 26/03/2110	शनि 26/06/2111	केतु 28/12/2112	चंद्र 14/08/2114	बुध 12/05/2116
गुरु 11/05/2110	केतु 03/09/2111	चंद्र 17/03/2113	बुध 12/11/2114	शुक्र 21/08/2116
शनि 01/07/2110	चंद्र 15/11/2111	बुध 09/06/2113	शुक्र 16/02/2115	सूर्य 22/10/2116
केतु 23/08/2110	बुध 01/02/2112	शुक्र 06/09/2113	सूर्य 15/04/2115	मंगल 29/12/2116
चंद्र 20/10/2110	शुक्र 24/04/2112	सूर्य 31/10/2113	मंगल 17/06/2115	गुरु 12/03/2117
बुध 20/12/2110	सूर्य 13/06/2112	मंगल 29/12/2113	गुरु 25/08/2115	शनि 30/05/2117
शुक्र 22/02/2111	मंगल 07/08/2112	गुरु 03/03/2114	शनि 07/11/2115	केतु 23/08/2117

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 9 मास 15 दिन

सूर्य 4 वर्ष	चंद्र 7 वर्ष	मंगल 5 वर्ष	राहु 12 वर्ष	गुरु 11 वर्ष
13/11/2008	29/08/2012	30/04/2019	30/12/2023	30/12/2035
29/08/2012	30/04/2019	30/12/2023	30/12/2035	30/08/2046
13/11/2008	चंद्र 20/03/2013	मंगल 08/08/2019	राहु 17/10/2025	गुरु 01/06/2037
चंद्र 12/03/2009	मंगल 09/08/2013	राहु 19/04/2020	गुरु 24/05/2027	शनि 08/02/2039
मंगल 05/06/2009	राहु 09/08/2014	गुरु 02/12/2020	शनि 17/04/2029	बुध 13/08/2040
राहु 10/01/2010	गुरु 30/06/2015	शनि 29/08/2021	बुध 29/12/2030	केतु 28/03/2041
गुरु 24/07/2010	शनि 19/07/2016	बुध 28/04/2022	केतु 11/09/2031	शुक्र 06/01/2043
शनि 12/03/2011	बुध 29/06/2017	केतु 05/08/2022	शुक्र 10/09/2033	सूर्य 20/07/2043
बुध 05/10/2011	केतु 18/11/2017	शुक्र 16/05/2023	सूर्य 18/04/2034	चंद्र 09/06/2044
केतु 30/12/2011	शुक्र 29/12/2018	सूर्य 10/08/2023	चंद्र 18/04/2035	मंगल 22/01/2045
शुक्र 29/08/2012	सूर्य 30/04/2019	चंद्र 30/12/2023	मंगल 30/12/2035	राहु 30/08/2046
शनि 13 वर्ष	बुध 11 वर्ष	केतु 5 वर्ष	शुक्र 13 वर्ष	सूर्य 4 वर्ष
30/08/2046	30/04/2059	30/08/2070	30/04/2075	29/08/2088
30/04/2059	30/08/2070	30/04/2075	29/08/2088	00/00/0000
शनि 31/08/2048	बुध 07/12/2060	केतु 07/12/2070	शुक्र 20/07/2077	सूर्य 10/11/2088
बुध 18/06/2050	केतु 05/08/2061	शुक्र 17/09/2071	सूर्य 20/03/2078	चंद्र 13/11/2088
केतु 14/03/2051	शुक्र 26/06/2063	सूर्य 11/12/2071	चंद्र 30/04/2079	00/00/0000
शुक्र 23/04/2053	सूर्य 19/01/2064	चंद्र 01/05/2072	मंगल 08/02/2080	00/00/0000
सूर्य 11/12/2053	चंद्र 29/12/2064	मंगल 09/08/2072	राहु 08/02/2082	00/00/0000
चंद्र 31/12/2054	मंगल 27/08/2065	राहु 21/04/2073	गुरु 19/11/2083	00/00/0000
मंगल 27/09/2055	राहु 10/05/2067	गुरु 05/12/2073	शनि 29/12/2085	00/00/0000
राहु 21/08/2057	गुरु 12/11/2068	शनि 01/09/2074	बुध 19/11/2087	00/00/0000
गुरु 30/04/2059	शनि 30/08/2070	बुध 30/04/2075	केतु 29/08/2088	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र 13/11/2008 12/03/2009	सूर्य - मंगल 12/03/2009 05/06/2009	सूर्य - राहु 05/06/2009 10/01/2010	सूर्य - गुरु 10/01/2010 24/07/2010	सूर्य - शनि 24/07/2010 12/03/2011
चंद्र 20/11/2008 मंगल 27/11/2008 राहु 16/12/2008 गुरु 01/01/2009 शनि 20/01/2009 बुध 06/02/2009 केतु 13/02/2009 शुक्र 06/03/2009 सूर्य 12/03/2009	मंगल 17/03/2009 राहु 30/03/2009 गुरु 10/04/2009 शनि 23/04/2009 बुध 06/05/2009 केतु 11/05/2009 शुक्र 25/05/2009 सूर्य 29/05/2009 चंद्र 05/06/2009	राहु 08/07/2009 गुरु 06/08/2009 शनि 10/09/2009 बुध 11/10/2009 केतु 24/10/2009 शुक्र 29/11/2009 सूर्य 10/12/2009 चंद्र 28/12/2009 मंगल 10/01/2010	गुरु 05/02/2010 शनि 08/03/2010 बुध 05/04/2010 केतु 16/04/2010 शुक्र 18/05/2010 सूर्य 28/05/2010 चंद्र 13/06/2010 मंगल 25/06/2010 राहु 24/07/2010	शनि 30/08/2010 बुध 01/10/2010 केतु 15/10/2010 शुक्र 22/11/2010 सूर्य 04/12/2010 चंद्र 23/12/2010 मंगल 06/01/2011 राहु 10/02/2011 गुरु 12/03/2011
सूर्य - बुध 12/03/2011 05/10/2011	सूर्य - केतु 05/10/2011 30/12/2011	सूर्य - शुक्र 30/12/2011 29/08/2012	चंद्र - चंद्र 29/08/2012 20/03/2013	चंद्र - मंगल 20/03/2013 09/08/2013
बुध 11/04/2011 केतु 23/04/2011 शुक्र 27/05/2011 सूर्य 07/06/2011 चंद्र 24/06/2011 मंगल 06/07/2011 राहु 06/08/2011 गुरु 03/09/2011 शनि 05/10/2011	केतु 10/10/2011 शुक्र 25/10/2011 सूर्य 29/10/2011 चंद्र 05/11/2011 मंगल 10/11/2011 राहु 23/11/2011 गुरु 04/12/2011 शनि 17/12/2011 बुध 30/12/2011	शुक्र 08/02/2012 सूर्य 20/02/2012 चंद्र 12/03/2012 मंगल 26/03/2012 राहु 01/05/2012 गुरु 03/06/2012 शनि 11/07/2012 बुध 15/08/2012 केतु 29/08/2012	चंद्र 15/09/2012 मंगल 27/09/2012 राहु 27/10/2012 गुरु 23/11/2012 शनि 25/12/2012 बुध 23/01/2013 केतु 04/02/2013 शुक्र 10/03/2013 सूर्य 20/03/2013	मंगल 28/03/2013 राहु 19/04/2013 गुरु 08/05/2013 शनि 30/05/2013 बुध 19/06/2013 केतु 27/06/2013 शुक्र 21/07/2013 सूर्य 28/07/2013 चंद्र 09/08/2013
चंद्र - राहु 09/08/2013 09/08/2014	चंद्र - गुरु 09/08/2014 30/06/2015	चंद्र - शनि 30/06/2015 19/07/2016	चंद्र - बुध 19/07/2016 29/06/2017	चंद्र - केतु 29/06/2017 18/11/2017
राहु 03/10/2013 गुरु 21/11/2013 शनि 17/01/2014 बुध 10/03/2014 केतु 31/03/2014 शुक्र 31/05/2014 सूर्य 19/06/2014 चंद्र 19/07/2014 मंगल 09/08/2014	गुरु 22/09/2014 शनि 12/11/2014 बुध 28/12/2014 केतु 16/01/2015 शुक्र 11/03/2015 सूर्य 27/03/2015 चंद्र 23/04/2015 मंगल 12/05/2015 राहु 30/06/2015	शनि 30/08/2015 बुध 24/10/2015 केतु 15/11/2015 शुक्र 18/01/2016 सूर्य 07/02/2016 चंद्र 10/03/2016 मंगल 01/04/2016 राहु 29/05/2016 गुरु 19/07/2016	बुध 06/09/2016 केतु 26/09/2016 शुक्र 23/11/2016 सूर्य 10/12/2016 चंद्र 08/01/2017 मंगल 28/01/2017 राहु 21/03/2017 गुरु 06/05/2017 शनि 29/06/2017	केतु 08/07/2017 शुक्र 31/07/2017 सूर्य 08/08/2017 चंद्र 19/08/2017 मंगल 28/08/2017 राहु 18/09/2017 गुरु 07/10/2017 शनि 29/10/2017 बुध 18/11/2017



FUTUREPOINT
Astro Solutions



त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र 18/11/2017 29/12/2018	चंद्र - सूर्य 29/12/2018 30/04/2019	मंगल - मंगल 30/04/2019 08/08/2019	मंगल - राहु 08/08/2019 19/04/2020	मंगल - गुरु 19/04/2020 02/12/2020
शुक्र 25/01/2018 सूर्य 14/02/2018 चंद्र 20/03/2018 मंगल 13/04/2018 राहु 13/06/2018 गुरु 06/08/2018 शनि 09/10/2018 बुध 06/12/2018 केतु 29/12/2018	सूर्य 04/01/2019 चंद्र 15/01/2019 मंगल 22/01/2019 राहु 09/02/2019 गुरु 25/02/2019 शनि 16/03/2019 बुध 03/04/2019 केतु 10/04/2019 शुक्र 30/04/2019	मंगल 06/05/2019 राहु 21/05/2019 गुरु 03/06/2019 शनि 19/06/2019 बुध 03/07/2019 केतु 09/07/2019 शुक्र 25/07/2019 सूर्य 30/07/2019 चंद्र 08/08/2019	राहु 15/09/2019 गुरु 19/10/2019 शनि 28/11/2019 बुध 04/01/2020 केतु 19/01/2020 शुक्र 01/03/2020 सूर्य 14/03/2020 चंद्र 04/04/2020 मंगल 19/04/2020	गुरु 19/05/2020 शनि 24/06/2020 बुध 27/07/2020 केतु 09/08/2020 शुक्र 16/09/2020 सूर्य 27/09/2020 चंद्र 16/10/2020 मंगल 29/10/2020 राहु 02/12/2020
मंगल - शनि 02/12/2020 29/08/2021	मंगल - बुध 29/08/2021 28/04/2022	मंगल - केतु 28/04/2022 05/08/2022	मंगल - शुक्र 05/08/2022 16/05/2023	मंगल - सूर्य 16/05/2023 10/08/2023
शनि 14/01/2021 बुध 21/02/2021 केतु 09/03/2021 शुक्र 23/04/2021 सूर्य 07/05/2021 चंद्र 29/05/2021 मंगल 14/06/2021 राहु 24/07/2021 गुरु 29/08/2021	बुध 03/10/2021 केतु 17/10/2021 शुक्र 26/11/2021 सूर्य 08/12/2021 चंद्र 28/12/2021 मंगल 11/01/2022 राहु 16/02/2022 गुरु 21/03/2022 शनि 28/04/2022	केतु 04/05/2022 शुक्र 20/05/2022 सूर्य 25/05/2022 चंद्र 02/06/2022 मंगल 08/06/2022 राहु 23/06/2022 गुरु 06/07/2022 शनि 22/07/2022 बुध 05/08/2022	शुक्र 22/09/2022 सूर्य 06/10/2022 चंद्र 29/10/2022 मंगल 15/11/2022 राहु 28/12/2022 गुरु 04/02/2023 शनि 20/03/2023 बुध 30/04/2023 केतु 16/05/2023	सूर्य 21/05/2023 चंद्र 28/05/2023 मंगल 02/06/2023 राहु 14/06/2023 गुरु 26/06/2023 शनि 09/07/2023 बुध 21/07/2023 केतु 26/07/2023 शुक्र 10/08/2023
मंगल - चंद्र 10/08/2023 30/12/2023	राहु - राहु 30/12/2023 17/10/2025	राहु - गुरु 17/10/2025 24/05/2027	राहु - शनि 24/05/2027 17/04/2029	राहु - बुध 17/04/2029 29/12/2030
चंद्र 21/08/2023 मंगल 30/08/2023 राहु 20/09/2023 गुरु 09/10/2023 शनि 31/10/2023 बुध 21/11/2023 केतु 29/11/2023 शुक्र 22/12/2023 सूर्य 30/12/2023	राहु 06/04/2024 गुरु 03/07/2024 शनि 15/10/2024 बुध 16/01/2025 केतु 23/02/2025 शुक्र 13/06/2025 सूर्य 16/07/2025 चंद्र 09/09/2025 मंगल 17/10/2025	गुरु 03/01/2026 शनि 05/04/2026 बुध 27/06/2026 केतु 31/07/2026 शुक्र 06/11/2026 सूर्य 05/12/2026 चंद्र 23/01/2027 मंगल 26/02/2027 राहु 24/05/2027	शनि 11/09/2027 बुध 19/12/2027 केतु 28/01/2028 शुक्र 23/05/2028 सूर्य 26/06/2028 चंद्र 23/08/2028 मंगल 03/10/2028 राहु 15/01/2029 गुरु 17/04/2029	बुध 14/07/2029 केतु 20/08/2029 शुक्र 01/12/2029 सूर्य 01/01/2030 चंद्र 22/02/2030 मंगल 30/03/2030 राहु 01/07/2030 गुरु 22/09/2030 शनि 29/12/2030

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु 29/12/2030 11/09/2031	राहु - शुक्र 11/09/2031 10/09/2033	राहु - सूर्य 10/09/2033 18/04/2034	राहु - चंद्र 18/04/2034 18/04/2035	राहु - मंगल 18/04/2035 30/12/2035
केतु 13/01/2031 शुक्र 25/02/2031 सूर्य 10/03/2031 चंद्र 31/03/2031 मंगल 15/04/2031 राहु 23/05/2031 गुरु 26/06/2031 शनि 06/08/2031 बुध 11/09/2031	शुक्र 11/01/2032 सूर्य 16/02/2032 चंद्र 17/04/2032 मंगल 30/05/2032 राहु 16/09/2032 गुरु 23/12/2032 शनि 17/04/2033 बुध 30/07/2033 केतु 10/09/2033	सूर्य 21/09/2033 चंद्र 10/10/2033 मंगल 23/10/2033 राहु 24/11/2033 गुरु 24/12/2033 शनि 27/01/2034 बुध 27/02/2034 केतु 12/03/2034 शुक्र 18/04/2034	चंद्र 18/05/2034 मंगल 08/06/2034 राहु 02/08/2034 गुरु 20/09/2034 शनि 17/11/2034 बुध 07/01/2035 केतु 29/01/2035 शुक्र 31/03/2035 सूर्य 18/04/2035	मंगल 03/05/2035 राहु 10/06/2035 गुरु 14/07/2035 शनि 24/08/2035 बुध 29/09/2035 केतु 14/10/2035 शुक्र 25/11/2035 सूर्य 08/12/2035 चंद्र 30/12/2035
गुरु - गुरु 30/12/2035 01/06/2037	गुरु - शनि 01/06/2037 08/02/2039	गुरु - बुध 08/02/2039 13/08/2040	गुरु - केतु 13/08/2040 28/03/2041	गुरु - शुक्र 28/03/2041 06/01/2043
गुरु 08/03/2036 शनि 29/05/2036 बुध 11/08/2036 केतु 10/09/2036 शुक्र 06/12/2036 सूर्य 01/01/2037 चंद्र 13/02/2037 मंगल 15/03/2037 राहु 01/06/2037	शनि 07/09/2037 बुध 03/12/2037 केतु 08/01/2038 शुक्र 21/04/2038 सूर्य 22/05/2038 चंद्र 12/07/2038 मंगल 17/08/2038 राहु 18/11/2038 गुरु 08/02/2039	बुध 27/04/2039 केतु 29/05/2039 शुक्र 29/08/2039 सूर्य 26/09/2039 चंद्र 11/11/2039 मंगल 13/12/2039 राहु 05/03/2040 गुरु 17/05/2040 शनि 13/08/2040	केतु 26/08/2040 शुक्र 03/10/2040 सूर्य 14/10/2040 चंद्र 02/11/2040 मंगल 16/11/2040 राहु 20/12/2040 गुरु 19/01/2041 शनि 24/02/2041 बुध 28/03/2041	शुक्र 14/07/2041 सूर्य 16/08/2041 चंद्र 09/10/2041 मंगल 16/11/2041 राहु 21/02/2042 गुरु 19/05/2042 शनि 30/08/2042 बुध 30/11/2042 केतु 06/01/2043
गुरु - सूर्य 06/01/2043 20/07/2043	गुरु - चंद्र 20/07/2043 09/06/2044	गुरु - मंगल 09/06/2044 22/01/2045	गुरु - राहु 22/01/2045 30/08/2046	शनि - शनि 30/08/2046 31/08/2048
सूर्य 16/01/2043 चंद्र 01/02/2043 मंगल 13/02/2043 राहु 14/03/2043 गुरु 09/04/2043 शनि 10/05/2043 बुध 06/06/2043 केतु 18/06/2043 शुक्र 20/07/2043	चंद्र 16/08/2043 मंगल 04/09/2043 राहु 23/10/2043 गुरु 05/12/2043 शनि 26/01/2044 बुध 12/03/2044 केतु 31/03/2044 शुक्र 24/05/2044 सूर्य 09/06/2044	मंगल 22/06/2044 राहु 26/07/2044 गुरु 26/08/2044 शनि 01/10/2044 बुध 02/11/2044 केतु 15/11/2044 शुक्र 23/12/2044 सूर्य 03/01/2045 चंद्र 22/01/2045	राहु 20/04/2045 गुरु 07/07/2045 शनि 07/10/2045 बुध 29/12/2045 केतु 01/02/2046 शुक्र 10/05/2046 सूर्य 08/06/2046 चंद्र 26/07/2046 मंगल 30/08/2046	शनि 24/12/2046 बुध 06/04/2047 केतु 19/05/2047 शुक्र 18/09/2047 सूर्य 25/10/2047 चंद्र 25/12/2047 मंगल 06/02/2048 राहु 25/05/2048 गुरु 31/08/2048

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 31/08/2048 18/06/2050	शनि - केतु 18/06/2050 14/03/2051	शनि - शुक्र 14/03/2051 23/04/2053	शनि - सूर्य 23/04/2053 11/12/2053	शनि - चंद्र 11/12/2053 31/12/2054
बुध 02/12/2048 केतु 09/01/2049 शुक्र 28/04/2049 सूर्य 31/05/2049 चंद्र 25/07/2049 मंगल 01/09/2049 राहु 08/12/2049 गुरु 06/03/2050 शनि 18/06/2050	केतु 03/07/2050 शुक्र 17/08/2050 सूर्य 31/08/2050 चंद्र 22/09/2050 मंगल 08/10/2050 राहु 17/11/2050 गुरु 23/12/2050 शनि 04/02/2051 बुध 14/03/2051	शुक्र 21/07/2051 सूर्य 28/08/2051 चंद्र 01/11/2051 मंगल 16/12/2051 राहु 09/04/2052 गुरु 21/07/2052 शनि 20/11/2052 बुध 10/03/2053 केतु 23/04/2053	सूर्य 05/05/2053 चंद्र 24/05/2053 मंगल 07/06/2053 राहु 12/07/2053 गुरु 11/08/2053 शनि 17/09/2053 बुध 20/10/2053 केतु 02/11/2053 शुक्र 11/12/2053	चंद्र 12/01/2054 मंगल 03/02/2054 राहु 02/04/2054 गुरु 24/05/2054 शनि 24/07/2054 बुध 16/09/2054 केतु 09/10/2054 शुक्र 12/12/2054 सूर्य 31/12/2054
शनि - मंगल 31/12/2054 27/09/2055	शनि - राहु 27/09/2055 21/08/2057	शनि - गुरु 21/08/2057 30/04/2059	बुध - बुध 30/04/2059 07/12/2060	बुध - केतु 07/12/2060 05/08/2061
मंगल 16/01/2055 राहु 26/02/2055 गुरु 03/04/2055 शनि 15/05/2055 बुध 23/06/2055 केतु 08/07/2055 शुक्र 22/08/2055 सूर्य 05/09/2055 चंद्र 27/09/2055	राहु 09/01/2056 गुरु 11/04/2056 शनि 30/07/2056 बुध 05/11/2056 केतु 16/12/2056 शुक्र 10/04/2057 सूर्य 15/05/2057 चंद्र 12/07/2057 मंगल 21/08/2057	गुरु 11/11/2057 शनि 17/02/2058 बुध 16/05/2058 केतु 20/06/2058 शुक्र 01/10/2058 सूर्य 01/11/2058 चंद्र 23/12/2058 मंगल 28/01/2059 राहु 30/04/2059	बुध 22/07/2059 केतु 25/08/2059 शुक्र 01/12/2059 सूर्य 30/12/2059 चंद्र 17/02/2060 मंगल 22/03/2060 राहु 18/06/2060 गुरु 05/09/2060 शनि 07/12/2060	केतु 21/12/2060 शुक्र 30/01/2061 सूर्य 11/02/2061 चंद्र 03/03/2061 मंगल 17/03/2061 राहु 22/04/2061 गुरु 25/05/2061 शनि 02/07/2061 बुध 05/08/2061
बुध - शुक्र 05/08/2061 26/06/2063	बुध - सूर्य 26/06/2063 19/01/2064	बुध - चंद्र 19/01/2064 29/12/2064	बुध - मंगल 29/12/2064 27/08/2065	बुध - राहु 27/08/2065 10/05/2067
शुक्र 28/11/2061 सूर्य 01/01/2062 चंद्र 28/02/2062 मंगल 09/04/2062 राहु 22/07/2062 गुरु 22/10/2062 शनि 08/02/2063 बुध 17/05/2063 केतु 26/06/2063	सूर्य 06/07/2063 चंद्र 23/07/2063 मंगल 05/08/2063 राहु 05/09/2063 गुरु 02/10/2063 शनि 04/11/2063 बुध 03/12/2063 केतु 15/12/2063 शुक्र 19/01/2064	चंद्र 17/02/2064 मंगल 08/03/2064 राहु 28/04/2064 गुरु 13/06/2064 शनि 07/08/2064 बुध 25/09/2064 केतु 15/10/2064 शुक्र 12/12/2064 सूर्य 29/12/2064	मंगल 12/01/2065 राहु 17/02/2065 गुरु 21/03/2065 शनि 29/04/2065 बुध 02/06/2065 केतु 16/06/2065 शुक्र 26/07/2065 सूर्य 07/08/2065 चंद्र 27/08/2065	राहु 28/11/2065 गुरु 19/02/2066 शनि 29/05/2066 बुध 25/08/2066 केतु 30/09/2066 शुक्र 11/01/2067 सूर्य 11/02/2067 चंद्र 04/04/2067 मंगल 10/05/2067

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 10/05/2067 12/11/2068	बुध - शनि 12/11/2068 30/08/2070	केतु - केतु 30/08/2070 07/12/2070	केतु - शुक्र 07/12/2070 17/09/2071	केतु - सूर्य 17/09/2071 11/12/2071
गुरु 23/07/2067 शनि 18/10/2067 बुध 04/01/2068 केतु 06/02/2068 शुक्र 08/05/2068 सूर्य 04/06/2068 चंद्र 20/07/2068 मंगल 21/08/2068 राहु 12/11/2068	शनि 24/02/2069 बुध 28/05/2069 केतु 05/07/2069 शुक्र 22/10/2069 सूर्य 24/11/2069 चंद्र 18/01/2070 मंगल 25/02/2070 राहु 03/06/2070 गुरु 30/08/2070	केतु 04/09/2070 शुक्र 21/09/2070 सूर्य 26/09/2070 चंद्र 04/10/2070 मंगल 10/10/2070 राहु 25/10/2070 गुरु 07/11/2070 शनि 23/11/2070 बुध 07/12/2070	शुक्र 23/01/2071 सूर्य 07/02/2071 चंद्र 02/03/2071 मंगल 19/03/2071 राहु 30/04/2071 गुरु 07/06/2071 शनि 22/07/2071 बुध 01/09/2071 केतु 17/09/2071	सूर्य 21/09/2071 चंद्र 28/09/2071 मंगल 03/10/2071 राहु 16/10/2071 गुरु 28/10/2071 शनि 10/11/2071 बुध 22/11/2071 केतु 27/11/2071 शुक्र 11/12/2071
केतु - चंद्र 11/12/2071 01/05/2072	केतु - मंगल 01/05/2072 09/08/2072	केतु - राहु 09/08/2072 21/04/2073	केतु - गुरु 21/04/2073 05/12/2073	केतु - शनि 05/12/2073 01/09/2074
चंद्र 23/12/2071 मंगल 31/12/2071 राहु 22/01/2072 गुरु 10/02/2072 शनि 03/03/2072 बुध 23/03/2072 केतु 01/04/2072 शुक्र 24/04/2072 सूर्य 01/05/2072	मंगल 07/05/2072 राहु 22/05/2072 गुरु 04/06/2072 शनि 20/06/2072 बुध 04/07/2072 केतु 10/07/2072 शुक्र 27/07/2072 सूर्य 31/07/2072 चंद्र 09/08/2072	राहु 16/09/2072 गुरु 20/10/2072 शनि 30/11/2072 बुध 05/01/2073 केतु 20/01/2073 शुक्र 03/03/2073 सूर्य 16/03/2073 चंद्र 07/04/2073 मंगल 21/04/2073	गुरु 22/05/2073 शनि 27/06/2073 बुध 29/07/2073 केतु 11/08/2073 शुक्र 18/09/2073 सूर्य 29/09/2073 चंद्र 18/10/2073 मंगल 01/11/2073 राहु 05/12/2073	शनि 16/01/2074 बुध 24/02/2074 केतु 11/03/2074 शुक्र 25/04/2074 सूर्य 09/05/2074 चंद्र 31/05/2074 मंगल 16/06/2074 राहु 27/07/2074 गुरु 01/09/2074
केतु - बुध 01/09/2074 30/04/2075	शुक्र - शुक्र 30/04/2075 20/07/2077	शुक्र - सूर्य 20/07/2077 20/03/2078	शुक्र - चंद्र 20/03/2078 30/04/2079	शुक्र - मंगल 30/04/2079 08/02/2080
बुध 05/10/2074 केतु 19/10/2074 शुक्र 28/11/2074 सूर्य 10/12/2074 चंद्र 30/12/2074 मंगल 13/01/2075 राहु 19/02/2075 गुरु 23/03/2075 शनि 30/04/2075	शुक्र 12/09/2075 सूर्य 23/10/2075 चंद्र 30/12/2075 मंगल 15/02/2076 राहु 16/06/2076 गुरु 02/10/2076 शनि 07/02/2077 बुध 02/06/2077 केतु 20/07/2077	सूर्य 01/08/2077 चंद्र 21/08/2077 मंगल 04/09/2077 राहु 11/10/2077 गुरु 12/11/2077 शनि 21/12/2077 बुध 24/01/2078 केतु 08/02/2078 शुक्र 20/03/2078	चंद्र 23/04/2078 मंगल 17/05/2078 राहु 17/07/2078 गुरु 09/09/2078 शनि 12/11/2078 बुध 08/01/2079 केतु 01/02/2079 शुक्र 10/04/2079 सूर्य 30/04/2079	मंगल 17/05/2079 राहु 28/06/2079 गुरु 05/08/2079 शनि 19/09/2079 बुध 29/10/2079 केतु 15/11/2079 शुक्र 01/01/2080 सूर्य 15/01/2080 चंद्र 08/02/2080

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 15 वर्ष 5 मास 22 दिन

शुक्र 21 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष	बुध 17 वर्ष
13/11/2008	06/05/2024	07/05/2030	06/05/2045	06/05/2053
06/05/2024	07/05/2030	06/05/2045	06/05/2053	07/05/2070
00/00/0000	सूर्य 05/09/2024	चंद्र 05/06/2032	मंगल 09/12/2045	बुध 09/01/2056
13/11/2008	चंद्र 06/07/2025	मंगल 16/07/2033	बुध 14/03/2047	शनि 06/08/2057
चंद्र 07/07/2011	मंगल 15/12/2025	बुध 26/11/2035	शनि 09/12/2047	गुरु 02/08/2060
मंगल 25/01/2013	बुध 25/11/2026	शनि 16/04/2037	गुरु 06/05/2049	राहु 23/06/2062
बुध 16/05/2016	शनि 16/06/2027	गुरु 06/12/2039	राहु 27/03/2050	शुक्र 12/10/2065
शनि 26/04/2018	गुरु 06/07/2028	राहु 06/08/2041	शुक्र 16/10/2051	सूर्य 22/09/2066
गुरु 05/01/2022	राहु 06/03/2029	शुक्र 06/07/2044	सूर्य 26/03/2052	चंद्र 01/02/2069
राहु 06/05/2024	शुक्र 07/05/2030	सूर्य 06/05/2045	चंद्र 06/05/2053	मंगल 07/05/2070

शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष	राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष
07/05/2070	06/05/2080	07/05/2099	08/05/2111
06/05/2080	07/05/2099	08/05/2111	00/00/0000
शनि 10/04/2071	गुरु 09/09/2083	राहु 06/09/2100	शुक्र 07/06/2115
गुरु 11/01/2073	राहु 19/10/2085	शुक्र 06/01/2103	सूर्य 06/08/2116
राहु 21/02/2074	शुक्र 29/06/2089	सूर्य 07/09/2103	चंद्र 14/11/2116
शुक्र 01/02/2076	सूर्य 20/07/2090	चंद्र 07/05/2105	00/00/0000
सूर्य 22/08/2076	चंद्र 10/03/2093	मंगल 28/03/2106	00/00/0000
चंद्र 12/01/2078	मंगल 06/08/2094	बुध 16/02/2108	00/00/0000
मंगल 09/10/2078	बुध 02/08/2097	शनि 28/03/2109	00/00/0000
बुध 06/05/2080	शनि 07/05/2099	गुरु 08/05/2111	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - बुध	शुक्र - शनि	शुक्र - गुरु
13/11/2008	07/07/2011	25/01/2013	16/05/2016	26/04/2018
07/07/2011	25/01/2013	16/05/2016	26/04/2018	05/01/2022
चंद्र 31/12/2008	मंगल 18/08/2011	बुध 03/08/2013	शनि 21/07/2016	गुरु 20/12/2018
मंगल 20/03/2009	बुध 15/11/2011	शनि 23/11/2013	गुरु 23/11/2016	राहु 19/05/2019
बुध 04/09/2009	शनि 07/01/2012	गुरु 23/06/2014	राहु 10/02/2017	शुक्र 05/02/2020
शनि 12/12/2009	गुरु 16/04/2012	राहु 04/11/2014	शुक्र 28/06/2017	सूर्य 20/04/2020
गुरु 17/06/2010	राहु 18/06/2012	शुक्र 27/06/2015	सूर्य 06/08/2017	चंद्र 24/10/2020
राहु 13/10/2010	शुक्र 06/10/2012	सूर्य 02/09/2015	चंद्र 13/11/2017	मंगल 01/02/2021
शुक्र 08/05/2011	सूर्य 07/11/2012	चंद्र 17/02/2016	मंगल 05/01/2018	बुध 02/09/2021
सूर्य 07/07/2011	चंद्र 25/01/2013	मंगल 16/05/2016	बुध 26/04/2018	शनि 05/01/2022
शुक्र - राहु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - बुध
05/01/2022	06/05/2024	05/09/2024	06/07/2025	15/12/2025
06/05/2024	05/09/2024	06/07/2025	15/12/2025	25/11/2026
राहु 09/04/2022	सूर्य 13/05/2024	चंद्र 17/10/2024	मंगल 18/07/2025	बुध 08/02/2026
शुक्र 22/09/2022	चंद्र 30/05/2024	मंगल 09/11/2024	बुध 13/08/2025	शनि 12/03/2026
सूर्य 09/11/2022	मंगल 08/06/2024	बुध 27/12/2024	शनि 28/08/2025	गुरु 11/05/2026
चंद्र 07/03/2023	बुध 27/06/2024	शनि 24/01/2025	गुरु 25/09/2025	राहु 19/06/2026
मंगल 09/05/2023	शनि 08/07/2024	गुरु 18/03/2025	राहु 13/10/2025	शुक्र 25/08/2026
बुध 20/09/2023	गुरु 30/07/2024	राहु 21/04/2025	शुक्र 14/11/2025	सूर्य 13/09/2026
शनि 08/12/2023	राहु 12/08/2024	शुक्र 19/06/2025	सूर्य 23/11/2025	चंद्र 31/10/2026
गुरु 06/05/2024	शुक्र 05/09/2024	सूर्य 06/07/2025	चंद्र 15/12/2025	मंगल 25/11/2026
सूर्य - शनि	सूर्य - गुरु	सूर्य - राहु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
25/11/2026	16/06/2027	06/07/2028	06/03/2029	07/05/2030
16/06/2027	06/07/2028	06/03/2029	07/05/2030	05/06/2032
शनि 14/12/2026	गुरु 23/08/2027	राहु 02/08/2028	शुक्र 28/05/2029	चंद्र 20/08/2030
गुरु 19/01/2027	राहु 05/10/2027	शुक्र 18/09/2028	सूर्य 21/06/2029	मंगल 16/10/2030
राहु 10/02/2027	शुक्र 19/12/2027	सूर्य 02/10/2028	चंद्र 19/08/2029	बुध 12/02/2031
शुक्र 22/03/2027	सूर्य 09/01/2028	चंद्र 05/11/2028	मंगल 20/09/2029	शनि 24/04/2031
सूर्य 02/04/2027	चंद्र 03/03/2028	मंगल 23/11/2028	बुध 26/11/2029	गुरु 05/09/2031
चंद्र 30/04/2027	मंगल 01/04/2028	बुध 31/12/2028	शनि 04/01/2030	राहु 28/11/2031
मंगल 15/05/2027	बुध 31/05/2028	शनि 23/01/2029	गुरु 20/03/2030	शुक्र 24/04/2032
बुध 16/06/2027	शनि 06/07/2028	गुरु 06/03/2029	राहु 07/05/2030	सूर्य 05/06/2032



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल	चंद्र - बुध	चंद्र - शनि	चंद्र - गुरु	चंद्र - राहु
05/06/2032	16/07/2033	26/11/2035	16/04/2037	06/12/2039
16/07/2033	26/11/2035	16/04/2037	06/12/2039	06/08/2041
मंगल 06/07/2032	बुध 29/11/2033	शनि 12/01/2036	गुरु 03/10/2037	राहु 11/02/2040
बुध 07/09/2032	शनि 17/02/2034	गुरु 10/04/2036	राहु 18/01/2038	शुक्र 09/06/2040
शनि 15/10/2032	गुरु 19/07/2034	राहु 05/06/2036	शुक्र 24/07/2038	सूर्य 13/07/2040
गुरु 25/12/2032	राहु 22/10/2034	शुक्र 12/09/2036	सूर्य 16/09/2038	चंद्र 05/10/2040
राहु 08/02/2033	शुक्र 08/04/2035	सूर्य 10/10/2036	चंद्र 27/01/2039	मंगल 19/11/2040
शुक्र 28/04/2033	सूर्य 26/05/2035	चंद्र 20/12/2036	मंगल 09/04/2039	बुध 23/02/2041
सूर्य 21/05/2033	चंद्र 23/09/2035	मंगल 26/01/2037	बुध 08/09/2039	शनि 21/04/2041
चंद्र 16/07/2033	मंगल 26/11/2035	बुध 16/04/2037	शनि 06/12/2039	गुरु 06/08/2041
चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - बुध	मंगल - शनि
06/08/2041	06/07/2044	06/05/2045	09/12/2045	14/03/2047
06/07/2044	06/05/2045	09/12/2045	14/03/2047	09/12/2047
शुक्र 01/03/2042	सूर्य 23/07/2044	मंगल 22/05/2045	बुध 19/02/2046	शनि 08/04/2047
सूर्य 29/04/2042	चंद्र 03/09/2044	बुध 25/06/2045	शनि 03/04/2046	गुरु 25/05/2047
चंद्र 24/09/2042	मंगल 26/09/2044	शनि 15/07/2045	गुरु 23/06/2046	राहु 24/06/2047
मंगल 12/12/2042	बुध 13/11/2044	गुरु 23/08/2045	राहु 13/08/2046	शुक्र 16/08/2047
बुध 28/05/2043	शनि 11/12/2044	राहु 16/09/2045	शुक्र 10/11/2046	सूर्य 31/08/2047
शनि 04/09/2043	गुरु 02/02/2045	शुक्र 28/10/2045	सूर्य 06/12/2046	चंद्र 08/10/2047
गुरु 10/03/2044	राहु 08/03/2045	सूर्य 09/11/2045	चंद्र 08/02/2047	मंगल 28/10/2047
राहु 06/07/2044	शुक्र 06/05/2045	चंद्र 09/12/2045	मंगल 14/03/2047	बुध 09/12/2047
मंगल - गुरु	मंगल - राहु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र
09/12/2047	06/05/2049	27/03/2050	16/10/2051	26/03/2052
06/05/2049	27/03/2050	16/10/2051	26/03/2052	06/05/2053
गुरु 09/03/2048	राहु 11/06/2049	शुक्र 15/07/2050	सूर्य 25/10/2051	चंद्र 22/05/2052
राहु 05/05/2048	शुक्र 13/08/2049	सूर्य 16/08/2050	चंद्र 17/11/2051	मंगल 21/06/2052
शुक्र 13/08/2048	सूर्य 01/09/2049	चंद्र 03/11/2050	मंगल 29/11/2051	बुध 24/08/2052
सूर्य 10/09/2048	चंद्र 16/10/2049	मंगल 15/12/2050	बुध 24/12/2051	शनि 30/09/2052
चंद्र 21/11/2048	मंगल 09/11/2049	बुध 14/03/2051	शनि 08/01/2052	गुरु 11/12/2052
मंगल 29/12/2048	बुध 30/12/2049	शनि 06/05/2051	गुरु 06/02/2052	राहु 25/01/2053
बुध 20/03/2049	शनि 29/01/2050	गुरु 14/08/2051	राहु 24/02/2052	शुक्र 14/04/2053
शनि 06/05/2049	गुरु 27/03/2050	राहु 16/10/2051	शुक्र 26/03/2052	सूर्य 06/05/2053

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध 06/05/2053 09/01/2056	बुध - शनि 09/01/2056 06/08/2057	बुध - गुरु 06/08/2057 02/08/2060	बुध - राहु 02/08/2060 23/06/2062	बुध - शुक्र 23/06/2062 12/10/2065
बुध 07/10/2053 शनि 06/01/2054 गुरु 27/06/2054 राहु 13/10/2054 शुक्र 21/04/2055 सूर्य 15/06/2055 चंद्र 28/10/2055 मंगल 09/01/2056	शनि 02/03/2056 गुरु 11/06/2056 राहु 14/08/2056 शुक्र 04/12/2056 सूर्य 05/01/2057 चंद्र 26/03/2057 मंगल 07/05/2057 बुध 06/08/2057	गुरु 14/02/2058 राहु 15/06/2058 शुक्र 14/01/2059 सूर्य 15/03/2059 चंद्र 14/08/2059 मंगल 03/11/2059 बुध 23/04/2060 शनि 02/08/2060	राहु 18/10/2060 शुक्र 01/03/2061 सूर्य 08/04/2061 चंद्र 13/07/2061 मंगल 02/09/2061 बुध 20/12/2061 शनि 22/02/2062 गुरु 23/06/2062	शुक्र 13/02/2063 सूर्य 21/04/2063 चंद्र 05/10/2063 मंगल 03/01/2064 बुध 11/07/2064 शनि 31/10/2064 गुरु 31/05/2065 राहु 12/10/2065
बुध - सूर्य 12/10/2065 22/09/2066	बुध - चंद्र 22/09/2066 01/02/2069	बुध - मंगल 01/02/2069 07/05/2070	शनि - शनि 07/05/2070 10/04/2071	शनि - गुरु 10/04/2071 11/01/2073
सूर्य 31/10/2065 चंद्र 18/12/2065 मंगल 13/01/2066 बुध 08/03/2066 शनि 09/04/2066 गुरु 09/06/2066 राहु 17/07/2066 शुक्र 22/09/2066	चंद्र 20/01/2067 मंगल 25/03/2067 बुध 08/08/2067 शनि 26/10/2067 गुरु 26/03/2068 राहु 30/06/2068 शुक्र 15/12/2068 सूर्य 01/02/2069	मंगल 07/03/2069 बुध 18/05/2069 शनि 30/06/2069 गुरु 19/09/2069 राहु 09/11/2069 शुक्र 06/02/2070 सूर्य 04/03/2070 चंद्र 07/05/2070	शनि 07/06/2070 गुरु 05/08/2070 राहु 12/09/2070 शुक्र 17/11/2070 सूर्य 05/12/2070 चंद्र 21/01/2071 मंगल 15/02/2071 बुध 10/04/2071	गुरु 01/08/2071 राहु 11/10/2071 शुक्र 13/02/2072 सूर्य 20/03/2072 चंद्र 17/06/2072 मंगल 04/08/2072 बुध 13/11/2072 शनि 11/01/2073
शनि - राहु 11/01/2073 21/02/2074	शनि - शुक्र 21/02/2074 01/02/2076	शनि - सूर्य 01/02/2076 22/08/2076	शनि - चंद्र 22/08/2076 12/01/2078	शनि - मंगल 12/01/2078 09/10/2078
राहु 25/02/2073 शुक्र 15/05/2073 सूर्य 07/06/2073 चंद्र 02/08/2073 मंगल 01/09/2073 बुध 04/11/2073 शनि 12/12/2073 गुरु 21/02/2074	शुक्र 09/07/2074 सूर्य 18/08/2074 चंद्र 24/11/2074 मंगल 16/01/2075 बुध 08/05/2075 शनि 12/07/2075 गुरु 14/11/2075 राहु 01/02/2076	सूर्य 13/02/2076 चंद्र 12/03/2076 मंगल 27/03/2076 बुध 28/04/2076 शनि 17/05/2076 गुरु 21/06/2076 राहु 14/07/2076 शुक्र 22/08/2076	चंद्र 01/11/2076 मंगल 08/12/2076 बुध 26/02/2077 शनि 14/04/2077 गुरु 12/07/2077 राहु 07/09/2077 शुक्र 14/12/2077 सूर्य 12/01/2078	मंगल 01/02/2078 बुध 15/03/2078 शनि 09/04/2078 गुरु 27/05/2078 राहु 26/06/2078 शुक्र 17/08/2078 सूर्य 02/09/2078 चंद्र 09/10/2078

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 09/10/2078 06/05/2080	गुरु - गुरु 06/05/2080 09/09/2083	गुरु - राहु 09/09/2083 19/10/2085	गुरु - शुक्र 19/10/2085 29/06/2089	गुरु - सूर्य 29/06/2089 20/07/2090
बुध 08/01/2079 शनि 02/03/2079 गुरु 11/06/2079 राहु 14/08/2079 शुक्र 04/12/2079 सूर्य 05/01/2080 चंद्र 24/03/2080 मंगल 06/05/2080	गुरु 07/12/2080 राहु 21/04/2081 शुक्र 15/12/2081 सूर्य 21/02/2082 चंद्र 09/08/2082 मंगल 08/11/2082 बुध 19/05/2083 शनि 09/09/2083	राहु 04/12/2083 शुक्र 02/05/2084 सूर्य 13/06/2084 चंद्र 28/09/2084 मंगल 25/11/2084 बुध 26/03/2085 शनि 05/06/2085 गुरु 19/10/2085	शुक्र 08/07/2086 सूर्य 21/09/2086 चंद्र 28/03/2087 मंगल 06/07/2087 बुध 03/02/2088 शनि 07/06/2088 गुरु 30/01/2089 राहु 29/06/2089	सूर्य 21/07/2089 चंद्र 12/09/2089 मंगल 11/10/2089 बुध 11/12/2089 शनि 15/01/2090 गुरु 24/03/2090 राहु 06/05/2090 शुक्र 20/07/2090
गुरु - चंद्र 20/07/2090 10/03/2093	गुरु - मंगल 10/03/2093 06/08/2094	गुरु - बुध 06/08/2094 02/08/2097	गुरु - शनि 02/08/2097 07/05/2099	राहु - राहु 07/05/2099 06/09/2100
चंद्र 01/12/2090 मंगल 10/02/2091 बुध 12/07/2091 शनि 09/10/2091 गुरु 27/03/2092 राहु 12/07/2092 शुक्र 15/01/2093 सूर्य 10/03/2093	मंगल 17/04/2093 बुध 07/07/2093 शनि 23/08/2093 गुरु 22/11/2093 राहु 18/01/2094 शुक्र 28/04/2094 सूर्य 26/05/2094 चंद्र 06/08/2094	बुध 25/01/2095 शनि 06/05/2095 गुरु 14/11/2095 राहु 14/03/2096 शुक्र 13/10/2096 सूर्य 13/12/2096 चंद्र 13/05/2097 मंगल 02/08/2097	शनि 01/10/2097 गुरु 22/01/2098 राहु 03/04/2098 शुक्र 06/08/2098 सूर्य 11/09/2098 चंद्र 09/12/2098 मंगल 26/01/2099 बुध 07/05/2099	राहु 30/06/2099 शुक्र 03/10/2099 सूर्य 30/10/2099 चंद्र 05/01/2100 मंगल 10/02/2100 बुध 28/04/2100 शनि 12/06/2100 गुरु 06/09/2100
राहु - शुक्र 06/09/2100 06/01/2103	राहु - सूर्य 06/01/2103 07/09/2103	राहु - चंद्र 07/09/2103 07/05/2105	राहु - मंगल 07/05/2105 28/03/2106	राहु - बुध 28/03/2106 16/02/2108
शुक्र 18/02/2101 सूर्य 07/04/2101 चंद्र 03/08/2101 मंगल 05/10/2101 बुध 16/02/2102 शनि 06/05/2102 गुरु 03/10/2102 राहु 06/01/2103	सूर्य 20/01/2103 चंद्र 22/02/2103 मंगल 12/03/2103 बुध 20/04/2103 शनि 12/05/2103 गुरु 24/06/2103 राहु 21/07/2103 शुक्र 07/09/2103	चंद्र 30/11/2103 मंगल 14/01/2104 बुध 19/04/2104 शनि 14/06/2104 गुरु 29/09/2104 राहु 06/12/2104 शुक्र 03/04/2105 सूर्य 07/05/2105	मंगल 31/05/2105 बुध 21/07/2105 शनि 21/08/2105 गुरु 17/10/2105 राहु 22/11/2105 शुक्र 24/01/2106 सूर्य 11/02/2106 चंद्र 28/03/2106	बुध 15/07/2106 शनि 16/09/2106 गुरु 16/01/2107 राहु 02/04/2107 शुक्र 15/08/2107 सूर्य 22/09/2107 चंद्र 27/12/2107 मंगल 16/02/2108

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 5 वर्ष 8 मास 7 दिन

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
13/11/2008	23/07/2014	22/07/2021	22/07/2029	23/07/2030
23/07/2014	22/07/2021	22/07/2029	23/07/2030	22/07/2032
उल्क 22/07/2009	सिद्ध 02/12/2015	संक 03/05/2023	मंग 02/08/2029	पिंग 01/09/2030
सिद्ध 21/09/2010	संक 22/06/2017	मंग 23/07/2023	पिंग 22/08/2029	धांय 01/11/2030
संक 21/01/2012	मंग 01/09/2017	पिंग 01/01/2024	धांय 21/09/2029	भ्राम 21/01/2031
मंग 22/03/2012	पिंग 21/01/2018	धांय 01/09/2024	भ्राम 01/11/2029	भद्रि 03/05/2031
पिंग 22/07/2012	धांय 22/08/2018	भ्राम 22/07/2025	भद्रि 22/12/2029	उल्क 01/09/2031
धांय 21/01/2013	भ्राम 02/06/2019	भद्रि 01/09/2026	उल्क 20/02/2030	सिद्ध 21/01/2032
भ्राम 21/09/2013	भद्रि 22/05/2020	उल्क 01/01/2028	सिद्ध 02/05/2030	संक 02/07/2032
भद्रि 23/07/2014	उल्क 22/07/2021	सिद्ध 22/07/2029	संक 23/07/2030	मंग 22/07/2032

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
22/07/2032	23/07/2035	23/07/2039	22/07/2044	23/07/2050
23/07/2035	23/07/2039	22/07/2044	23/07/2050	22/07/2057
धांय 21/10/2032	भ्राम 01/01/2036	भद्रि 02/04/2040	उल्क 22/07/2045	सिद्ध 02/12/2051
भ्राम 20/02/2033	भद्रि 22/07/2036	उल्क 31/01/2041	सिद्ध 21/09/2046	संक 22/06/2053
भद्रि 22/07/2033	उल्क 23/03/2037	सिद्ध 21/01/2042	संक 21/01/2048	मंग 01/09/2053
उल्क 21/01/2034	सिद्ध 01/01/2038	संक 03/03/2043	मंग 22/03/2048	पिंग 21/01/2054
सिद्ध 22/08/2034	संक 21/11/2038	मंग 23/04/2043	पिंग 22/07/2048	धांय 22/08/2054
संक 23/04/2035	मंग 01/01/2039	पिंग 02/08/2043	धांय 21/01/2049	भ्राम 02/06/2055
मंग 23/05/2035	पिंग 23/03/2039	धांय 01/01/2044	भ्राम 21/09/2049	भद्रि 22/05/2056
पिंग 23/07/2035	धांय 23/07/2039	भ्राम 22/07/2044	भद्रि 23/07/2050	उल्क 22/07/2057

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
22/07/2057	22/07/2065	23/07/2066	22/07/2068	23/07/2071
22/07/2065	23/07/2066	22/07/2068	23/07/2071	23/07/2075
संक 03/05/2059	मंग 02/08/2065	पिंग 01/09/2066	धांय 21/10/2068	भाम 01/01/2072
मंग 23/07/2059	पिंग 22/08/2065	धांय 01/11/2066	भाम 20/02/2069	भद्रि 22/07/2072
पिंग 01/01/2060	धांय 21/09/2065	भाम 21/01/2067	भद्रि 22/07/2069	उल्क 23/03/2073
धांय 01/09/2060	भाम 01/11/2065	भद्रि 03/05/2067	उल्क 21/01/2070	सिद्ध 01/01/2074
भाम 22/07/2061	भद्रि 22/12/2065	उल्क 01/09/2067	सिद्ध 22/08/2070	संक 21/11/2074
भद्रि 01/09/2062	उल्क 20/02/2066	सिद्ध 21/01/2068	संक 23/04/2071	मंग 01/01/2075
उल्क 01/01/2064	सिद्ध 02/05/2066	संक 02/07/2068	मंग 23/05/2071	पिंग 23/03/2075
सिद्ध 22/07/2065	संक 23/07/2066	मंग 22/07/2068	पिंग 23/07/2071	धांय 23/07/2075
भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
23/07/2075	22/07/2080	23/07/2086	22/07/2093	23/07/2101
22/07/2080	23/07/2086	22/07/2093	23/07/2101	24/07/2102
भद्रि 02/04/2076	उल्क 22/07/2081	सिद्ध 02/12/2087	संक 03/05/2095	मंग 03/08/2101
उल्क 31/01/2077	सिद्ध 21/09/2082	संक 22/06/2089	मंग 23/07/2095	पिंग 23/08/2101
सिद्ध 21/01/2078	संक 21/01/2084	मंग 01/09/2089	पिंग 01/01/2096	धांय 22/09/2101
संक 03/03/2079	मंग 22/03/2084	पिंग 21/01/2090	धांय 01/09/2096	भाम 02/11/2101
मंग 23/04/2079	पिंग 22/07/2084	धांय 22/08/2090	भाम 22/07/2097	भद्रि 23/12/2101
पिंग 02/08/2079	धांय 21/01/2085	भाम 02/06/2091	भद्रि 01/09/2098	उल्क 21/02/2102
धांय 01/01/2080	भाम 21/09/2085	भद्रि 22/05/2092	उल्क 01/01/2100	सिद्ध 03/05/2102
भाम 22/07/2080	भद्रि 23/07/2086	उल्क 22/07/2093	सिद्ध 23/07/2101	संक 24/07/2102
पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
24/07/2102	23/07/2104	24/07/2107	24/07/2111	23/07/2116
23/07/2104	24/07/2107	24/07/2111	23/07/2116	00/00/0000
पिंग 02/09/2102	धांय 22/10/2104	भाम 02/01/2108	भद्रि 03/04/2112	उल्क 14/11/2116
धांय 02/11/2102	भाम 21/02/2105	भद्रि 23/07/2108	उल्क 01/02/2113	00/00/0000
भाम 22/01/2103	भद्रि 23/07/2105	उल्क 24/03/2109	सिद्ध 22/01/2114	00/00/0000
भद्रि 04/05/2103	उल्क 22/01/2106	सिद्ध 02/01/2110	संक 04/03/2115	00/00/0000
उल्क 02/09/2103	सिद्ध 23/08/2106	संक 22/11/2110	मंग 24/04/2115	00/00/0000
सिद्ध 22/01/2104	संक 24/04/2107	मंग 02/01/2111	पिंग 03/08/2115	00/00/0000
संक 03/07/2104	मंग 24/05/2107	पिंग 24/03/2111	धांय 02/01/2116	00/00/0000
मंग 23/07/2104	पिंग 24/07/2107	धांय 24/07/2111	भाम 23/07/2116	00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - भद्रि	संक - उत्क	संक - सिद्ध	मंग - मंग	मंग - पिंग
22/07/2025	01/09/2026	01/01/2028	22/07/2029	02/08/2029
01/09/2026	01/01/2028	22/07/2029	02/08/2029	22/08/2029
भद्रि 17/09/2025	उत्क 21/11/2026	सिद्ध 21/04/2028	मंग 23/07/2029	पिंग 03/08/2029
उत्क 23/11/2025	सिद्ध 24/02/2027	संक 25/08/2028	पिंग 23/07/2029	धांय 04/08/2029
सिद्ध 10/02/2026	संक 12/06/2027	मंग 10/09/2028	धांय 24/07/2029	भ्राम 07/08/2029
संक 11/05/2026	मंग 26/06/2027	पिंग 11/10/2028	भ्राम 25/07/2029	भद्रि 09/08/2029
मंग 23/05/2026	पिंग 23/07/2027	धांय 28/11/2028	भद्रि 27/07/2029	उत्क 13/08/2029
पिंग 14/06/2026	धांय 01/09/2027	भ्राम 30/01/2029	उत्क 28/07/2029	सिद्ध 17/08/2029
धांय 18/07/2026	भ्राम 26/10/2027	भद्रि 19/04/2029	सिद्ध 30/07/2029	संक 21/08/2029
भ्राम 01/09/2026	भद्रि 01/01/2028	उत्क 22/07/2029	संक 02/08/2029	मंग 22/08/2029
मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि	मंग - उत्क	मंग - सिद्ध
22/08/2029	21/09/2029	01/11/2029	22/12/2029	20/02/2030
21/09/2029	01/11/2029	22/12/2029	20/02/2030	02/05/2030
धांय 24/08/2029	भ्राम 26/09/2029	भद्रि 08/11/2029	उत्क 01/01/2030	सिद्ध 06/03/2030
भ्राम 28/08/2029	भद्रि 01/10/2029	उत्क 16/11/2029	सिद्ध 13/01/2030	संक 22/03/2030
भद्रि 01/09/2029	उत्क 08/10/2029	सिद्ध 26/11/2029	संक 26/01/2030	मंग 24/03/2030
उत्क 06/09/2029	सिद्ध 16/10/2029	संक 07/12/2029	मंग 28/01/2030	पिंग 28/03/2030
सिद्ध 12/09/2029	संक 25/10/2029	मंग 09/12/2029	पिंग 31/01/2030	धांय 03/04/2030
संक 19/09/2029	मंग 26/10/2029	पिंग 12/12/2029	धांय 05/02/2030	भ्राम 11/04/2030
मंग 20/09/2029	पिंग 28/10/2029	धांय 16/12/2029	भ्राम 12/02/2030	भद्रि 21/04/2030
पिंग 21/09/2029	धांय 01/11/2029	भ्राम 22/12/2029	भद्रि 20/02/2030	उत्क 02/05/2030
मंग - संक	पिंग - पिंग	पिंग - धांय	पिंग - भ्राम	पिंग - भद्रि
02/05/2030	23/07/2030	01/09/2030	01/11/2030	21/01/2031
23/07/2030	01/09/2030	01/11/2030	21/01/2031	03/05/2031
संक 20/05/2030	पिंग 25/07/2030	धांय 06/09/2030	भ्राम 10/11/2030	भद्रि 04/02/2031
मंग 23/05/2030	धांय 28/07/2030	भ्राम 13/09/2030	भद्रि 21/11/2030	उत्क 21/02/2031
पिंग 27/05/2030	भ्राम 02/08/2030	भद्रि 21/09/2030	उत्क 05/12/2030	सिद्ध 13/03/2031
धांय 03/06/2030	भद्रि 07/08/2030	उत्क 02/10/2030	सिद्ध 21/12/2030	संक 05/04/2031
भ्राम 12/06/2030	उत्क 14/08/2030	सिद्ध 13/10/2030	संक 08/01/2031	मंग 07/04/2031
भद्रि 23/06/2030	सिद्ध 22/08/2030	संक 27/10/2030	मंग 10/01/2031	पिंग 13/04/2031
उत्क 07/07/2030	संक 31/08/2030	मंग 29/10/2030	पिंग 14/01/2031	धांय 21/04/2031
सिद्ध 23/07/2030	मंग 01/09/2030	पिंग 01/11/2030	धांय 21/01/2031	भ्राम 03/05/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक	पिंग - मंग	धांय - धांय
03/05/2031	01/09/2031	21/01/2032	02/07/2032	22/07/2032
01/09/2031	21/01/2032	02/07/2032	22/07/2032	21/10/2032
उल्क 23/05/2031	सिद्ध 29/09/2031	संक 27/02/2032	मंग 02/07/2032	धांय 30/07/2032
सिद्ध 16/06/2031	संक 31/10/2031	मंग 02/03/2032	पिंग 04/07/2032	भ्राम 09/08/2032
संक 13/07/2031	मंग 04/11/2031	पिंग 11/03/2032	धांय 05/07/2032	भद्रि 22/08/2032
मंग 16/07/2031	पिंग 11/11/2031	धांय 25/03/2032	भ्राम 07/07/2032	उल्क 06/09/2032
पिंग 23/07/2031	धांय 23/11/2031	भ्राम 12/04/2032	भद्रि 10/07/2032	सिद्ध 24/09/2032
धांय 02/08/2031	भ्राम 09/12/2031	भद्रि 04/05/2032	उल्क 14/07/2032	संक 14/10/2032
भ्राम 16/08/2031	भद्रि 29/12/2031	उल्क 31/05/2032	सिद्ध 18/07/2032	मंग 16/10/2032
भद्रि 01/09/2031	उल्क 21/01/2032	सिद्ध 02/07/2032	संक 22/07/2032	पिंग 21/10/2032
धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उल्क	धांय - सिद्ध	धांय - संक
21/10/2032	20/02/2033	22/07/2033	21/01/2034	22/08/2034
20/02/2033	22/07/2033	21/01/2034	22/08/2034	23/04/2035
भ्राम 04/11/2032	भद्रि 13/03/2033	उल्क 22/08/2033	सिद्ध 03/03/2034	संक 15/10/2034
भद्रि 21/11/2032	उल्क 08/04/2033	सिद्ध 26/09/2033	संक 20/04/2034	मंग 22/10/2034
उल्क 11/12/2032	सिद्ध 07/05/2033	संक 06/11/2033	मंग 26/04/2034	पिंग 04/11/2034
सिद्ध 04/01/2033	संक 10/06/2033	मंग 11/11/2033	पिंग 08/05/2034	धांय 25/11/2034
संक 31/01/2033	मंग 14/06/2033	पिंग 21/11/2033	धांय 25/05/2034	भ्राम 22/12/2034
मंग 03/02/2033	पिंग 23/06/2033	धांय 06/12/2033	भ्राम 18/06/2034	भद्रि 25/01/2035
पिंग 10/02/2033	धांय 05/07/2033	भ्राम 27/12/2033	भद्रि 18/07/2034	उल्क 06/03/2035
धांय 20/02/2033	भ्राम 22/07/2033	भद्रि 21/01/2034	उल्क 22/08/2034	सिद्ध 23/04/2035
धांय - मंग	धांय - पिंग	भ्राम - भ्राम	भ्राम - भद्रि	भ्राम - उल्क
23/04/2035	23/05/2035	23/07/2035	01/01/2036	22/07/2036
23/05/2035	23/07/2035	01/01/2036	22/07/2036	23/03/2037
मंग 23/04/2035	पिंग 26/05/2035	भ्राम 10/08/2035	भद्रि 29/01/2036	उल्क 01/09/2036
पिंग 25/04/2035	धांय 31/05/2035	भद्रि 01/09/2035	उल्क 03/03/2036	सिद्ध 18/10/2036
धांय 28/04/2035	भ्राम 07/06/2035	उल्क 29/09/2035	सिद्ध 12/04/2036	संक 11/12/2036
भ्राम 01/05/2035	भद्रि 16/06/2035	सिद्ध 30/10/2035	संक 27/05/2036	मंग 18/12/2036
भद्रि 05/05/2035	उल्क 26/06/2035	संक 05/12/2035	मंग 01/06/2036	पिंग 31/12/2036
उल्क 10/05/2035	सिद्ध 08/07/2035	मंग 10/12/2035	पिंग 13/06/2036	धांय 21/01/2037
सिद्ध 16/05/2035	संक 21/07/2035	पिंग 19/12/2035	धांय 30/06/2036	भ्राम 17/02/2037
संक 23/05/2035	मंग 23/07/2035	धांय 01/01/2036	भ्राम 22/07/2036	भद्रि 23/03/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 2 वर्ष 2 मास 16 दिन

कुल दशाकाल : 100 वर्ष

तिथि : कृतिका - 1 सव्य

देह : मेष जीव : धनु

वृष 16 वर्ष	मिथुन 9 वर्ष	कर्क 21 वर्ष	सिंह 5 वर्ष	कन्या 9 वर्ष
13/11/2008	30/01/2011	31/01/2020	30/01/2041	30/01/2046
30/01/2011	31/01/2020	30/01/2041	30/01/2046	30/01/2055
00/00/0000	मिथु 22/11/2011	कर्क 28/06/2024	सिंह 01/05/2041	कन्या 22/11/2046
00/00/0000	कर्क 12/10/2013	सिंह 17/07/2025	कन्या 12/10/2041	तुला 01/05/2048
00/00/0000	सिंह 26/03/2014	कन्या 07/06/2027	तुला 01/08/2042	वृश्चि 17/12/2048
00/00/0000	कन्या 16/01/2015	तुला 16/10/2030	वृश्चि 07/12/2042	धनु 11/11/2049
00/00/0000	तुला 25/06/2016	वृश्चि 05/04/2032	धनु 07/06/2043	मेघ 29/06/2050
00/00/0000	वृश्चि 10/02/2017	धनु 12/05/2034	मेघ 13/10/2043	वृष 07/12/2051
13/11/2008	धनु 04/01/2018	मेघ 31/10/2035	वृष 31/07/2044	मिथु 28/09/2052
धनु 17/12/2009	मेघ 23/08/2018	वृष 11/03/2039	मिथु 12/01/2045	कर्क 19/08/2054
मेघ 30/01/2011	वृष 31/01/2020	मिथु 30/01/2041	कर्क 30/01/2046	सिंह 30/01/2055
तुला 16 वर्ष	वृश्चिक 7 वर्ष	धनु 10 वर्ष	मेघ 7 वर्ष	वृष 16 वर्ष
30/01/2055	30/01/2071	30/01/2078	31/01/2088	30/01/2095
30/01/2071	30/01/2078	31/01/2088	30/01/2095	00/00/0000
तुला 22/08/2057	वृश्चि 28/07/2071	धनु 30/01/2079	मेघ 28/07/2088	वृष 22/08/2097
वृश्चि 05/10/2058	धनु 09/04/2072	मेघ 13/10/2079	वृष 10/09/2089	मिथु 30/01/2099
धनु 12/05/2060	मेघ 05/10/2072	वृष 19/05/2081	मिथु 28/04/2090	कर्क 12/06/2102
मेघ 25/06/2061	वृष 18/11/2073	मिथु 13/04/2082	कर्क 17/10/2091	सिंह 31/03/2103
वृष 16/01/2064	मिथु 06/07/2074	कर्क 19/05/2084	सिंह 21/02/2092	कन्या 07/09/2104
मिथु 25/06/2065	कर्क 25/12/2075	सिंह 18/11/2084	कन्या 09/10/2092	तुला 31/03/2107
कर्क 03/11/2068	सिंह 01/05/2076	कन्या 12/10/2085	तुला 22/11/2093	वृश्चि 13/05/2108
सिंह 22/08/2069	कन्या 17/12/2076	तुला 20/05/2087	वृश्चि 20/05/2094	धनु 14/11/2108
कन्या 30/01/2071	तुला 30/01/2078	वृश्चि 31/01/2088	धनु 30/01/2095	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कन्या 17/07/2025 07/06/2027	कर्क - तुला 07/06/2027 16/10/2030	कर्क - वृश्चि 16/10/2030 05/04/2032	कर्क - धनु 05/04/2032 12/05/2034	कर्क - मेष 12/05/2034 31/10/2035
कन्या 17/09/2025 तुला 05/01/2026 वृश्चि 23/02/2026 धनु 03/05/2026 मेघ 20/06/2026 वृष 09/10/2026 मिथु 10/12/2026 कर्क 04/05/2027 सिंह 07/06/2027	तुला 20/12/2027 वृश्चि 15/03/2028 धनु 16/07/2028 मेघ 10/10/2028 वृष 24/04/2029 मिथु 13/08/2029 कर्क 28/04/2030 सिंह 28/06/2030 कन्या 16/10/2030	वृश्चि 23/11/2030 धनु 16/01/2031 मेघ 22/02/2031 वृष 19/05/2031 मिथु 06/07/2031 कर्क 27/10/2031 सिंह 23/11/2031 कन्या 10/01/2032 तुला 05/04/2032	धनु 21/06/2032 मेघ 14/08/2032 वृष 14/12/2032 मिथु 21/02/2033 कर्क 02/08/2033 सिंह 09/09/2033 कन्या 17/11/2033 तुला 20/03/2034 वृश्चि 12/05/2034	मेघ 19/06/2034 वृष 13/09/2034 मिथु 31/10/2034 कर्क 21/02/2035 सिंह 20/03/2035 कन्या 07/05/2035 तुला 01/08/2035 वृश्चि 08/09/2035 धनु 31/10/2035
कर्क - वृष 31/10/2035 11/03/2039	कर्क - मिथु 11/03/2039 30/01/2041	सिंह - सिंह 30/01/2041 01/05/2041	सिंह - कन्या 01/05/2041 12/10/2041	सिंह - तुला 12/10/2041 01/08/2042
वृष 15/05/2036 मिथु 02/09/2036 कर्क 18/05/2037 सिंह 18/07/2037 कन्या 06/11/2037 तुला 21/05/2038 वृश्चि 15/08/2038 धनु 16/12/2038 मेघ 11/03/2039	मिथु 13/05/2039 कर्क 05/10/2039 सिंह 08/11/2039 कन्या 09/01/2040 तुला 29/04/2040 वृश्चि 16/06/2040 धनु 24/08/2040 मेघ 11/10/2040 वृष 30/01/2041	सिंह 03/02/2041 कन्या 12/02/2041 तुला 26/02/2041 वृश्चि 05/03/2041 धनु 14/03/2041 मेघ 20/03/2041 वृष 04/04/2041 मिथु 12/04/2041 कर्क 01/05/2041	कन्या 16/05/2041 तुला 11/06/2041 वृश्चि 23/06/2041 धनु 09/07/2041 मेघ 21/07/2041 वृष 16/08/2041 मिथु 31/08/2041 कर्क 04/10/2041 सिंह 12/10/2041	तुला 28/11/2041 वृश्चि 19/12/2041 धनु 17/01/2042 मेघ 06/02/2042 वृष 25/03/2042 मिथु 20/04/2042 कर्क 21/06/2042 सिंह 05/07/2042 कन्या 01/08/2042
सिंह - वृश्चि 01/08/2042 07/12/2042	सिंह - धनु 07/12/2042 07/06/2043	सिंह - मेष 07/06/2043 13/10/2043	सिंह - वृष 13/10/2043 31/07/2044	सिंह - मिथु 31/07/2044 12/01/2045
वृश्चि 10/08/2042 धनु 22/08/2042 मेघ 31/08/2042 वृष 21/09/2042 मिथु 02/10/2042 कर्क 29/10/2042 सिंह 05/11/2042 कन्या 16/11/2042 तुला 07/12/2042	धनु 25/12/2042 मेघ 07/01/2043 वृष 05/02/2043 मिथु 21/02/2043 कर्क 01/04/2043 सिंह 10/04/2043 कन्या 26/04/2043 तुला 25/05/2043 वृश्चि 07/06/2043	मेघ 16/06/2043 वृष 07/07/2043 मिथु 18/07/2043 कर्क 14/08/2043 सिंह 20/08/2043 कन्या 01/09/2043 तुला 21/09/2043 वृश्चि 30/09/2043 धनु 13/10/2043	वृष 29/11/2043 मिथु 25/12/2043 कर्क 24/02/2044 सिंह 10/03/2044 कन्या 05/04/2044 तुला 22/05/2044 वृश्चि 12/06/2044 धनु 11/07/2044 मेघ 31/07/2044	मिथु 15/08/2044 कर्क 18/09/2044 सिंह 27/09/2044 कन्या 11/10/2044 तुला 07/11/2044 वृश्चि 18/11/2044 धनु 05/12/2044 मेघ 16/12/2044 वृष 12/01/2045

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - कर्क 12/01/2045 30/01/2046	कन्या - कन्या 30/01/2046 22/11/2046	कन्या - तुला 22/11/2046 01/05/2048	कन्या - वृश्चि 01/05/2048 17/12/2048	कन्या - धनु 17/12/2048 11/11/2049
कर्क 02/04/2045 सिंह 21/04/2045 कन्या 26/05/2045 तुला 26/07/2045 वृश्चि 22/08/2045 धनु 29/09/2045 मेष 26/10/2045 वृष 27/12/2045 मिथु 30/01/2046	कन्या 26/02/2046 तुला 14/04/2046 वृश्चि 05/05/2046 धनु 03/06/2046 मेष 24/06/2046 वृष 10/08/2046 मिथु 06/09/2046 कर्क 07/11/2046 सिंह 22/11/2046	तुला 14/02/2047 वृश्चि 23/03/2047 धनु 14/05/2047 मेष 20/06/2047 वृष 12/09/2047 मिथु 30/10/2047 कर्क 17/02/2048 सिंह 15/03/2048 कन्या 01/05/2048	वृश्चि 17/05/2048 धनु 09/06/2048 मेष 25/06/2048 वृष 01/08/2048 मिथु 22/08/2048 कर्क 09/10/2048 सिंह 20/10/2048 कन्या 10/11/2048 तुला 17/12/2048	धनु 19/01/2049 मेष 11/02/2049 वृष 04/04/2049 मिथु 04/05/2049 कर्क 12/07/2049 सिंह 29/07/2049 कन्या 27/08/2049 तुला 19/10/2049 वृश्चि 11/11/2049
कन्या - मेष 11/11/2049 29/06/2050	कन्या - वृष 29/06/2050 07/12/2051	कन्या - मिथु 07/12/2051 28/09/2052	कन्या - कर्क 28/09/2052 19/08/2054	कन्या - सिंह 19/08/2054 30/01/2055
मेष 27/11/2049 वृष 03/01/2050 मिथु 23/01/2050 कर्क 13/03/2050 सिंह 24/03/2050 कन्या 14/04/2050 तुला 21/05/2050 वृश्चि 06/06/2050 धनु 29/06/2050	वृष 21/09/2050 मिथु 07/11/2050 कर्क 26/02/2051 सिंह 24/03/2051 कन्या 10/05/2051 तुला 03/08/2051 वृश्चि 08/09/2051 धनु 31/10/2051 मेष 07/12/2051	मिथु 02/01/2052 कर्क 05/03/2052 सिंह 19/03/2052 कन्या 15/04/2052 तुला 01/06/2052 वृश्चि 22/06/2052 धनु 22/07/2052 मेष 11/08/2052 वृष 28/09/2052	कर्क 20/02/2053 सिंह 26/03/2053 कन्या 27/05/2053 तुला 15/09/2053 वृश्चि 02/11/2053 धनु 10/01/2054 मेष 27/02/2054 वृष 18/06/2054 मिथु 19/08/2054	सिंह 27/08/2054 कन्या 11/09/2054 तुला 07/10/2054 वृश्चि 19/10/2054 धनु 04/11/2054 मेष 16/11/2054 वृष 12/12/2054 मिथु 27/12/2054 कर्क 30/01/2055
तुला - तुला 30/01/2055 22/08/2057	तुला - वृश्चि 22/08/2057 05/10/2058	तुला - धनु 05/10/2058 12/05/2060	तुला - मेष 12/05/2060 25/06/2061	तुला - वृष 25/06/2061 16/01/2064
तुला 29/06/2055 वृश्चि 02/09/2055 धनु 05/12/2055 मेष 08/02/2056 वृष 07/07/2056 मिथु 29/09/2056 कर्क 13/04/2057 सिंह 30/05/2057 कन्या 22/08/2057	वृश्चि 20/09/2057 धनु 31/10/2057 मेष 29/11/2057 वृष 02/02/2058 मिथु 11/03/2058 कर्क 05/06/2058 सिंह 25/06/2058 कन्या 01/08/2058 तुला 05/10/2058	धनु 03/12/2058 मेष 13/01/2059 वृष 16/04/2059 मिथु 08/06/2059 कर्क 09/10/2059 सिंह 07/11/2059 कन्या 29/12/2059 तुला 01/04/2060 वृश्चि 12/05/2060	मेष 09/06/2060 वृष 14/08/2060 मिथु 20/09/2060 कर्क 15/12/2060 सिंह 04/01/2061 कन्या 10/02/2061 तुला 16/04/2061 वृश्चि 15/05/2061 धनु 25/06/2061	वृष 22/11/2061 मिथु 14/02/2062 कर्क 29/08/2062 सिंह 15/10/2062 कन्या 07/01/2063 तुला 06/06/2063 वृश्चि 10/08/2063 धनु 11/11/2063 मेष 16/01/2064



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा

भोग्य दशा काल : मकर 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

मकर 5 वर्ष	
13/11/2008	13/11/2013
धनु	14/04/2009
वृश्चि	13/09/2009
तुला	13/02/2010
कन्या	15/07/2010
सिंह	14/12/2010
कर्क	15/05/2011
मिथु	14/10/2011
वृष	14/03/2012
मेष	14/08/2012
मीन	13/01/2013
कुंभ	14/06/2013
मक	13/11/2013

धनु 12 वर्ष	
13/11/2013	13/11/2025
वृश्चि	13/11/2014
तुला	14/11/2015
कन्या	13/11/2016
सिंह	13/11/2017
कर्क	13/11/2018
मिथु	14/11/2019
वृष	13/11/2020
मेष	13/11/2021
मीन	13/11/2022
कुंभ	14/11/2023
मक	13/11/2024
धनु	13/11/2025

वृश्चिक 8 वर्ष	
13/11/2025	13/11/2033
तुला	15/07/2026
कन्या	15/03/2027
सिंह	14/11/2027
कर्क	14/07/2028
मिथु	15/03/2029
वृष	13/11/2029
मेष	15/07/2030
मीन	15/03/2031
कुंभ	14/11/2031
मक	14/07/2032
धनु	15/03/2033
वृश्चि	13/11/2033

तुला 2 वर्ष	
13/11/2033	14/11/2035
वृश्चि	13/01/2034
धनु	15/03/2034
मक	15/05/2034
कुंभ	15/07/2034
मीन	14/09/2034
मेष	13/11/2034
वृष	13/01/2035
मिथु	15/03/2035
कर्क	15/05/2035
सिंह	15/07/2035
कन्या	14/09/2035
तुला	14/11/2035

कन्या 11 वर्ष	
14/11/2035	13/11/2046
तुला	14/10/2036
वृश्चि	13/09/2037
धनु	14/08/2038
मक	15/07/2039
कुंभ	14/06/2040
मीन	15/05/2041
मेष	14/04/2042
वृष	15/03/2043
मिथु	13/02/2044
कर्क	13/01/2045
सिंह	14/12/2045
कन्या	13/11/2046

सिंह 10 वर्ष	
13/11/2046	13/11/2056
कन्या	14/09/2047
तुला	14/07/2048
वृश्चि	15/05/2049
धनु	15/03/2050
मक	13/01/2051
कुंभ	14/11/2051
मीन	13/09/2052
मेष	14/07/2053
वृष	15/05/2054
मिथु	15/03/2055
कर्क	14/01/2056
सिंह	13/11/2056

कर्क 3 वर्ष	
13/11/2056	14/11/2059
मिथु	12/02/2057
वृष	15/05/2057
मेष	14/08/2057
मीन	13/11/2057
कुंभ	13/02/2058
मक	15/05/2058
धनु	14/08/2058
वृश्चि	13/11/2058
तुला	13/02/2059
कन्या	15/05/2059
सिंह	14/08/2059
कर्क	14/11/2059

मिथुन 4 वर्ष	
14/11/2059	14/11/2063
वृष	14/03/2060
मेष	14/07/2060
मीन	13/11/2060
कुंभ	15/03/2061
मक	14/07/2061
धनु	13/11/2061
वृश्चि	15/03/2062
तुला	15/07/2062
कन्या	13/11/2062
सिंह	15/03/2063
कर्क	15/07/2063
मिथु	14/11/2063

वृष 7 वर्ष	
14/11/2063	13/11/2070
मेष	14/06/2064
मीन	13/01/2065
कुंभ	14/08/2065
मक	15/03/2066
धनु	14/10/2066
वृश्चि	15/05/2067
तुला	14/12/2067
कन्या	14/07/2068
सिंह	12/02/2069
कर्क	13/09/2069
मिथु	14/04/2070
वृष	13/11/2070

मेष 7 वर्ष	
13/11/2070	13/11/2077
वृष	15/06/2071
मिथु	14/01/2072
कर्क	14/08/2072
सिंह	15/03/2073
कन्या	14/10/2073
तुला	15/05/2074
वृश्चि	14/12/2074
धनु	15/07/2075
मक	13/02/2076
कुंभ	13/09/2076
मीन	14/04/2077
मेष	13/11/2077

मीन 3 वर्ष	
13/11/2077	13/11/2080
मेष	13/02/2078
वृष	15/05/2078
मिथु	14/08/2078
कर्क	13/11/2078
सिंह	13/02/2079
कन्या	15/05/2079
तुला	14/08/2079
वृश्चि	14/11/2079
धनु	13/02/2080
मक	14/05/2080
कुंभ	14/08/2080
मीन	13/11/2080

कुम्भ 6 वर्ष	
13/11/2080	13/11/2086
मीन	15/05/2081
मेष	13/11/2081
वृष	15/05/2082
मिथु	13/11/2082
कर्क	15/05/2083
सिंह	14/11/2083
कन्या	14/05/2084
तुला	13/11/2084
वृश्चि	15/05/2085
धनु	13/11/2085
मक	15/05/2086
कुंभ	13/11/2086

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - तुला 13/11/2025 15/07/2026	वृश्चि - कन्या 15/07/2026 15/03/2027	वृश्चि - सिंह 15/03/2027 14/11/2027	वृश्चि - कर्क 14/11/2027 14/07/2028	वृश्चि - मिथु 14/07/2028 15/03/2029
वृश्चि 04/12/2025 धनु 24/12/2025 मक 13/01/2026 कुंभ 02/02/2026 मीन 23/02/2026 मेष 15/03/2026 वृष 04/04/2026 मिथु 25/04/2026 कर्क 15/05/2026 सिंह 04/06/2026 कन्या 24/06/2026 तुला 15/07/2026	तुला 04/08/2026 वृश्चि 24/08/2026 धनु 14/09/2026 मक 04/10/2026 कुंभ 24/10/2026 मीन 13/11/2026 मेष 04/12/2026 वृष 24/12/2026 मिथु 13/01/2027 कर्क 03/02/2027 सिंह 23/02/2027 कन्या 15/03/2027	कन्या 05/04/2027 तुला 25/04/2027 वृश्चि 15/05/2027 धनु 04/06/2027 मक 25/06/2027 कुंभ 15/07/2027 मीन 04/08/2027 मेष 25/08/2027 वृष 14/09/2027 मिथु 04/10/2027 कर्क 24/10/2027 सिंह 14/11/2027	मिथु 04/12/2027 वृष 24/12/2027 मेष 14/01/2028 मीन 03/02/2028 कुंभ 23/02/2028 मक 14/03/2028 धनु 04/04/2028 वृश्चि 24/04/2028 तुला 14/05/2028 कन्या 04/06/2028 सिंह 24/06/2028 कर्क 14/07/2028	वृष 04/08/2028 मेष 24/08/2028 मीन 13/09/2028 कुंभ 03/10/2028 मक 24/10/2028 धनु 13/11/2028 वृश्चि 03/12/2028 तुला 24/12/2028 कन्या 13/01/2029 सिंह 02/02/2029 कर्क 22/02/2029 मिथु 15/03/2029
वृश्चि - वृष 15/03/2029 13/11/2029	वृश्चि - मेष 13/11/2029 15/07/2030	वृश्चि - मीन 15/07/2030 15/03/2031	वृश्चि - कुंभ 15/03/2031 14/11/2031	वृश्चि - मक 14/11/2031 14/07/2032
मेष 04/04/2029 मीन 24/04/2029 कुंभ 15/05/2029 मक 04/06/2029 धनु 24/06/2029 वृश्चि 14/07/2029 तुला 04/08/2029 कन्या 24/08/2029 सिंह 13/09/2029 कर्क 04/10/2029 मिथु 24/10/2029 वृष 13/11/2029	वृष 04/12/2029 मिथु 24/12/2029 कर्क 13/01/2030 सिंह 02/02/2030 कन्या 23/02/2030 तुला 15/03/2030 वृश्चि 04/04/2030 धनु 25/04/2030 मक 15/05/2030 कुंभ 04/06/2030 मीन 24/06/2030 मेष 15/07/2030	मेष 04/08/2030 वृष 24/08/2030 मिथु 14/09/2030 कर्क 04/10/2030 सिंह 24/10/2030 कन्या 13/11/2030 तुला 04/12/2030 वृश्चि 24/12/2030 धनु 13/01/2031 मक 03/02/2031 कुंभ 23/02/2031 मीन 15/03/2031	मीन 05/04/2031 मेष 25/04/2031 वृष 15/05/2031 मिथु 04/06/2031 कर्क 25/06/2031 सिंह 15/07/2031 कन्या 04/08/2031 तुला 25/08/2031 वृश्चि 14/09/2031 धनु 04/10/2031 मक 24/10/2031 कुंभ 14/11/2031	धनु 04/12/2031 वृश्चि 24/12/2031 तुला 14/01/2032 कन्या 03/02/2032 सिंह 23/02/2032 कर्क 14/03/2032 मिथु 04/04/2032 वृष 24/04/2032 मेष 14/05/2032 मीन 04/06/2032 कुंभ 24/06/2032 मक 14/07/2032
वृश्चि - धनु 14/07/2032 15/03/2033	वृश्चि - वृश्चि 15/03/2033 13/11/2033	तुला - वृश्चि 13/11/2033 13/01/2034	तुला - धनु 13/01/2034 15/03/2034	तुला - मक 15/03/2034 15/05/2034
वृश्चि 04/08/2032 तुला 24/08/2032 कन्या 13/09/2032 सिंह 03/10/2032 कर्क 24/10/2032 मिथु 13/11/2032 वृष 03/12/2032 मेष 24/12/2032 मीन 13/01/2033 कुंभ 02/02/2033 मक 22/02/2033 धनु 15/03/2033	तुला 04/04/2033 कन्या 24/04/2033 सिंह 15/05/2033 कर्क 04/06/2033 मिथु 24/06/2033 वृष 14/07/2033 मेष 04/08/2033 मीन 24/08/2033 कुंभ 13/09/2033 मक 04/10/2033 धनु 24/10/2033 वृश्चि 13/11/2033	तुला 18/11/2033 कन्या 23/11/2033 सिंह 28/11/2033 कर्क 04/12/2033 मिथु 09/12/2033 वृष 14/12/2033 मेष 19/12/2033 मीन 24/12/2033 कुंभ 29/12/2033 मक 03/01/2034 धनु 08/01/2034 वृश्चि 13/01/2034	वृश्चि 18/01/2034 तुला 23/01/2034 कन्या 28/01/2034 सिंह 02/02/2034 कर्क 07/02/2034 मिथु 13/02/2034 वृष 18/02/2034 मेष 23/02/2034 मीन 28/02/2034 कुंभ 05/03/2034 मक 10/03/2034 धनु 15/03/2034	धनु 20/03/2034 वृश्चि 25/03/2034 तुला 30/03/2034 कन्या 04/04/2034 सिंह 09/04/2034 कर्क 14/04/2034 मिथु 20/04/2034 वृष 25/04/2034 मेष 30/04/2034 मीन 05/05/2034 कुंभ 10/05/2034 मक 15/05/2034



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा - प्रत्यन्तर

तुला - कुंभ 15/05/2034 15/07/2034	तुला - मीन 15/07/2034 14/09/2034	तुला - मेष 14/09/2034 13/11/2034	तुला - वृष 13/11/2034 13/01/2035	तुला - मिथु 13/01/2035 15/03/2035
मीन 20/05/2034 मेघ 25/05/2034 वृष 30/05/2034 मिथु 04/06/2034 कर्क 09/06/2034 सिंह 14/06/2034 कन्या 19/06/2034 तुला 24/06/2034 वृश्चि 30/06/2034 धनु 05/07/2034 मक 10/07/2034 कुंभ 15/07/2034	मेघ 20/07/2034 वृष 25/07/2034 मिथु 30/07/2034 कर्क 04/08/2034 सिंह 09/08/2034 कन्या 14/08/2034 तुला 19/08/2034 वृश्चि 24/08/2034 धनु 29/08/2034 मक 03/09/2034 कुंभ 09/09/2034 मीन 14/09/2034	वृष 19/09/2034 मिथु 24/09/2034 कर्क 29/09/2034 सिंह 04/10/2034 कन्या 09/10/2034 तुला 14/10/2034 वृश्चि 19/10/2034 धनु 24/10/2034 मक 29/10/2034 कुंभ 03/11/2034 मीन 08/11/2034 मेघ 13/11/2034	मेघ 19/11/2034 मीन 24/11/2034 कुंभ 29/11/2034 मक 04/12/2034 धनु 09/12/2034 वृश्चि 14/12/2034 तुला 19/12/2034 कन्या 24/12/2034 सिंह 29/12/2034 कर्क 03/01/2035 मिथु 08/01/2035 वृष 13/01/2035	वृष 18/01/2035 मेघ 24/01/2035 मीन 29/01/2035 कुंभ 03/02/2035 मक 08/02/2035 धनु 13/02/2035 वृश्चि 18/02/2035 तुला 23/02/2035 कन्या 28/02/2035 सिंह 05/03/2035 कर्क 10/03/2035 मिथु 15/03/2035
तुला - कर्क 15/03/2035 15/05/2035	तुला - सिंह 15/05/2035 15/07/2035	तुला - कन्या 15/07/2035 14/09/2035	तुला - तुला 14/09/2035 14/11/2035	कन्या - तुला 14/11/2035 14/10/2036
मिथु 20/03/2035 वृष 25/03/2035 मेघ 30/03/2035 मीन 05/04/2035 कुंभ 10/04/2035 मक 15/04/2035 धनु 20/04/2035 वृश्चि 25/04/2035 तुला 30/04/2035 कन्या 05/05/2035 सिंह 10/05/2035 कर्क 15/05/2035	कन्या 20/05/2035 तुला 25/05/2035 वृश्चि 30/05/2035 धनु 04/06/2035 मक 09/06/2035 कुंभ 15/06/2035 मीन 20/06/2035 मेघ 25/06/2035 वृष 30/06/2035 मिथु 05/07/2035 कर्क 10/07/2035 सिंह 15/07/2035	तुला 20/07/2035 वृश्चि 25/07/2035 धनु 30/07/2035 मक 04/08/2035 कुंभ 09/08/2035 मीन 14/08/2035 मेघ 20/08/2035 वृष 25/08/2035 मिथु 30/08/2035 कर्क 04/09/2035 सिंह 09/09/2035 कन्या 14/09/2035	वृश्चि 19/09/2035 धनु 24/09/2035 मक 29/09/2035 कुंभ 04/10/2035 मीन 09/10/2035 मेघ 14/10/2035 वृष 19/10/2035 मिथु 24/10/2035 कर्क 30/10/2035 सिंह 04/11/2035 कन्या 09/11/2035 तुला 14/11/2035	वृश्चि 12/12/2035 धनु 09/01/2036 मक 05/02/2036 कुंभ 04/03/2036 मीन 01/04/2036 मेघ 29/04/2036 वृष 27/05/2036 मिथु 24/06/2036 कर्क 22/07/2036 सिंह 19/08/2036 कन्या 16/09/2036 तुला 14/10/2036
कन्या - वृश्चि 14/10/2036 13/09/2037	कन्या - धनु 13/09/2037 14/08/2038	कन्या - मक 14/08/2038 15/07/2039	कन्या - कुंभ 15/07/2039 14/06/2040	कन्या - मीन 14/06/2040 15/05/2041
तुला 10/11/2036 कन्या 08/12/2036 सिंह 05/01/2037 कर्क 02/02/2037 मिथु 02/03/2037 वृष 30/03/2037 मेघ 27/04/2037 मीन 25/05/2037 कुंभ 22/06/2037 मक 20/07/2037 धनु 16/08/2037 वृश्चि 13/09/2037	वृश्चि 11/10/2037 तुला 08/11/2037 कन्या 06/12/2037 सिंह 03/01/2038 कर्क 31/01/2038 मिथु 28/02/2038 वृष 28/03/2038 मेघ 25/04/2038 मीन 22/05/2038 कुंभ 19/06/2038 मक 17/07/2038 धनु 14/08/2038	धनु 11/09/2038 वृश्चि 09/10/2038 तुला 06/11/2038 कन्या 04/12/2038 सिंह 01/01/2039 कर्क 29/01/2039 मिथु 25/02/2039 वृष 25/03/2039 मेघ 22/04/2039 मीन 20/05/2039 कुंभ 17/06/2039 मक 15/07/2039	मीन 12/08/2039 मेघ 09/09/2039 वृष 07/10/2039 मिथु 04/11/2039 कर्क 02/12/2039 सिंह 29/12/2039 कन्या 26/01/2040 तुला 23/02/2040 वृश्चि 22/03/2040 धनु 19/04/2040 मक 17/05/2040 कुंभ 14/06/2040	मेघ 12/07/2040 वृष 09/08/2040 मिथु 06/09/2040 कर्क 03/10/2040 सिंह 31/10/2040 कन्या 28/11/2040 तुला 26/12/2040 वृश्चि 23/01/2041 धनु 20/02/2041 मक 20/03/2041 कुंभ 17/04/2041 मीन 15/05/2041



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

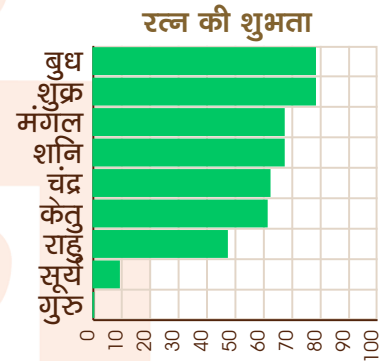


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	78%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	78%	कम खर्च, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	67%	धनार्जन, सुख
नीलम	शनि	67%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
मोती	चंद्र	62%	सुख, दम्पति
लहसुनिया	केतु	61%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	47%	रोग, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	9%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	23/07/2014	34%	69%	73%	78%	0%	66%	55%	22%	47%
चंद्र	22/07/2024	22%	75%	67%	84%	0%	78%	67%	22%	47%
मंगल	23/07/2031	22%	69%	79%	66%	0%	78%	67%	22%	67%
राहु	22/07/2049	0%	50%	54%	78%	0%	84%	73%	61%	47%
गुरु	22/07/2065	22%	69%	73%	66%	2%	66%	67%	47%	61%
शनि	22/07/2084	0%	50%	54%	84%	0%	84%	80%	55%	47%
बुध	23/07/2101	22%	50%	67%	91%	0%	84%	67%	47%	61%
केतु	23/07/2108	0%	50%	73%	78%	0%	84%	55%	22%	73%
शुक्र	23/07/2128	0%	50%	67%	84%	0%	91%	73%	55%	67%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, नीलम, मोती एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न

किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपत्तिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते हैं। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते हैं। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मी से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। इस

रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपत्ति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्य से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वाकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते हैं। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपत्ति के स्वामी बन सकते हैं। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते हैं। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन

करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढ़शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते हैं। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्ज्वल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम ३ रत्ती, अन्यथा ५-६ रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना

चाहिए। चंद्र रत्न मोती आपको अपने कुल में यथायोग्य अधिकार देगा। आपको वाहनों का सुख देगा। रत्न की शक्तियां आपमें परोपकार की भावना का विकास करेंगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। माता की ओर से संपत्ति प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही यह मोती रत्न आपको माता के द्वारा भाग्योदय देगा। आजीविका क्षेत्र में योग्यता अनुसार सम्मान और पद की प्राप्ति होगी। मोती रत्न से आपको घर का सुख प्राप्त होगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। मोती रत्न धारण करने से आपका अपने जीवन साथी से विशेष स्नेह बना रहेगा। मोती की शुभता से दांपत्य जीवन स्नेह और सौहार्द भाव से परिपूर्ण हो सकता है। यह रत्न आपके स्वाभिमान भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। मोती रत्न से आपको क्रय-विक्रय से संबन्धित क्षेत्रों में उत्तम लाभ देकर मनोकूल सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप ग्रहस्थ जीवन में स्थिरता आयेगी। यह रत्न आपको विनोदी स्वभाव देकर आपको विपरीत परिस्थितियों का मुस्करा कर मुकाबला करने की शक्ति दे सकता है। ससुराल से लाभ, सम्मानित, व्यवसाय में लाभ व मानसिक शांति प्राप्ति के लिए भी मोती रत्न धारण किया जा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह

रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रयाप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल 'केट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण से आपका स्वभाव संशययुक्त हो सकता है। आपको बेवजह शक करने की आदत हो सकती है। अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा समझने का भ्रम आपको हो सकता है। हर व्यक्ति का अपने निर्देशानुसार आचरण करना आपको पसंद होगा। अत्यधिक चातुर्य का प्रयोग आपके पारिवारिक संबंधों में मधुरता की कमी ला सकता है। महत्वाकांक्षियों की पूर्ति हेतु आपके द्वारा गलत साधनों का चयन हो सकता है। इस रत्न से परोपकार, दया और धैर्य जैसे शुभ भावों की कमी आपके स्वभाव में आ सकती है। आगे बढ़ने के लिए अनुचित कार्य करना भी आपको नीतिगत लग सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी माता को

कष्ट हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके मस्तिष्क में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। आजीविका क्षेत्र में अधिकारों और शक्तियों की कमी आपको हो सकती है। आपमें अत्यधिक अहं भाव के कारण कार्यक्षेत्र में आपसे आपके अधीनस्थ नाराज रह सकते हैं। आपको पिता की कठोरता का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव आपके पिता से संबंध प्रभावित कर सकता है। उच्चाधिकारियों की सराहना प्राप्त करने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। सरकारी पद, टेंडर प्राप्ति इत्यादि में आपको कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते हैं। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते हैं। कार्यों को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते हैं।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(22/07/2024 - 23/07/2031)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, नीलम, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, गोमेद व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(23/07/2031 - 22/07/2049)

राहु की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, मूंगा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(22/07/2049 - 22/07/2065)

मूंगा, मोती, नीलम, पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(22/07/2065 - 22/07/2084)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मूंगा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित

रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(22/07/2084 - 23/07/2101)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, नीलम, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(23/07/2101 - 23/07/2108)

केतु की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(23/07/2108 - 23/07/2128)

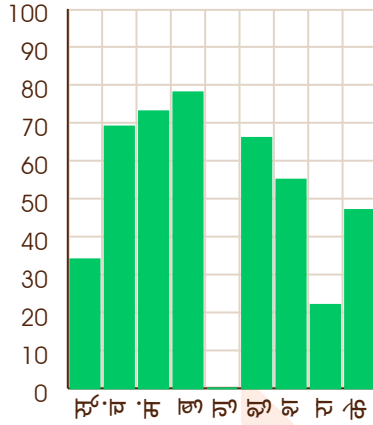
शुक्र की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मूंगा, लहसुनिया, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

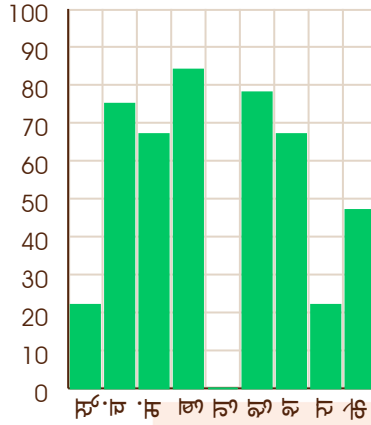
माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

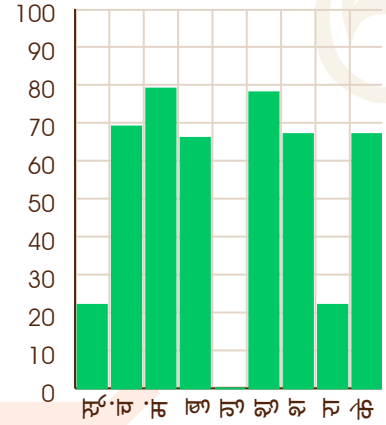
सूर्य - 23/07/2014



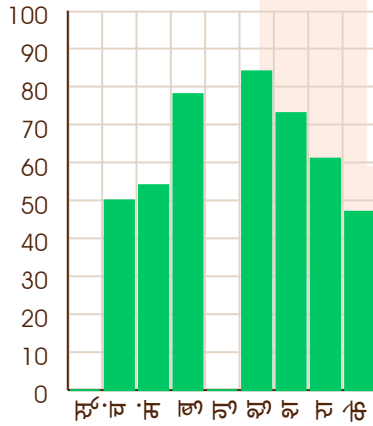
चन्द्र - 22/07/2024



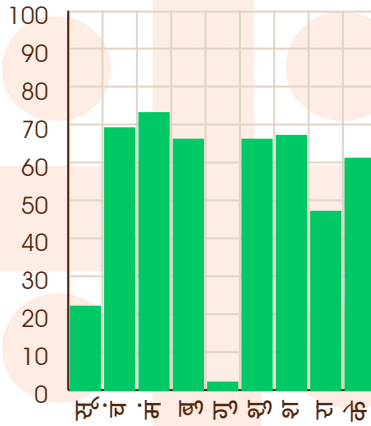
मंगल - 23/07/2031



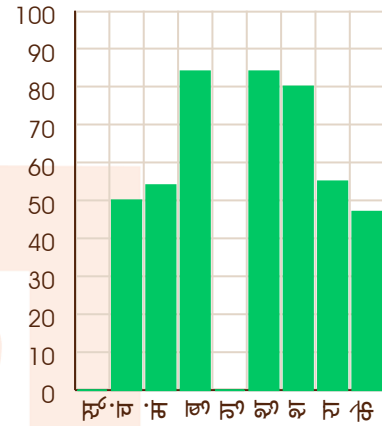
राहु - 22/07/2049



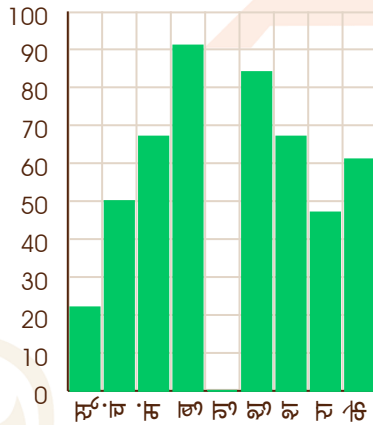
गुरु - 22/07/2065



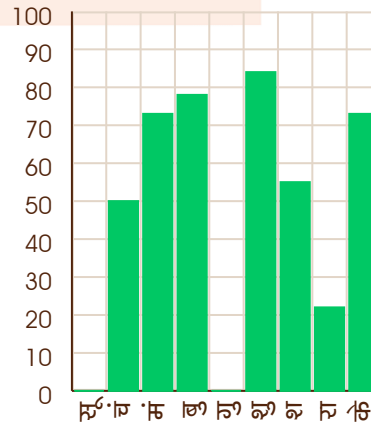
शनि - 22/07/2084



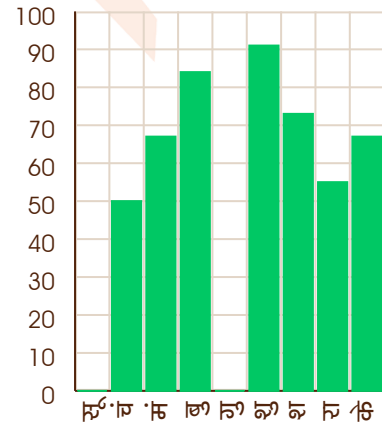
बुध - 23/07/2101



केतु - 23/07/2108



शुक्र - 23/07/2128



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती है। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहत करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रुचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

अल्प बचत
पराक्रम
सुख हानि
सन्तति सुख
दाम्पत्य कलह



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।



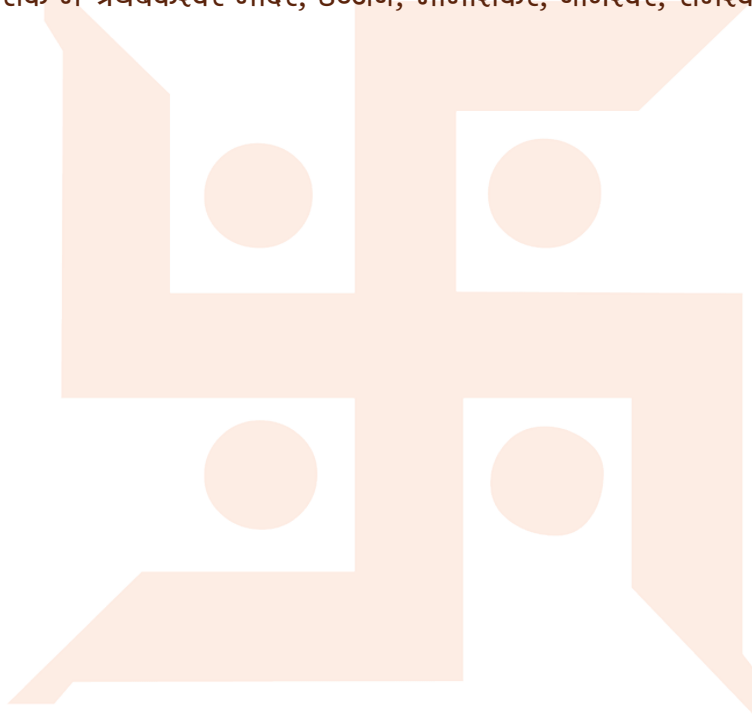
FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 13 है। एक एवं तीन का योग 4 होने से आपका मूलांक चार होता है। अंक एक का स्वामी सूर्य, तीन का स्वामी गुरु तथा मूलांक 4 का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मतानुसार हर्षल होता है। इन तीनों ग्रहों के गुण अवगुण आपके जीवन को प्रभावित करेंगे। सूर्य प्रभाव से आप अपने लक्ष्य को वेधने में सफल होंगी एवं जीवन में काफी ऊँचाईयाँ प्राप्त करेंगी। गुरु प्रभाववश आपके अन्दर बुद्धि चातुर्य अच्छा रहेगा। आप अपनी बुद्धि से समाज में ख्याति अर्जित करेंगी तथा नाम भी प्राप्त करेंगी।

हर्षल या राहु के प्रभाव द्वारा आपमें अच्छा साहस रहेगा, लेकिन जब कभी आप दुःसाहस करेंगी या दिखायेंगी तब आपको लाभ के साथ हानि की भी उपलब्धि होगी। हर्षल ग्रह परिवर्तन का द्योतक है। अचानक सफलता, असफलता देता है। कभी-कभी यह ग्रह विस्फोटक स्थिति भी निर्मित करता है। अतः ऐसे कार्यों को जिनमें जोखिम या हानि की संभावना हो, उन्हें आपको सोच समझकर करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य- गुरु के योग से साहस एवं धैर्य आपमें अच्छा रहेगा एवं जीवन में कई अवसरों पर आप अपने साहस एवं धैर्य का परिचय देंगी। आपकी शीघ्रातिशीघ्र कार्य संपादन करने की अभिलाषा रहेगी। कार्यों में रुकावट को आप बर्दास्त नहीं करेंगी और आपके सतत् प्रयत्न कार्य की सफलता में ही लगे रहेंगे।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है, अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकती हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचिपूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगी। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 4 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 4 का स्वामी हर्षल है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपके अंदर उच्च कोटि की कल्पनाशक्ति रहेगी। विचारों का धारा प्रवाह मंथन होता रहेगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपको काफी संघर्षों के बाद सफलताएं प्राप्त होंगी। आर्थिक स्थिति आपकी ज्यादा अच्छी नहीं रहेगी। समय-समय पर आपको अर्थाभाव रहेगा। कभी-कभी तो आप अत्यधिक धन की कमी महसूस करेंगी, जिससे आपका मानसिक तनाव काफी बढ़ जाया करेगा। रोजगार-व्यापार का क्षेत्र आप रुकावटों और संघर्ष के साथ पार करेंगी। कभी-कभी धैर्य खो देना आपके लिए अहितकर साबित होगा। यदि आप अपने कार्यक्षेत्र में धैर्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के साथ सोच-समझ कर कोई भी कार्य करती हैं तो निश्चित ही आपको सफलता प्राप्त होगी। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी में उच्च कोटि की रहेगी। रोजगार के क्षेत्र में आप काफी यात्राएं करेंगी और कुछ यात्राओं से आपको अच्छे आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। चली आ रही पद्धतियों में आप परिवर्तन करेंगी और उन परिवर्तनों से आपका कार्यक्षेत्र काफी प्रभावित होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन-तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
- 6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
- 7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
- 8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपकी जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

हर्षल आपके लिए दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह के रविवार, सोमवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे। यदि आप अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो आपके लिए शुभ रहेगा।

शुभ तारीखें

आपको अपने किसी विशिष्ट व्यक्ति से, उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र इत्यादि लिखना हो अथवा कोई महत्वपूर्ण कार्य-व्यापार आदि प्रारंभ करना हो तो किसी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों का चुनाव करना कार्य में सफलतादायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक आपके लिए अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी या अन्य कार्य या उच्चाधिकारी या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपर्युक्त दिनांक आपके लिए ठीक नहीं रहेंगे।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे लोग आपके लिए शुभ रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से आपकी लंबी मित्रता रहेगी तथा ये आपके रोजगार-व्यवसाय में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 प्रभावी पुरुष आपकी अच्छे साथी सिद्ध हो सकते हैं। उपर्युक्त मूलांक वाले पुरुषों से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकती हैं तथा उसमें सफल भी हो सकती हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को हुआ हो तो वे सभी पुरुष सहायक एवं लाभपूर्ण रहेंगे।

अनुकूल रंग

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो आपको चाहिए कि आप नीला, धूप-छांव, भूरा मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें। यह रंग आपके लिए अनुकूल रहेगा। हो सके तो अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको चाहिए कि यदि आप भवन, कॉम्पलेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो आपके लिए नैर्ऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। आपका शयन कक्ष नैर्ऋत्य दिशा में होने से रोजगार-व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो आपके लिए अधिक हितकर रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपका मूलांक 4 है। मूलांक 4 के मित्र अंक 1, 8 हैं। ये अंक आपके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदती हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1,4,8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 = 4 इत्यादि। आपकी यात्रा का वाहन नंबर यही होने से आपकी यात्रा सफल रहेगी। अगर आप होटल में कमरा आदि बुक करवाती हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तभी आपको रक्तचाप दोष या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र हो जाते हैं। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय आप गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

व्यवसाय

दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन के छापे का कार्य, बाबू, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि।

व्रतोपवास

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अनुकूल रत्न या उपरत्न

चांदी की अंगूठी में आप सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद के न मिलने पर आप कत्थई या काला-लाल हकीक भी पहन सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र 'ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

ग्रह जप मंत्र

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ भ्रौं भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ॥ जप संख्या 18000 ॥

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़ ला कर, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु या लोहे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे हर्षल/राहु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गड़ूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ राहु/हर्षल के प्रभाव क्षीण होकर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

राहु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को राहु के पदार्थ-अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, खड्ग आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु राहु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न फल

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में मकर लग्न में मीन राशि के नवमांश एवं मकर राशि के द्रेष्काण के उदय काल में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति यह निर्दिष्ट कर रही है कि आपका जीवन सौभाग्यशाली रहेगा। आपकी अभिलाषा के अनुकूल आपकी अच्छी बहुमत रहेगी। जो अनेक रिक्तियों की पूर्ति करेगा तथा भरपूर धनोपार्जन के लिए समर्थ होंगी। आप एक उत्साही महिला हैं। यह प्रदर्शित होता है, तथा आपकी अभिरुचि दर्शन शास्त्र अध्ययन की रहेगी। आप एक धार्मिक महिला हैं। आप अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण करेंगी। आपकी आत्मा उदार है तथा आप स्वयं सेवी दान सेवी संस्था को दान प्रदान करेंगी।

आप एक ऐसी महिला हैं जो समाज में एक स्तम्भ की भांति विचारणीय है। आप मेधावी एवं बुद्धिमान हैं। आप किसी भी व्यक्ति को प्रभावित कर उसे मर्यादित एवं मानवता के गुणों से युक्त करेंगी। इस प्रकार अनेक व्यक्ति आपके निर्देशन हेतु पहुंचेंगे तथा आप उनको संतुष्टि प्रदान करेंगी।

आप एक अधिकार प्राप्त करेंगी एवं धनी व्यक्तियों की दृष्टि में आदरणीय होंगी। वे सभी आपकी सहायता के लिए प्रवृत्त होंगे तथा आप उन लोगों से काफी संपत्ति उपार्जित करेंगी। आप एक मितव्ययी प्राणी होंगी तथा आर्थिक मामले में पूर्ण सतर्क रहेंगी। आप अपने धन को अच्छे कार्यों में व्यय करेंगी तथा अपने पति एवं बच्चों के सुखदायक वातावरण का सृजन करेंगी। आपके उत्तम संतान होंगी। इस संबंध में आप भाग्यशाली हैं। वे अपने परिवार के नाम और प्रसिद्धि को बरकरार रखेंगे।

आपके लिए एक महत्वपूर्ण विषय पर विचार करना आवश्यक है कि आपके द्वारा लापरवाही करना निराशाजनक प्रवृत्ति का द्योतक है। अपने कार्य व्यवसाय को संपादन करने में रूकावट करना ठीक नहीं है। आप किसी कार्य के विपरीत संकेत पाकर आपका हृदय दूट जाता है। आप धैर्यपूर्वक दोनों हाथों से कार्य व्यवसाय के संबंध में समुचित राह अपनाएं एवं हर दशा में कार्य में सफलता प्राप्त करें। अन्यथा आप रोगों को आमंत्रित करेंगी। यथा दुर्बलता एवं वायु एवं उदर रोग से आक्रांत हो जाएंगी।

आप अन्य रोगादि के प्रतिकूल सतर्कता बरते तथा अपने पाचन क्रिया से संबंधित रोगों के प्रति भी सुरक्षात्मक कदम उठाएं।

अतएव आपको निर्दिष्ट किया जाता है कि छोटे-छोटे दैहिक रोगादि से क्षति ग्रस्त होने की आशंका है, अतः अकस्मात् छलांग लगाना अथवा ऊंचाई से गिर जाना आदि। ये सभी रोगादि को सुनिश्चिता नहीं है परंतु आपको प्रभावित कर सकती है। परंतु आपको इन रोगादि की संभावनाओं के प्रति विचार करना चाहिए तथा पहले से ही अपने स्वास्थ्य का संरक्षण करना सामान्यतया अच्छा होता है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली एवं अनुकूल दिन शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार का दिन है। परंतु सोमवार, गुरुवार एवं रविवार का दिन आपके लिए

प्रतिकूल चिंताकारक एवं व्ययकारक है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 6, 9 एवं 8 अंक हैं। अंक 3 आपके लिए परेशानी वाला है। अतः इस अंक का परित्याग करें।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग लाभदायक प्रमाणित होंगे। कृपया पीला एवं क्रीम रंग का परित्याग करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धनु राशि में शुक हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीडित एवं दुःखी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया मकर लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति उनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। इनके मुख मंडल पर चैतन्यता तथा विचारशीलता के भाव की न्यूनता रहती है परन्तु गंभीरता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। ये कर्मशील तथा परिश्रमी होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनकी कार्य करने की क्षमता प्रबल होती है तथा यही इनकी सफलता का रहस्य भी होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में ये तत्पर रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील होते हैं परन्तु इनमें यदा कदा उदासीनता का भाव भी विद्यमान रहता है फलतः सुख दुख को ये समान रूप से स्वीकार करने में समर्थ रहते हैं। भौतिकता के प्रति इनके आकर्षण में कमी रहती है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने में तत्पर रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये विज्ञान, अनुसंधान या शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगी तथा आप में आदर्शवादिता का गुण भी विद्यमान रहेगा एवं स्वतंत्र रूप से अपने आदर्शों पर आचरण करेंगी। आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप अपने शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से उदारता एवं स्नेह का व्यवहार करेंगी फलतः वे भी आपसे प्रभावित रहेंगी। अतः अपने सदगुणों से आप सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य होगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से परेशान रहेंगी परन्तु आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगी। आप में पराक्रम एवं बुद्धिमता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा। अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप उपरोक्त गुणों से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। समाज में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा एक आदरणीय एवं विदुषी महिला के रूप में आपके पहचान रहेगी। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा तथा परस्पर सामंजस्य के द्वारा आप सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगी।

जीवन में सुख संसाधनों एवं वैभव आदि को आप अपनी बुद्धिमता तथा विद्वता से अर्जित करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही आपके आयस्रोत एक से अधिक मात्रा में हो सकते हैं। आपके व्यय करने की प्रवृत्ति अल्प रहेगी परन्तु उचित व्यय करने में आप तत्पर रहेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करती रहेंगी। गंगा स्नान या तीर्थ यात्रा भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। मित्र एवं बन्धु वर्ग की

आप प्रिय होंगी तथा उनसे आपको इच्छित आदर सहयोग एवं लाभ समय समय पर प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप परिश्रमी पराक्रमी एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा जो कुछ भी आपके मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगी। साथ ही आप में निस्वार्थ का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने कार्य कलापों को इसी भाव से सम्पन्न करती रहेंगी परन्तु अन्य जनों की बातों में शीघ्र ही आएंगी जिससे यदा कदा आपको अनावश्यक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों के प्रति आपके मन में पूर्ण लगाव रहेगा साथ ही घर को भी हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगी।

पारिवारिक जनों के लिए आप अत्यधिक चिन्तित रहेंगी तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आपका उनसे लगाव रहेगा। आप में अनावश्यक चंचलता के भाव का अभाव रहेगा तथा किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगी। आपकी वाणी में मधुरता रहेगी तथा विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना आपको रुचिकर लगेगा। साथ ही पारिवारिक जनों के साथ समय समय पर धार्मिक एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी तथा सज्जनों एवं महात्माओं का समय समय पर सत्कार करती रहेंगी। साथ ही परोपकार संबंधी कार्यों में भी आपकी रुचि होगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगी तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी तथा गहन से गहन विषयों को स्मरण रखने में समर्थ रहेंगी। आपकी बुद्धि उच्चशिक्षा, दर्शन या शोध कार्य के प्रति रुचिशील रहेगी तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करती रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी, कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में परस्पर आपका सहयोग रहेगा। इसके साथ ही पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि के लिए एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे इससे सौहार्द का भाव बना रहेगा।

आप में नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे। अतः समाज में मान सम्मान तथा ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी तत्पर रहेंगी। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी अतः किसी लाभदायक कार्य को देखकर आप तुरंत उसे करने के लिए तैयार हो जाएंगी। भौतिकता की प्राप्ति के लिए भी हमेशा यत्नशील रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन तथा अन्य उपकरणों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही संगीत के प्रति भी रुचिशील रहेंगी एवं कला के लिए भी समय प्रदान करेंगी। दूर समीप की यात्रा करने से आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा धार्मिक या सूचना संबंधी लेखों को पढ़ने में आपकी रुचि रहेगी। इसके अतिरिक्त आप धनवान, धर्मात्मा, अतिथि सेविका तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा चन्द्रमा भी मित्रराशि में स्थित होकर चतुर्थभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगी। आप आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगी तथा इनकी आपके पास कमी नहीं होगी। आप एक वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा।

आप एक भाग्यवान महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। माता से भी आप प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगी। साथ ही अपनी योग्यता, बुद्धिमता एवं परिश्रम से भी वांछित मात्रा में धन सम्पत्ति अर्जित करती रहेंगी। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति अधिक एवं शीघ्र लाभ होगा। अतः अचल सम्पत्ति में आपको अवसरानुकूल वृद्धि करते रहना चाहिए।

आप का घर सुन्दर, आकर्षक एवं आधुनिक होगा तथा समस्त सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि करने के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी एवं संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त आप उत्तम वाहन सुख को प्राप्त करेंगी एवं माता के सहयोग से शीघ्र ही वाहन की प्राप्ति होगी।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होंगी। परिवार के पालन पोषण वह ईमानदारी से करेंगी जिससे सभी लोग उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समयानुसार आपको वे अपनी ओर से नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी माता के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट की अनुभूति नहीं होने देंगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप रुचिशील होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके परीक्षाओं में सफलताएं प्राप्त करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करके अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगी। इससे आपके मन में आत्म विश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं संबंधियों से भी वांछित आदर स्नेह एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में भी अच्छी सफलता अर्जित कर सकती हैं।

चतुर्थ भाव में मंगल की राशि में चन्द्रमा के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं। लेकिन यदि आप युवावस्था से ही खान-पान पर ध्यान दें तो ऐसी समस्याओं में कमी हो सकती है जिससे आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगी। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रुचि रखेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगी तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में शुक्र की राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि-कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होने के कारण यदा-कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता-पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगी तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपको खास सम्बन्धियों तथा घनिष्ठ मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रुवर्ग उच्चाधिकार व्यक्ति प्राप्त होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी उत्पन्न होंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशीलता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। अतः आपको सामाजिक अवमानना तथा आर्थिक हानि प्रदान करने के लिए भी तत्पर रहेंगे परन्तु आप एक चतुर बुद्धिमती एवं प्रतिभाशाली महिला होंगी। अतः अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का सफलता पूर्वक समाधान करेंगी। आप दीवानी तथा फौजदारी दोनों प्रकार के मुकद्दमों से सम्बन्धित रहेंगी। लेकिन इन कार्यों को आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं चतुराई से सम्पन्न करना चाहिए अन्यथा इनसे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। चूंकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगी तथा दूसरों को उसमें कोई महत्व नहीं देंगी तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा प्रसिद्धि भी मिलेगी।

आपका सेवक वर्ग अच्छा रहेगा तथा ईमानदारी से वे आपकी सेवा करेंगे साथ ही आज्ञा का पालन भी करते रहेंगे, लेकिन यदा कदा आपके गुप्त रहस्यों को वे अन्य जनों के समक्ष कहेंगे जिससे आपकी सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत वार्तालाप न करें। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर ही रखें।

आप कई बार आय से अधिक व्यय भौतिक आराम की वस्तुओं पर कर देंगी जिससे आर्थिक विषमता होगी तथा आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः आपको ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे तथा मामा से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन होता रहेगा। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप आदि से आप परेशान हो सकती है। अतः युवावस्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखकर ऐसी समस्याओं से सुरक्षित रहना चाहिए।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है तथा केतु के प्रभाव से उसमें तेजस्विता पराक्रम एवं साहस का भाव रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें बना रहेगा। वह स्वपराक्रम एवं साहस से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। केतु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे।

आपके पति लालिमा लिए आकर्षक वर्ण की व्यक्ति होंगे एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी लेकिन शरीर पुष्ट होगा इससे उनके व्यक्तित्व में आकर्षण उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त भौतिकता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह करने में तत्पर होंगे।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा केतु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम का भाव होगा। लेकिन केतु के प्रभाव से पति की स्वाभिमानी प्रवृत्ति तथा असहिष्णुता के भाव के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं एवं विवाद उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव आएगा। अतः ऐसे समय में संयम पूर्वक कार्य करना चाहिए।

आपका विवाह मध्यम परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मध्यम होगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आप भी उनको पूर्ण महत्व देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सास ससुर की सलाह भी लेंगी इससे आपस में विश्वास एवं प्रेम का भाव रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति के मन में विशेष सेवा की भावना कम होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा कम ही करेंगे साथ ही साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे जिससे परिवार में अशांति रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः जीवन में साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों पर श्रद्धा रखेंगी तथा न्यूनाधिक रूप से इसका आपको ज्ञान भी रहेगा। साथ ही इन विषयों में किसी प्रकार का शोधकार्य आदि भी सम्पन्न कर सकती हैं। आप अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक चिन्तन मनन में व्यतीत करेंगी तथा इसमें आपको ख्याति भी अर्जित हो सकती है। आप चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी भी होगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त करेंगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा अन्य प्रकार की जायदाद रहेगी साथ ही जायदाद संबंधी व्यवसाय या कय विकय से भी आप इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित कर सकती हैं। अतः समाज में आप एक आदरणीया महिला रहेंगी।

आपका ससुराल भी सुसम्पन्न परिवार होगा तथा सर्वप्रकार से वे खुशहाल होंगे अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। बीमा आदि के क्षेत्र में भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः आपको स्वयं का तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का अवश्य बीमा करवाना चाहिए। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना आदि का कोई विशेष योग नहीं है तथा सामान्य घटनाओं से किसी हानि या अनिष्ट की संभावना नहीं रहेगी तथापि शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु भी अच्छी रहेगी तथा समस्त जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श तथा दयालु स्वभाव की महिला होंगी तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक धार्मिक प्रवृत्तियों या अनुष्ठानों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसी परिपेक्ष्य में मन्दिरों या तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगी। गुरु एवं महात्माओं के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा उनकी सेवा करने में भी तत्पर रहेंगी। आध्यात्म संबंधी ग्रंथों का भी आपको ज्ञान रहेगा। साथ ही ध्यान एवं योग की क्रियाएं भी समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी।

आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी तथा पूर्वाभास या भविष्य वाणियां आपकी सत्य सिद्ध होंगी। अपनी ओर से आप अन्य जनों को हमेशा धर्म के मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करेंगी तथा सामूहिक रूप से उनको संबोधित भी कर सकती हैं। इन सब कार्यों से आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। व्यक्तिगत कार्यों की सिद्धि या अन्य लाभार्जन आदि के उद्देश्य से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं भी समय समय पर होती रहेंगी। साथ ही धर्म के पवित्र ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगी तथा दीन दुःखियों को समय समय पर दान आदि भी देती रहेगी परन्तु ये सभी कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पसन्द करेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सुख प्राप्त होगा तथा दैनिक पूजा भी आप नित्य सम्पन्न करेंगी एवं युवास्था के बाद आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त अपने पूर्व जन्म के किए गए पुण्यों के प्रभाव से वर्तमान में आप इच्छित धन ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं सूर्य अग्नि तत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया युक्त होगा तथा श्रमसाध्य का भाव अल्प होगा। एवं उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी लेकिन नीचस्थ सूर्य के प्रभाव से आपको यदा कदा इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः परिश्रम पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करें।

दशमभाव में तुला राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से आपके लिए आजीविका का क्षेत्र कार्यालयीय कार्य, औषधिविज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स का क्षेत्र ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, वायुसेना या एयर लाइंस, प्रशासकीय सेवा तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। साथ ही विज्ञान में भी आप शोध कार्य करने में समर्थ हो सकती हैं। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य का चयन करें इससे आप आसानी से उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिस्ट, आयुर्वेद औषधि, ऊनी तथा आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, कम्प्यूटर संबंधी कार्य, रत्न एवं धातु व्यापार, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का क्रय विक्रय या उत्पादन, सरकार से संबंधित कार्य या ठेके तथा राजनीति के क्षेत्र में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही इनमें प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी प्राप्त होगा जिससे आपकी आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

दशमभाव में सूर्य के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगी। समाज में भी आपका प्रभाव होगा तथा दूर दूर तक यश भी व्याप्त होगा तथा सभी लोग आपको सम्माननीय समझेंगे। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी आदरणीय सदस्य या पदाधिकारी हो सकती हैं यद्यपि इन सबको प्राप्त करने में आपको काफी पराक्रम एवं परिश्रम का सामना करना पड़ेगा तथा इसमें विलम्ब भी होगा लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे पूर्ण आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों के प्रति भी वे सेवा भाव रखेंगी। आपकी शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सतर्क होंगी तथा इसका यथोचित प्रबंध करेंगी। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आपको उन्हीं के प्रयत्नों एवं प्रभाव से अनुकूल कार्यक्षेत्र की प्राप्ति होगी। आप भी एक परिश्रमी महिला होंगी तथा परिश्रम एवं योग्यता से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी परन्तु आपके आपसी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद बने रहेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः संबंधों में अनुकूलता रखने के लिए आपको ऐसी परिस्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाए। अपनी इसी संघर्षशील एवं क्रियाशीलता के कारण आप जीवन में अधिकांश रूप से अपनी महत्वाकांक्षाएं तथा मानसिक इच्छाओं एवं संकल्पों को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगी। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगी तथा अन्य जनों के सहयोग की इसमें अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगी। आप होटल व्यवसाय, सोने का व्यापार अथवा भाइयों के प्रोत्साहन से जीवन में इच्छित मात्रा में लाभ एवं धनार्जन करेंगी यदि स्वयं कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त स्रोतों से आपके पति लाभार्जन करेंगे। इच्छित धन ऐश्वर्य से आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगी तथा बड़े भाइयों से जीवन में आपको स्नेह, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिलता रहेगा तथा आप भी उनका पितृवत आदर करेंगी।

आप पराकमी सक्रिय बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगी यद्यपि आपकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द होगी फिर भी सामूहिक रूप से आपको कार्य करना रुचिकर लगेगा। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप सामाजिक जनों समय समय पर भलाई तथा सहायता करती रहेंगी जिससे जीवन में किसी विशिष्ट सम्मान को अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगी। साथ ही यदा कदा बाएं कान में परेशानी से कष्ट प्राप्त करेंगी। परन्तु सामान्य समय सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में मान सम्मान तथा ख्याति से युक्त रहेंगी एवं धनार्जन करने में भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। इसके लिए आपको चाहे कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े तथा परिश्रम पूर्वक अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर रहेंगी तथा ऐसे किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगी जिससे आपको उन्नति या लाभ मार्ग दिखता हो। धन के महत्व को आप अच्छी तरह जानेंगी अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक इसका उपयोग करेंगी। साथ ही इस विषय में कभी भी कोई खतरा नहीं उठाएंगी।

अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार अर्जित किया जाता है इसको आप अच्छी तरह जानती हैं। अतः आप इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या ख्याति प्राप्त बड़ी कम्पनी में पूंजी निवेश करके करेंगी। साथ ही जायदाद संबंधी कय विकय पर भी धन का व्यय कर सकती है। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक एवं उदार होगी अतः समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा दीन दुखियों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी धन खर्च करेंगी। आप मध्यवस्था में धनवान बनेंगी तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे एवं अपनी दयालुता तथा दानशीलता के कारण समाज में ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त भौतिक सुख संसाधनों या आवास की साज सज्जा पर भी व्यय करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी। इन पर व्यय करने के बाद आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या कार्यवश विदेश यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं जिससे आपको उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा आपका समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। नक्षत्र के अनुसार आपकी मेष योनि, राक्षस गण, क्षत्रिय वर्ण, अन्त्य नाड़ी तथा गरुड़ वर्ग है। कृतिका के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "अ" या "आ" होगा। यथा-आशा, अनिता आदि।

इस नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण आप अत्यन्त कंजूस प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा धन संग्रह करना ही आपका मुख्य ध्येय होगा। उसे व्यय करने में आप अत्यन्त ही कृपणता का परिचय देंगी। अच्छे कार्य आप कम ही करेंगी।

कार्य करने की इच्छा का आपके मन में अभाव रहेगा तथा नींद भी आपको अधिक आयेगी। इसी आलस्य के कारण आप कई बार भूख से भी व्याकुल हो सकती हैं।

**कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीडितः ।
अकर्म कुरुते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः ।।
मानसागरी**

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतघ्न एवं धनी होता है।

भोजन करने की मात्रा आपकी सामान्य रहेगी तथा किसी भी बात को सहन करने की शक्ति आप में बिल्कुल नहीं होगी अर्थात् आप किसी की बात को सहन नहीं कर सकेंगी। आप अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त करेंगी। विद्या आप अवश्य प्राप्त करेंगी और यही विद्या आपका धन होगी। अतः आप एक विदुषी तथा उच्चाधिकारी भी हो सकती हैं।

**बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः ।।
बृहज्जातकम्**

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

सत्य का अनुसरण आप अपने जीवन में कभी कभी ही करेंगी। व्यर्थ में ही इधर उधर घूमना आपकी दिनचर्या का एक अंग होगा। मुंह से भी यदा कदा कठोर वचनों का प्रयोग करेंगी जो सुनने वालों को अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी दूसरे के द्वारा उपकार को अल्प ही स्वीकार करेंगी साथ ही धनाभाव भी रहेगा। तथा आप अपने कर्तव्यों का पालन अल्प मात्रा में ही करेंगी।

**क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतघ्नः ।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो ।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतधन कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुंडली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थों से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पत्तियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलकीड़ा में भी आपकी हार्दिक रुचि रहेगी।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प भोजन करने वाली होंगी तथा अपने अन्य भाई बहनों में श्रेष्ठ रहेंगी।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो ।।

जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण से युक्त होगा तथा आँखें लालिमा युक्त गोल तथा चंचल होंगी। आपके सिर में किसी घाव या चोट का निशान होगा। आपके हाथ तथा पैर कमल के समान कान्तियुक्त होंगे। पानी से आप स्वभाविक रूप से भयभीत रहेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा कठिनाईयों का साहसपूर्ण प्रतिरोध करने की शक्ति आपके अन्दर होगी। समाज से आपको उचित सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी तथा आप चंचल बुद्धि से युक्त रहेंगी। धन को आप मान सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगी जिससे समय समय पर अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मित्र तथा सहयोगी अधिक संख्या में होंगे तथा कन्याओं की अपेक्षा पुत्रों की संख्या भी अधिक होगी। जन सामान्य से आपका स्नेहशील व्यवहार रहेगा अतः सभी लोग आपका सम्मान करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः ।

कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः ।।

पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः ।

सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ ।।

सारावली

धन को अनावश्यक प्राथमिकता देने से आपके श्रेष्ठ संबंधी आपसे अलग होंगे या आप स्वयं उनसे अलग हो जाएंगी। इसके अतिरिक्त घर के सारे कार्य आपकी पूर्ण सहमति से ही सम्पन्न होते हैं। अतः यह भी उनकी असन्तुष्टि का एक कारण बनेगा। धन तथा पुत्र से आप

आजीवन युक्त रहेंगी तथा अपने वैभव से समाज में अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगी।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोदनः ।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः ।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः ।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये ।।

बृहज्जातकम्

आपकी प्रवृत्ति शीघ्र नाराज होना तथा नाराज होकर शीघ्र प्रसन्न होने वाली होगी। साथ ही यत्र तत्र भ्रमण करना आपको रुचिकर लगेगा। आपकी हथेलियों में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। पुरुष वर्ग में आप विशेष रूप से प्रिय तथा आदरणीय समझी जाएंगी। सेवा तथा सहयोग का भाव आपके अर्न्तमन में कठिन से कठिन समय में भी रहेगा अर्थात् विषम परिस्थितियों में आप सेवा तथा सहयोग करने का कार्य नहीं छोड़ेंगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ।।

जातकाभरणम्

भ्रमण या घूमने में आपकी रुचि ऐसे स्थानों में जाने की होती है जहाँ सरलता से नहीं पहुँचा जा सकता हो। साथ ही आपके सामाजिक संबंध विस्तृत होंगे तथा समयानुसार आप अभक्ष्य पदार्थों मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण कर सकती हैं।

मेघे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः ।

वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप स्वभाव से ही उग्र तथा कोधी होंगी इससे आपको कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी। चंचल प्रवृत्ति होने के कारण आप यदा कदा मिथ्या भाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी ।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कितोङ्गः कियमे प्रजातः ।।

फलदीपिका

आप यौगिक क्रियाओं में भी अपनी रुचि रखेंगी। आपको पित्त कारक या ऐसे पदार्थों का भक्षण नहीं करना चाहिए जिससे मस्तिष्क को गरमी पहुँचती हो अन्यथा इन वस्तुओं से मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता है। आपको अपनी शारीरिक सुरक्षा का ध्यान भी रखना चाहिए।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो ।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्र्य युक्तः ।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी ।
संभवति पुरुषोऽयं मेष राशौ ।।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



जातक दीपिका

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ है। अतः आप प्रायः अर्थहीन बातें करने वाली होंगी। आपके हृदय में करुणा एवं दया का करुणा एवं दया का अल्प भाव रहेगा। साथ ही क्रोध आपको बहुत आएगा एवं छोटी छोटी बातों पर क्रोध करना आपकी प्रवृत्ति होगी। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर हो जाएंगी। आपकी प्रकृति वाद विवाद करने की भी होगी। फलतः अधिकांश लोगों से आपका विरोध रहेगा। अतः संयमपूर्वक अन्य जनों से आपको वार्तालाप करना चाहिए।

**लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः ।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः । ।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
चण्डकर्म मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः । ।**

मानसागरी

आप उन्माद तथा प्रमेह आदि रोगों से पीड़ित हो सकती है। आपके चेहरे का स्वरूप भी दीर्घ होगा तथा वाणी आपकी तेज होगी जो सुनने वाले को अच्छी नहीं लगेगी। अतः प्रयत्न पूर्वक मधु भाषण करें।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।
दुःशीलवृत्तः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी । ।**

जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अत्यन्त उत्साही होंगी। एक वीरांगना के समान आपके अन्दर पराक्रम होगा। धन और ऐश्वर्य से आजीवन आप युक्त रहेंगी तथा किसी भी चीज का अभाव नहीं रहेगा। आप परोपकारी होंगी तथा दूसरों की भलाई करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहेंगी।

**महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः ।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः ।**

मानसागरी

अर्थात् मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध

रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्टकारी है। अतः आपको चाहिए कि आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा अशुभ फल होंगे। साथ ही उपरोक्त वार, नक्षत्र, प्रहर, दिन तथा चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य प्रारम्भ न करें। इसके अतिरिक्त इस समय में शरीर की पूर्ण रूप से सुरक्षा रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा आर्थिक परेशानियां, व्यापार में हानि अथवा नौकरी में बाधा उत्पन्न हो रही हो ऐसे समय पर आपको अपने इष्ट देव

श्री हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त सोना, तांबा, गेहूं, गुड़, लाल वस्त्र आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रिक मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। मंगलवार के उपवास से भी आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ॐ हूं शीं भौमाय नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृ ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृ ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-छीनी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था की प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकती हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगी। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगी। आप बहुत वहम करेंगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता/ससुर से दूर हो सकती हैं। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्च पद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगी तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नज़र और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना, ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न दें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती स्कार्फ/चुनरी रखें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा चौथे घर में है। आपका भाग्य को जगायेगा। आपकी जमीन, जायदाद, भवन और वाहन का उम्दा सुख मिलेगा। पैतृक कारोबार से लाभ होगा। आपको कपड़े के व्यवसाय से लाभ होगा। आपको माता-पिता का पूर्ण सुख मिलेगा। बुढ़ापा सुखपूर्वक गुजरेगा। पैतृक संपत्ति अवश्य प्राप्त होगी। सरकारी खर्च से विदेश की यात्रा करेंगी। आपके पास धन का दरिया होगा जितना खर्च करेंगी उतना ही धन बढ़ेगा। माता/सास और लोगों की सेवा करने से माया का दरिया समुद्र बन जाएगा। आपकी उम्र लंबी होगी आपके पास कोई व्यक्ति अमानत रखे तो लेने के लिए वापस नहीं आएगा। पुत्र पैदा होने के बाद आपकी

हालत अच्छी हो जाएगी। आपकी सरकारी नौकरी या सरकारी ठेकेदारी करेगी तो अच्छी दौलत मिलेगी। समुद्री सफर में भी लाभ प्राप्त होगा। माता/सास व पति दोनों से सहयोग प्राप्त होगा। आप राजसी ठाठ भोगेंगी। आपको बुजुर्गों का व्यापार बदलना हानिकारक होगा। आप न्यायमूर्ति या जज भी हो सकती हैं। अच्छी सलाहकार साबित होंगी और आप अपना कोई भी कार्य करने से पहले किसी की सलाह जरूर लें।

यदि आपने दूध-पानी बेचने का काम किया, माता/सास या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा किया, दादा पिता के समय का कारोबार बदला, घर आये मेहमान की सेवा न की तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से यदि आप माता/सास को कष्ट देंगी और उसका विरोध करेंगी तो धन और मन की शान्ति खराब होगी। बुजुर्गों की संपत्ति नष्ट होगी। आप किसी का एहसान न मानेंगी, माता/सास को कष्ट देना या उसका विरोध करने से, वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। यदि आप बुजुर्गों का व्यापार बदलेंगी तो हानि होगी, दूध का बेचना या डेयरी फार्म के काम में हानि होगी और संतान सुख न होगा। मेहमानों की सेवा करने की बजाए उनसे कुछ धन सामान की आशा रखेंगी। यह आपके परिवार के लिए हानिकारक है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माता/सास का विरोध न करें।
2. दूध-पानी मोल न बेचें।

उपाय :

1. शुभ कार्य शुरू करते या जाते समय पानी या दूध का कुंभ रखें।
2. घर में आये मेहमानों को दूध या मीठा पानी जरूर पिलायें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगी। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाली होंगी। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगी। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगी। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगी। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका

मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगी, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद लेना भी पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजा-साला-भांजा या दोहता की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी की प्रिय रहेंगी। आप व्यवहार कुशल, जीवन निर्वाह ठीक से करने वाली होंगी आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगी। आप लेखिका-संपादिका, अनेक विद्याओं की जानने वाली हो सकती हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाली होंगी। आप पूरा धन कमाने वाली हैं। आप अव्वल दर्जे की खुशामदी होंगी। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ साधना करेंगी। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगी। आप शराबती और मतलब परस्त होंगी। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगी। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगी। व्यापार करने से घर के लोगों की भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव की है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका जीवन अच्छा बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम आपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगी। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता/ससुर के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चौड़े पत्तों का वृक्ष या तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :

1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी कुंडली के बारहवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप उत्तम ज्ञानी होंगी। आप दूसरों का भला करेंगी इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपका अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत होगा और पूजा-पाठ से भी आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपको धन से बहुत लगाव नहीं रहेगा आप त्यागी महिला होंगी। अपार धन आपके पास रहेगा मगर आप धन के पीछे नहीं भागेंगी। आपमें सेवा भावना रहेगी। आप ध्यान-समाधि की आदत डालें तो आपके घर सोने की वर्षा होगी। आप हृदय से वैरागी और ज्ञानी होंगी। आपका साधू जैसा स्वभाव होगा। आपका धन शुभ कर्म में खर्च होगा। आप खर्च के बोझ से दुःखी नहीं रहेंगी। बुरा कर्म आप नहीं करेंगी, यदि बुरे काम करने की प्रवृत्ति हुई तो बहुत नुकसान होगा। यदा-कदा औलाद के विषय में चिंता होगी। आप धन-दौलत के संबंध में राजा जनक की तरह त्यागी होंगी। गृहस्थ में हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपका परिवार बढ़ेगा, खुशहाल रहेगा। खुद भी निश्चित रहेंगी। आप किसी को आर्शीवाद दें तो उसको आपका आर्शीवाद फलेगा। पर आपका किसी को दुर्वचन नहीं लगेगा। दलाली का काम लाभकारी होगा।

यदि आपने जनता विरोधी कार्य किये, झूठी गवाही दी या किसी से धोखा फरेब किया, धन के लिये किसी के आगे हाथ फैलाने की आदत रखी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप दूसरों को सता कर स्वयं कष्ट और मुसीबत में पड़ जाएंगी। आप अधिक न बोला करें यह आपके लिए अच्छा नहीं है। आध्यात्म का मार्ग नुकसानदेह रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ऐसे काम न करें जिससे आपका विरोध हो।
2. किसी के साथ धोखा-फरेब न करें।

उपाय :

1. गुरु/पिता-ससुर की सेवा करें।
2. पीपल को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगी। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगी। पति के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा ही होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपके पति आड़े समय में मददगार होंगे। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपके पति के हाथ में होगी। आप पति की इज्जत करेंगी इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। पति का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगी। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम में बिताएंगी। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगी। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगी। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगी फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पति से अच्छे संबंध न रखे या पति की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगी। पति बीमार रहा करेंगे तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का फल आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पति के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगी। आप मनमौजी होंगी। आर्थिक हालात सामान्य रहेंगे। भागीदारी के काम से अधिक लाभ होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करती हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगी, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठ कर करने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यदि आपने अपनी रिहाईश, गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुई, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता/ससुर का सुख कम ही प्राप्त होगा। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। भोजन में शराब-मांस, अंडे का सेवन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढ़ापे में आंखों की दृष्टि कमजोर हो, ऐसी आशंका है। आपका अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से, बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर घर बना लेंगी तो असमय मौत को बुला सकती हैं। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगी। अगर सरकारी अधिकारी हुई तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा, या आकाश पर बादल छाये होंगे ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम रहेगा, जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने के घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिये दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगी। आपको संतान सुख अवश्य मिलेगा अच्छी या बुरी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता/सास और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद पिता से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली के जेर चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर

से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता/ससुर के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव की होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान करें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगी। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ेत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात की पक्की होंगी। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगी फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगी। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपके पति के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि 40 वर्षों तक आने वाले समय के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परपुरुष गमन किया। अपने पति से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरू हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठ वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन पति और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगी। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगी। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जून के बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगापरन्तु 02 जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप समान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी जिससे आप मानसिक रूप से अशांत तथा असन्तुष्ट रहेंगी। साथ ही धनाभाव से भी आप दुःखी रहेंगी। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिन परिश्रम के उपरान्त भी असफलता ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राह्मणों के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखेंगी। आपके मित्रों तथा सम्बन्धियों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं आपकी इच्छाएं इस समय पूर्ण नहीं होंगी।

साथ ही इस मास में आप वातोत्पन्न रोगों से दुःखी रहेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके साथ ही आग के द्वारा भी हानि की सम्भावना रहेगी। अतः सोच समझ कर सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सुख तथा शान्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आपके शत्रु आपसे पराजित, चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोंतो में भी वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप सफलता प्राप्त करेंगी। फलतः इस समय आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोंतो से भी आप लाभार्जित करने में सफल रहेंगी। आपके भाग्योदय संबंधी कार्य भी इसी मास में सम्पन्न होंगे तथा विलम्बित महत्वपूर्ण कार्यों में भी सफलता मिलेगी। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनसे आप वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। अपने सांसारिक कार्यों को भी आप सफल बनाने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या स्वर्णादि के आभूषणों को प्राप्त करने में भी सफल हो सकती हैं। इस प्रकार आप सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी परन्तु अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप में उत्साह के भाव की प्रबलता रहेगी तथा उत्साह पूर्वक धनार्जन करेंगी। साथ ही परिवार एवं समाज से आप वांछित सम्मान अर्जित करेंगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। मिष्ठान्न के प्रति आपकी अधिक इच्छा रहेगी। साथ ही स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा तथा शरीर में बल की वृद्धि होती रहेगी। इस मास में शत्रुओं को पराजित तथा भयभीत करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पति एवं पुत्र से आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा तथा नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा धैर्य पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सुख एवं शान्ति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगी। परिवार तथा सामाजिक जनों के मध्य आप की यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको वांछित सम्मान एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित सहयोग मिलता रहेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इस मास में आप का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय मिलेगा फलतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न हो जाएंगे। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोंतो से भी आप लाभार्जन करेंगी। अतः मानसिक रूप से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं अपनी बुद्धिमता से धन एवं सुख साधनों को प्रचुर मात्रा में अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म में भी आपकी श्रद्धा बढ़ेगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल ही अधिक प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय आप शरीर से अस्वस्थ रहेंगी तथा विविध प्रकार से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही

आपके शत्रु बलवान रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। अतः मन से भी आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगी। इस समय आपके व्यापार में न्यूनता आएगी तथा नौकरी आदि में समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय परिवर्तन हो सकता है या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। साथ ही अन्य सामाजिक तथा पारिवारिक जनों से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद तथा वैमनस्य का भाव विद्यमान रहेगा। इससे समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी तथा शरीर में कोई नवीन रोग उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता तथा चतुराई से धनार्जन एवं सुख संसाधनों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु रहेंगी एवं समाज में यथोचित सम्मान तथा आदर प्राप्त करने में न्यूनाधिक मात्रा में सफल हो सकेंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सफल बनाने में समर्थ रहेंगी। साथ ही विविध प्रकार के द्रव्यों का भी आप अर्जन करेंगी। पुत्र संतति से आप को प्रसन्नता प्राप्त होगी तथा उनसे आप सन्तुष्ट रहेंगी। ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आपकी रुचि रहेगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आप की प्रभुता में भी वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा पारिवारिक जन आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय सिद्ध होंगे तथा बाहर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगी जिससे समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इस मास में धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी एवं सभी लोगों से आप उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त करके अपना समय व्यतीत करेंगी।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता बनी रहेगी। शत्रु प

क्ष इस मास में आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा व्यवधान उत्पन्न करेगा जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता है। इस समय में आप 1 उच्चाधिकारी वर्ग तथा सरकार की आज्ञा की उपेक्षा न करें तथा विद्रमता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दण्डित भी हो सकती हैं। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। फलतः आर्थिक क्षेत्र में भी आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपके सम्मान को ठेस पहुँचेगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपका मनमुटाव रहेगा तथा आपकी इच्छाएं भी अपूर्ण रहेगी अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य आप समय समय पर शुभ फल भी अर्जित करेंगी। अतः आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकती हैं।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इस समय आप पति तथा बन्धु वर्ग से सामान्य सहयोग ही अर्जित कर सकेंगी। साथ ही शत्रु पक्ष भी आपके लिए व्यर्थ की समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप इनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर से आप दुर्बल रहेंगी। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे धनाभाव के कारण आपको कष्टानुभूति होगी। इस मास में आपका उत्साह भी अल्प रहेगा तथा मन में लोभ की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी। मित्र तथा बन्धुओं से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा इनसे आपका मन मुटाव रहेगा। साथ ही मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के सदृश व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त परिवार तथा समाज में अन्य लोगों से आपका विवाद तथा वैमनस्य भी चलता रहेगा। अतः संयम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग पाएंगी तथा अपने बुद्धिचातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य में सफलता प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धन तथा सुख अर्जित करने में न्यूनाधिक रूप से आप सफल रहेंगी तथा अल्प मात्रा में मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल अधिक तथा शुभ फल अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी तथा उनसे आप अनावश्यक कष्ट भी प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः इससे सावधान रहें। इस मास में आपका धन अनावश्यक रूप से व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से संकट में पड़ेंगे।

सकती हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में इस समय व्यवधान होंगे तथा परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगी। धर्म के प्रति सामान्यतया आपका उपेक्षा का भाव रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों की अल्प मात्रा में ही सेवा करेंगी। इस ससमय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में कमजोरी रहेगी। साथ ही इस मास में दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यों में भी आप असफलता प्राप्त करेंगी एवं मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा। फलतः मानसिक रूप से आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगी। अतः संयम तथा बुद्धिमता पूर्वक इस मास को व्यतीत करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। अतः पति से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। इस समय अपने बुद्धिचातुर्य से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करेंगी तथा धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही धर्म में भी आस्था रहेगी तथा समाज में आप सम्मान अर्जित करेंगी।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी साथ ही अल्प मात्रा में अशुभ फल भी मिलते रहेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं सम्मान भी अर्जित करेंगी। आपसे वे सभी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। फलतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में यथासमय सिद्ध हो जाएंगे। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमपूर्वक उनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा लाभदायक यात्रा के भी योग बनेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा समाज में भी पूर्ण आदर प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोगों से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी अन्य कारण से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत सफलता अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। फलतः आप उन्नति की ओर

अग्रसर होंगी। अपने बन्धुओं तथा मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही समाज में अन्य लोगों के परोपकार संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी सेवा करेंगी। इस समय समाज में सर्वत्र आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आपको नवीन गृह की प्राप्ति या कोई स्थान परिवर्तन हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी तथा आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आपका यह समय व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पुरुष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सम्पन्न हो जाएंगे। इससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप रुचि शील रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग का आपको सहयोग प्राप्त होगा तथा परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे। इस समय आपको मनोच्छिन्न पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चित रहेंगी तथा समाज में सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके रुके हुए कार्य भी इसी मास में पूर्ण होंगे।

साथ ही इस समय शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत तथा वातोत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको किसी प्रकार क्षति हो सकती है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा। इस समय आप व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही सामान्य रूप से शारीरिक अस्वस्थता के कारण भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम तथा पराक्रम प्रदर्शित करने के बाद भी अल्पमात्रा में ही सफलता अर्जित कर सकेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव नहीं रहेगा एवं अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि की सम्भावना हो सकती है। इस समय मित्रों एवं सम्बन्धियों के साथ परस्पर सम्बन्धों में तनाव भी हो सकता है। साथ ही नौकरी या व्यापारादि कार्यों में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुपक्ष से भी चिन्ता एवं भय नित्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी जिससे आप मानसिक रूप से बैचेन या असन्तुष्ट रहेंगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। अतः आप पति एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा नवीन वस्त्रों तथा आभूषण आदि से भी आप युक्त हो सकती हैं। अतः आपका यह मास सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी एवं शत्रुवर्ग आपसे भयभीत होगा। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से इस समय आप सम्मान अर्जित करेंगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। साथ ही कार्य के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप इस मास में समाज तथा बन्धु वर्ग से पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही भाग्यबल से आपके रुके हुए कार्य भी सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा न्यूनाधिक अशुभ फल भी प्राप्त हो सकते हैं। इससे आप गर्मी तथा पित्त से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से आपमें रक्त विकार भी उत्पन्न हो सकता है। अतः शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ

ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा मानप्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा बन्धुवर्ग एवं मित्रों से भी आप पूर्ण सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय उच्चाधिकार प्राप्तवर्ग से आश्रय प्राप्त करेंगी एवं मिष्टानोपभोग करने में भी रुचिशील रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की इसमें वृद्धि होती रहेगी। इस समय शत्रु भी आपसे पराजित होंगे एवं भय की भी वे अनुभूति करेंगे। साथ ही व्यापार आदि कार्यों में भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पति से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा पूर्णरूपेण धनलाभ अर्जित करके धर्म का अनुपालन करेंगी तथा समाज में कीर्ति तथा सम्मान भी प्राप्त होगा।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही समाज से भी यश प्राप्त करने में आप सफल सिद्ध होंगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा का भाव उत्पन्न होगा तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस समय आप दूसरे लोगों की भलाई करने की भी इच्छुक रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इस कार्य को सम्पन्न करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा रहेगा एवं उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से आप यश प्राप्त करेंगी एवं आपकी समाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। भाइयों से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का सुख पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगी अन्य मित्रों एवं सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से पूर्ण यश प्राप्त करेंगी।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपको मिले जुले फल प्राप्त होंगे। अतः शरीर से आप अस्वस्थ रहेंगी एवं अन्य प्रकार से कष्टानुभूति भी प्राप्त कर सकती हैं। शत्रुओं से इस मास आपको कई प्रकार से कठिनाइयां तथा असुविधाएं उत्पन्न होंगी फलतः भय का वातावरण विद्यमान रहेगा। साथ ही पारिवारिक एवं बन्धुजनों से आपसी सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न होंगे जिससे परिवार में अशान्ति का वातावरण रहेगा फलतः मानसिक रूप से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपके कार्यक्षेत्र में इस मास रुकावट आसकती है या कार्य में परिवर्तन आ सकता है। साथ ही समाजिक जनों से अनावश्यक विवाद होने के कारण आपकी प्रतिष्ठा में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि एवं शारीरिक रुग्णता भी हो सकती है।

लेकिन इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता एवं मन में सन्तोष तथा बुद्धि की भी वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपका

सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धार्मिक कार्यों में भी आप रुचिशील रहेंगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त होगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप पुत्र सुख तथा अन्यप्रकार से द्रव्यलाभ भी अर्जित करेंगी। इस महीने में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसको मन से स्वीकार करेंगे। इस समय आप सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को भी सम्पन्न करेंगी तथा शुभ समाचार भी प्राप्त होते रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजन करेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ अर्जित करेंगी। इस समय आपकी अधिकांश मानसिक चिंताएं दूर होंगी एवं समाज से पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकती हैं तथा अपने कार्य क्षेत्र में भी उन्नति प्राप्त करेंगी। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकती हैं साथ ही नवीन वस्त्रों तथा अन्य प्रकार के सुखों को भी अर्जित करने में सफल रहेंगी।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपका शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगी साथ ही शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे मानसिक परेशानी तथा भय उत्पन्न होगा। अपने उच्चाधिकारी वर्ग की आप इस मास में उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकती हैं। साथ ही चोरों से भी सावधान रहें। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में व्यय होगा। इस समय आप कोई कठोर कार्य करने की दिशा में भी तत्पर हो सकती हैं। ऐसे कार्यों से आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी अनावश्यक तनाव उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त आशाओं में भी सामान्यतया असफलता ही मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। जिससे आपको पति से सुख, बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार से सुख प्राप्त होंगे। साथ ही धार्मिक कृत्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इस समय पति या बन्धुवर्ग को कष्ट हो सकता है तथा शत्रु भी कई बार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। आप में उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी एवं धन भी अधिक रूप में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक या मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप

अस्वस्थता की अनुभूति करेगी तथा लोभ के भाव की भी आप में प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। इस मास में आपके मित्र भी शत्रुवत आपसे व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से भी संघर्ष या वादविवाद हो सकता है। अतः धैर्यपूर्वक समस्याओं का सामना करने से ही आप शान्ति तथा सुख प्राप्त कर सकती हैं।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप पति से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा बुद्धिमता से अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रुचिशील रहेंगी।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फलदायक सिद्ध होगा। इससे आपको शत्रु पक्ष से नित्य भय बना रहेगा एवं घर में चोरी आदि भी हो सकती है। साथ ही आपका व्यय भी अधिक मात्रा में होगा तथा धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। इस समय शारीरिक रूप से भी आप विविध प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। फलतः आपके शारीरिक बल में अल्पता आएगी। इस मास में आप घर से बाहर देश विदेश की यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी यदाकदा कष्ट प्राप्त होंगे तथा मुकद्दमे आदि में अनावश्यक रूप से धन का व्यय होगा फलतः मानसिक असंतोष भी बना रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय राजदरबार से भय रहेगा तथा आशाओं में भी विशेष सफलता प्राप्त होने में कठिनाई होगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त सम्बन्धी रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी भी प्रकार से रक्त विकार होने की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करेंगी। इस समय आप लाभार्जन करने में पूर्ण सफल रहेंगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सन्तुष्ट रहेंगी एवं इनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं श्रद्धापूर्वक आप इनका सम्मान एवं पूजन करेंगी। इस मास में आपको समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों में भी सफलता मिलेगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगी तथा मित्र एवं सम्बन्धियों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र सम्मान एवं यश प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा संतति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा स्वर्णादि के आभूषण से भी सुशोभित हो सकती हैं। अतः इससे आपको पूर्ण रूप से मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेगा। मित्र एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगी एवं यत्न पूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा इनका सम्मान एवं पूजन विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। सामाजिक जनों से भी आप प्रतिष्ठा एवं अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय आप विविध आय स्रोतों से धनार्जन करेंगी तथा नवीन स्थान या आवास की भी प्राप्ति कर सकेंगी। साथ ही पिछले महीने की असफल आशाएं भी आपकी पूर्ण होगी। अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

लेकिन शुभ फलों के साथ साथ इस मास में यदाकदा अशुभ फल भी होते रहेंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी धन हानि का योग बनता है। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की ही अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। इस समय आप सौभाग्य से परिपूर्ण होकर पुरुष वर्ग से पूर्ण सम्मान तथा लाभार्जन करने में सक्षम रहेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी धनार्जन करने में सफल रहेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन भी प्रसन्नता से परिपूर्ण रहेगा तथा ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित करेंगी। मित्र एवं सम्बन्धियों से भी आपको सहयोग तथा लाभ अर्जित होगा। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करने में भी समर्थ होंगी। संतति पक्ष से भी आप सुखी एवं प्रसन्न रहेंगी तथा समाज से पूर्ण मान एवं सम्मान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करेंगी। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

लेकिन शुभ फलों के साथ साथ इस मास में यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप वातादि रोगों से भी पीड़ित हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का भी योग बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधों में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्टूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मई से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपके जीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो उनकी संगत गलत हो सकती है। 5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच-बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे परन्तु 23 अक्टूबर के बाद आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं

होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

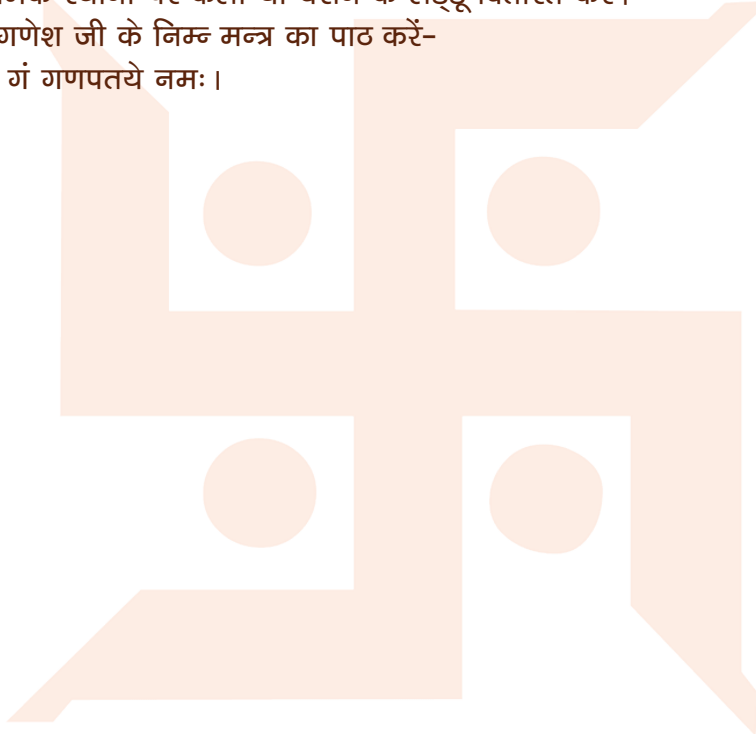
12 अगस्त से द्वादशपर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ गं गणपतये नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा में वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परन्तु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि

क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद-विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि सप्तम भाव में और सिंह राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण व्यापार में नए साझेदार मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

अष्टम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किए अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। किसी को लंबे समय से दिया हुआ धन वापस मिलने का योग है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

6 अप्रैल के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। माता पिता की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाए बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बंधित है धोखा दे

सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास-ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। परन्तु दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। आपकी दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। अप्रैल के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिए समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आप के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे



FUTUREPOINT
Astro Solutions



निकलना चाहते हैं, तो आपको अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है इस उद्देश्य को मानेंगे और दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको राहु की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अचानक आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

27 अगस्त के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान के गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है। 27 अगस्त के बाद लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 15 अप्रैल से समय और भी अच्छा हो रहा है।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

15 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का बहुत ही शुभ समय चल रहा है। आपके बच्चे अनुकूल कार्य करेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक स्थिति को लेकर ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव से भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

27 अगस्त के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अष्टम स्थान का शनि कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही न करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत अच्छा है। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 27 अगस्त के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 15 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें और सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें (तांबे की लोटे में चावल डालकर)।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ ऐसी परेशानी आ सकती है जिसका समाधान निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में एहतियात बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप लेन-देन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। फिर भी जोखिम उठाना कदापि उचित नहीं होगा। शेयर बाजार से दूरी बनाना निश्चित तौर पर आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

26 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो सकती है। सितम्बर के बाद धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी उम्मीद रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

26 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे, जिससे अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

26 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक कोई बड़ी बीमारी दे सकती है। इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। गुरु ग्रह का गोचर आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

26 अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। जिन लोगों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको सितम्बर तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन नहीं लगेगा। आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है। इस अवधि में आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से प्रत्यक्ष एवं गुप्त शत्रुओं की वृद्धि होगी। वे आपको किसी षड्यन्त्र में फंसाने का प्रयत्न करेंगे और आप उनके बीच फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। परन्तु 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके विरोधी एवं प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आपकी सफलता का मार्ग खुलेगा।

अक्टूबर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। फिर भी किसी पर अत्यधिक विश्वास करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा क्योंकि अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में रोग होने के कारण भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकते हैं। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर-परिवार, समाज

मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लेना होगा। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। 11 मई से मित्रों व पत्नी के साथ संबंधों में सुधार होगा।

तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे खुशनुमा माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई से समय उत्तम हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस वक्त बच्चों पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 11 मई से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे।

7 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंता जनक बनकर सामने आ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं है। परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा परन्तु आप अपने लक्ष्य के पथ

पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को लेकर आगे बढ़ते रहेंगे। 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप खुश नहीं रहेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मई के बाद छोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यावसायिक यात्राएं होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अक्टूबर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 11 मई से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह स्थित होने से मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुसी के साथ मनाएं।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में मन्द गति से वृद्धि होने की संभावना बन रही है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय काफी शुभ है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 मार्च के बाद किसी के साथ मिलकर कार्य करने का प्रबल योग बन रहा है। लेकिन यह साझेदारी आपके लिए अच्छी नहीं रहेगी। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

5 अप्रैल से अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास अधिक लगन से करें। देर से ही सही आपको इस संबंध में सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थितियों को सरलता से संभालने की आपकी कला का परिणाम, प्रशंसा तथा वित्तीय लाभ हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय अधिक अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्च आ सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा इस समय के अंतराल में अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं। 3 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। पंचमस्थ राहु के कारण पुत्र के रोग-व्याधि में भी आपके पैसे खर्च होंगे। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 4 नवम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। पारिवारिक विषयों को लेकर चिंताएं बनी रहेंगी। नवमस्थ शनि के कारण पिता जी के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। जीवनसाथी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। परिवार का सहयोग आपके साथ पूरी तरह से बना हुआ है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आरेंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 4 नवम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। 7 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए ज्यादा खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। 4 नवम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। अर्थात् वर्षान्त आपके लिए श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए साल का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। छठे स्थान के राहु अचानक प्रतियोगिता में उन्नति के मार्ग खोलेंगे तथा आपको प्रतियोगिता में इच्छित सफलता मिलेगी। 7 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। वर्ष का उत्तरार्द्ध उनके लिए काफी श्रेष्ठ है। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। 5 अप्रैल के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी आन्दन लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्यता व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। 7 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी आस्था एवं विश्वास में कमी कर सकता है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद व्यावसायिक स्थिति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। काम धंधे में भी रुकावटें आ सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लेकिन 28 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे। आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलेगी तथा 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योंकि 6 अप्रैल से आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। इस समय के अंतराल में आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले में सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 दिसम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके माता पिता जी

के लिए भी समय शुभ नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। दोस्ती में भी दरार आ सकती है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

28 जून से समय अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। संतान संबंधित चिंताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 28 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो वर्षान्त में विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

28 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 28 जून के बाद नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ आपकी धार्मिक यात्राएं भी खुब होंगी।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह

मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 28 जून से समय फिर से शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार को व्रत रखें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अनुकूल रहेगा। व्यापारी बंधु अपनी कर्तव्य-निष्ठा व परिश्रम के कारण अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल रहेंगे। लंबे समय से रुके हुए आपके कार्य अब तेज गति पकड़ेंगे। आप नए कार्यों में हाथ डालने के लिए आतुर रहेंगे। लेकिन जल्दबाजी करने से बचें व सोच-समझकर धन निवेश करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्षारम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। स्थानान्तरण का भी योग बन रहा है। भूमि, भवन व वाहन से जुड़े लोगों को 6 मई के बाद नुकसान हो सकता है। अतः खरीद-बेच करते समय कागजी कार्यवाही पर पूर्ण ध्यान दें।

मई से जुलाई तक अपने सहकर्मियों के साथ उचित तालमेल बना कर चलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। कार्यस्थल में व्यर्थ वाद-विवाद से बचें। वर्षान्त आपके लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। अपने उच्च अधिकारियों की तरफ से आपको मान-सम्मान, पुरस्कार या शाबाशी मिल सकती है। शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको वांछित पद की प्राप्ति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। आय में निरंतरता बनी रहेगी परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। 6 मई के बाद जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश करने व किसी को पैसे उधार देने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा।

उत्तरार्द्ध में हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति करा सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। माता की बीमारी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु घर परिवार के लिए अच्छा नहीं है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती हैं तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर

प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपके सम्बन्धों में खटास आ सकती है। मई से जुलाई तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके संबंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजित पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 6 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्षान्त बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस अवधि में उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत के लिए अच्छा है। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। 6 मई के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

25 सितम्बर के बाद चोट व दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 मई के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 25 सितम्बर के बाद वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से इस वर्ष छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

सितम्बर के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें तथा किसी के साथ मित्रता न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 25 सितम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष अति उत्तम होगा। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। हर हाल में आपको लाभ होने वाला है। चतुर्थस्थ राहु के कारण वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यावसायिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे। इसके साथ ही कारोबार में पूंजी लगाने वाले लोग भी मिलेंगे। कुल मिलाकर आपके लिए समय अनुकूल है, उसका लाभ उठाएं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा। नई व बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी ख्वाहिशें पूरी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन 22 जून के बाद तीव्र गति से लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। आपकी राह की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्वाध रूप से होगा। लेकिन इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में कुछ आधारभूत बदलाव करने होंगे।

22 जून के बाद आपकी जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। कुल मिलाकर आर्थिक रूप से यह वर्ष बेहतर साबित होगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। 22 जून तक परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

22 जून को राहु ग्रह के गोचर के साथ परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल

बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर होंगे तथा समय आनन्द के साथ व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

आपके बच्चे हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने का पूर्ण योग बन रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपकी सेहत अच्छी रहने वाली है। कोई बड़ी समस्या नहीं की उम्मीद नहीं है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारी परेशान कर सकती हैं, परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन-सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता के तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यधिक अनुकूल है। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है।

22 जून को तृतीय स्थान में राहु का गोचर प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको

इच्छित लाभ मिलेगा ।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षा व साक्षात्कार के लिए यात्रा हो सकती है।
आध्यात्म की प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते हैं। देश विदेश घूमने के अवसर
भी मिलेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे। जैसे अखण्ड रामायण का पाठ,
माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि, जिससे आपको समाज में
ख्याति प्राप्त होगी एवं आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

दुर्गा बीसा यंत्र धारण करने से चतुर्थस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली
परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक
जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप नई ऊँचाईयों को छूँगे। विशेषतः भविष्य में आर्थिक उन्नति के लिए अभी धन का निवेश करेंगे जिसका आने वाले भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। दशमस्थ शनि के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे, मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन 30 जुलाई के बाद से समय आपके अनुकूल हो जाएगा। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें तथा अपने शत्रुओं से सावधान रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक खर्च वाला होगा। इस समय धन का आगमन तो होगा परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय भी होगा। साथ ही जो व्यक्ति मकान, भूमि या वाहन की सोच रहे हैं उनके लिए यह समय ज्यादा खर्च वाला है। ऋण के पुनर्निर्माण पर भी खर्च बढ़ेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से उत्तम रहेगा। धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। विवाहित लोगों के लिए संतान प्राप्ति का योग बन रहा है। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रभावित रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं आ सकती हैं। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनके उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। इस समय के अंतराल में उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण आपको पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी।

आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते

हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा आप किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। अपने कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

आपके पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग हैं। परिवार में किसी यादगार यात्रा एवं सुखमय यात्रा का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यशालाओं जो धर्म पर आधारित हों उनमें भाग लेंगे। साथ ही वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निर्माण हेतु दान भी करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने पूजाघर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 16 फरवरी के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

नौकरी करने वाले लोगों की पदोन्नति का पूर्ण योग बन रहा है। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे।

धन संपत्ति

शुरु के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आर्थिक स्थिति के लिए अनुकूल बना रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय के मार्ग की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। 16 फरवरी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। लेकिन आंख बंदकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है, क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में इस वर्ष अधिक खर्च होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा इत्यादि से जुड़े हैं तो इस वर्ष ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी तरह का जोखिम न लें।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं, टालने की कोशिश करें। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से

परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद करेंगे। आपके भाई-बहन आपको आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। 16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी शिक्षा के स्तर में सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष विवाह होने का पूर्ण योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के दो माह जनवरी व फरवरी छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में खूब मन लगेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ शारीरिक कष्ट हो सकते हैं तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस वर्ष आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रही है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीक व विज्ञान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष सफलता के योग बने हुए हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

नौकरी व करियर में अधिकारी से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई तकनीक, हुनर व मशीनरी का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा इसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

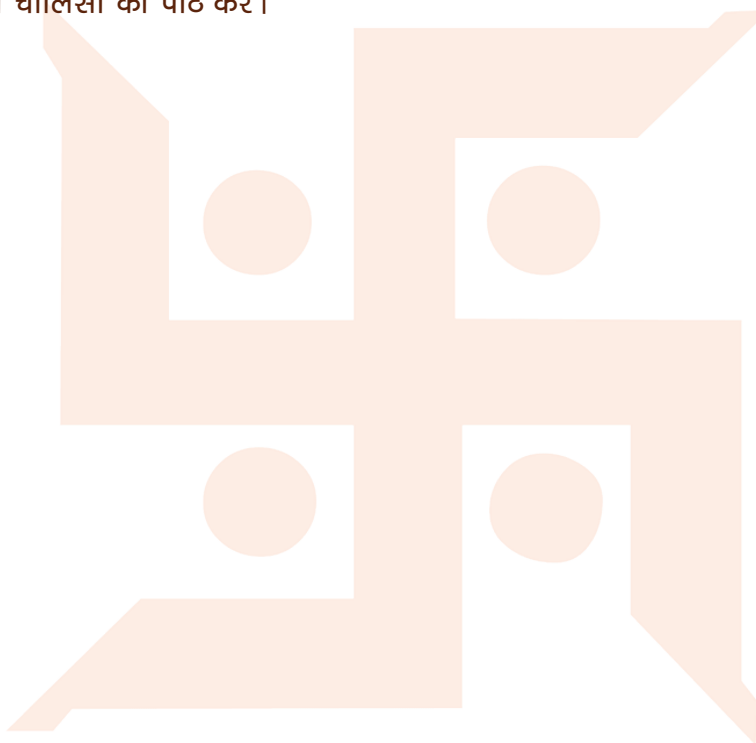
वर्षारम्भ में ही नौकरी करने वाले व्यक्तियों का तबादला होगा तथा यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आप विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

16 के बाद धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यापारिक या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

16 फरवरी के बाद आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

- प्रतिदिन गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजन घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालिसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत ही अनुकूल है, अतः आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। लग्नेश एवं धनेश शनि एकादश स्थान में स्थित हैं जो कि उच्चपद की प्राप्ति, मनोवांछित स्थान परिवर्तन आदि का योग बना रहे हैं। साझेदारी में व्यवसाय करने की संभावनाएं बलवती हैं। आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे।

व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। लेकिन साझेदारी में कार्य करने वाले को वांछित सफलता नहीं मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए समय बहुत अनुकूल है। पूरे वर्ष धनागमन का स्रोत बना रहेगा। यदि किसी नये व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों में भी धन प्राप्ति के योग बनेंगे। आपके अंदर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय की राह में सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। आंख बन्दकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ रहने वाला है। आय के साधन बढ़ेंगे तथा धन की बचत होगी। उसके साथ-साथ पैतृक संपत्ति मिलने के योग भी बने हुए हैं। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वास्तुओं की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव आएंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। लेकिन अपने तरफ से इसे टालने की पूरी कोशिश करें नहीं तो स्थिति ज्यादा खराब हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें नहीं

तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए शुभ रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण परिवार में सुख शांति एवं मधुरता बनी रहेगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, परन्तु सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद करा सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी उच्च शिक्षा में सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चे किसी नवीन भवन के निर्माण या वाहन क्रय के बारे में योजना बनाएंगे। आपकी द्वितीय सन्तान के धनार्जन व धन संचय के लिए यह समय विशेष अनुकूल होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप संतुष्ट रहेंगे। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपकी कार्य क्षमताओं का विकास होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

15 जून को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन अचानक आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस अवधि में आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रहा है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मनोबल में वृद्धि होगी। अगर आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो मेहनत के बल पर नई उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

लग्नेश शनि की एकादश भाव में स्थिति के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्याजन करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा, परन्तु जलीय व सामुद्रिक स्थलों की यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बनी रहेगी। आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में व्यतीत होगा, जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन इत्यादि। सभी धार्मिक कार्यों में आपको परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हनुमानजी की आराधना करें तथा अपनी दिनचर्या को सही रखें तथा आलस्य का त्याग कर समय का सदुपयोग करें।

- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(22/07/2024 - 23/07/2031)

मंगल की महादशा 22/07/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 23/07/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम और सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा

प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होंगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(18/12/2024 - 06/01/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 18/12/2024 को प्रारंभ होकर 06/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर से सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शत्रुओं से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(06/01/2026 - 13/12/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ होकर 13/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपके शत्रु परास्त होंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। धार्मिक स्थलों की यात्रा होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, कार्यालय में सुविधाएं बढ़ेंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। अच्छे मित्र बनेंगे। अचानक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी को चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे; उन्हें घरेलू सुख मिलेगा। माता की लंबी यात्रा हो सकती है; खर्च बढ़ सकते हैं।

आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, स्थान में परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं और मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर आंखों और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र और हल्दी का दान करें।

अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(13/12/2026 - 21/01/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/12/2026 को प्रारंभ होकर 21/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप विवाह द्वारा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार या विरासत से भी धन आ सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। परिवार की जिम्मेदारियों को ठीक प्रकार से निभाएंगे। घर में शांति रहेगी। खानपान में देखभाल और नियंत्रण रखें। खुद की कमाई आमदनी भी पर्याप्त होगी। संतान से सुख मिलेगा। प्रसिद्धि और उच्चपद का योग है। प्रोन्नति के साथ तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता अध्यात्म में रुचि रखेंगे। माता को पहले किये गये निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन सब बाधाओं को पार कर लेंगे, उनकी प्रोन्नति हो सकती है।

आपकी संतान को नींव मजबूत करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति से आय हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधी परास्त होंगे, सफलता मिलेगी। व्यापारियों और परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। नेत्ररोग और पित्त के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्र और सरसों का तेल दान में दें।

अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(21/01/2028 - 18/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 21/01/2028 को

प्रारंभ होकर 18/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में बहुत उन्नति करेंगे। विज्ञान, संचार माध्यम और व्यापार में लाभ होगा। उच्चाधिकारी आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति मिल सकती है, निवास सुविधाजनक होगा। पराविद्या में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को सब सुख उपलब्ध रहेंगे। पिता धन कमाएंगे; घर पर सुविधाएं रहेंगी, साहित्य से जुड़ सकते हैं। माता को भागीदारी में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता खूब उन्नति करेंगे। व्यापारियों को निवेश करना पड़ सकता है।

स्नायुतंत्र और त्वचा के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(18/01/2029 - 16/06/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/01/2029 को प्रारंभ होकर 16/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। विवाह हो सकता है। आप बहुत लोगों की मदद करेंगे। कोई भी निर्णय लेने से पहले गहराई से विचार करेंगे। अध्यात्म और ज्ञानार्जन में रुचि होगी। उच्चपद मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी के सम्मान और पद में वृद्धि होगी। आपके पिता को हर प्रकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, लोकप्रियता मिलेगी। आपकी माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; वे प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा; मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके पिता से मधुर संबंध रहेंगे।

आपकी संतान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प का परिचय देगी। अगर वे सेवारत हैं तो धनी बनेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ के अवसर मिलेंगे। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। उदरशूल आदि की शिकायत हो सकती है। इस पर गंभीरता से ध्यान दें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल और सतनजे का दान दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(16/06/2029 - 16/08/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 16/06/2029 को प्रारंभ होकर 16/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मितव्ययता द्वारा धन संचित करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। आप दयालु हैं। दान-धर्म में रुचि लेंगे। एकांत में किया कार्य लाभकारी होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। मुकदमे में सफल होंगे। नौकरी में कार्यालय उत्तम मिलेगा।

कार्यक्षमता बढ़ने से सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आपके जीवनसाथी को कार्यालय उत्तम मिलेगा। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त होंगे। माता को सुख, प्रसन्नता, यात्रा, ज्ञान में वृद्धि का योग है। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, व्यापार और विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, सम्मानित होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और घरेलू सुख का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी या अनुबंध से लाभ होगा। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी कठिन स्पर्धा के बावजूद लाभ उठाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पैर और नेत्रों की व्याधियों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(16/08/2030 - 22/12/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 16/08/2030 को प्रारंभ होकर 22/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि-भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। भाई-बहनों को अप्रत्याशित लाभ, विरासत या बीमे से धन प्राप्ति के संकेत हैं।

आपकी संतान शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगी, उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो औषधि और खाद्य सामग्री से संबंधित कार्यों में सफलता संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद, धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार, थकान आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - चन्द्र
(22/12/2030 - 23/07/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/07/2024 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 22/12/2030 को प्रारंभ होकर 23/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आप समृद्धि और सुख-सुविधाएं प्राप्त करेंगे। अचल संपत्ति और खेती से धनलाभ हो सकता है। वाहन क्रय कर सकते हैं। निवासस्थान बदल सकते हैं। कार्य में उच्चकोटि की सफलता के कारण सम्मानित होंगे। समाज में कल्याणकारी कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सफलता, धन, प्रसिद्धि मिलेगी। आपके पिता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, समाज सेवा करेंगी। भाई-बहनों को घरेलू सुख रहेगा, स्वास्थ्य उत्तम होगा और विस्तृत कार्यों में महारत होगी। आपकी संतान को सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो खर्चें बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा और उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदार से लाभ होगा। व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। श्वसनतंत्र और छाती का मामूली रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

महादशा :- राहु
(23/07/2031 - 22/07/2049)

राहु की महादशा 23/07/2031 को आरम्भ और 22/07/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और

साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(23/07/2031 - 04/04/2034)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 04/04/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(04/04/2034 - 28/08/2036)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 04/04/2034 को प्रारंभ होकर 28/08/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धर्म के आलोचक हो सकते हैं; पापकर्म में रुचि हो सकती है। अय्याशी का जीवन व्यतीत कर सकते हैं, जिससे बाद में पछताना पड़ सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - शनि
(28/08/2036 - 05/07/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 28/08/2036 को प्रारंभ होकर 05/07/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में स्थित शनि दीर्घायु का परिचायक होता है।

इस अवधि में आप कर्मठ होंगे। नेत्रदोष से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। निम्न स्तर के विपरीत लिंग के व्यक्ति से मित्रता हो सकती है। श्वसन तंत्र के रोगों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- राहु - बुध
(05/07/2039 - 21/01/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/07/2039 को प्रारंभ होकर 21/01/2042 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - केतु
(21/01/2042 - 08/02/2043)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन

होगी जो आपके लिए 21/01/2042 को प्रारंभ होकर 08/02/2043 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन विचलित हो सकता है। विषय-वासनाओं में आपकी रुचि आवश्यकता से अधिक हो सकती है। आपको और आपके जीवनसाथी को कोई बीमारी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों में और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(08/02/2043 - 08/02/2046)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2031 को प्रारंभ होकर 22/07/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 08/02/2043 को प्रारंभ होकर 08/02/2046 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ऐशो-आराम के पीछे बेचैन रहेंगे मगर यह बहुत परिश्रम के बाद ही उपलब्ध हो सकेगा। निम्न कोटि के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने की कोशिश कर सकते हैं। विषय-वासनाओं की तृप्ति के लिए पापपथ पर चल सकते हैं, जिस कारण जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

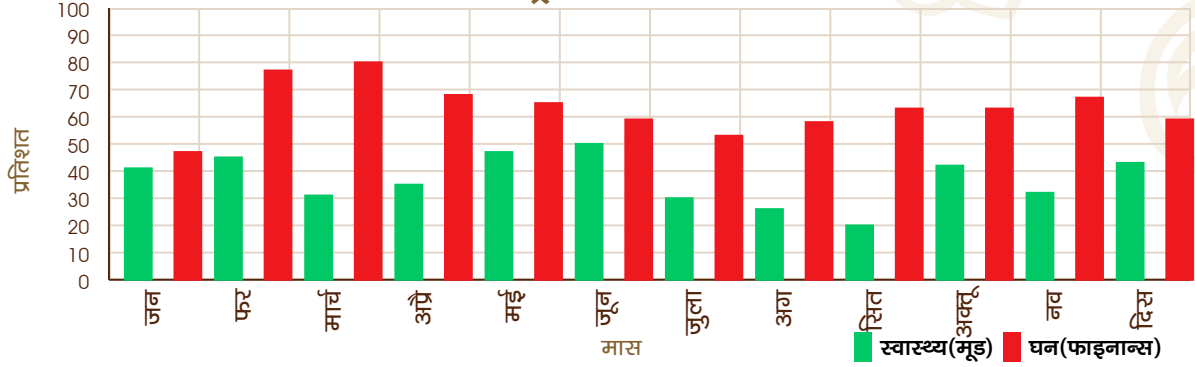
एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

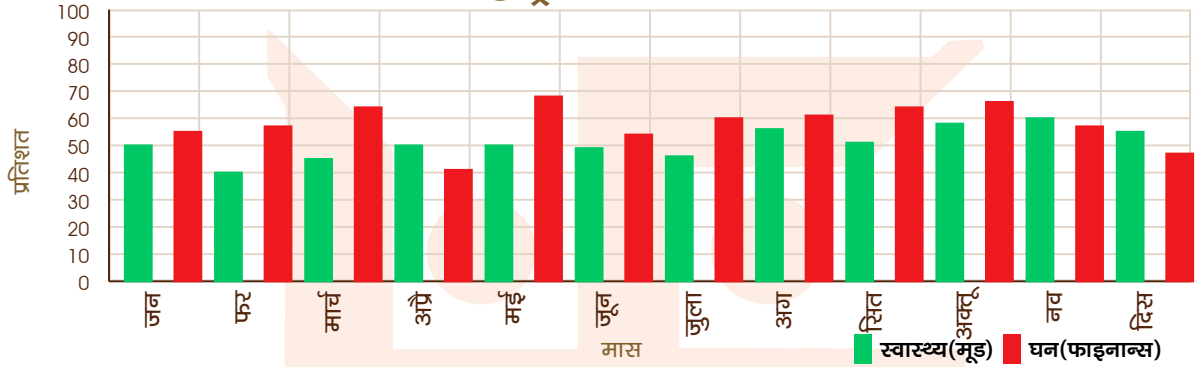
अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

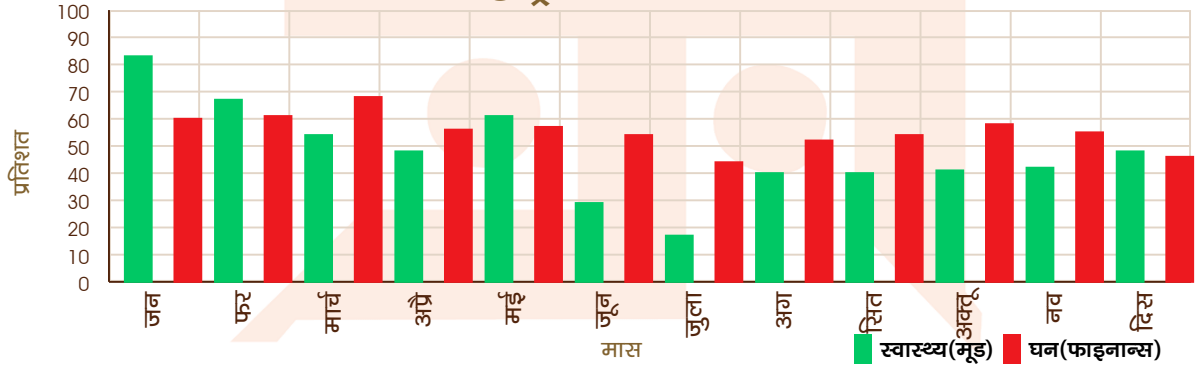
एस्ट्रोग्राफ - 2026



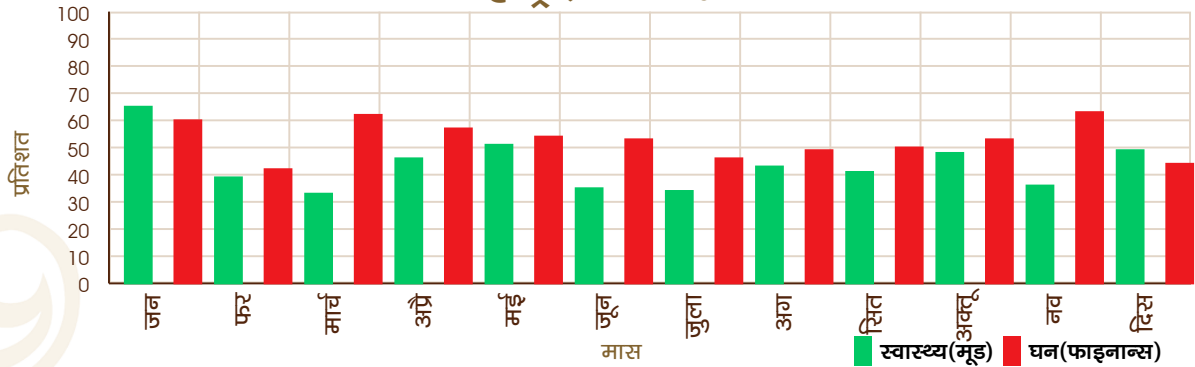
एस्ट्रोग्राफ - 2027



एस्ट्रोग्राफ - 2028



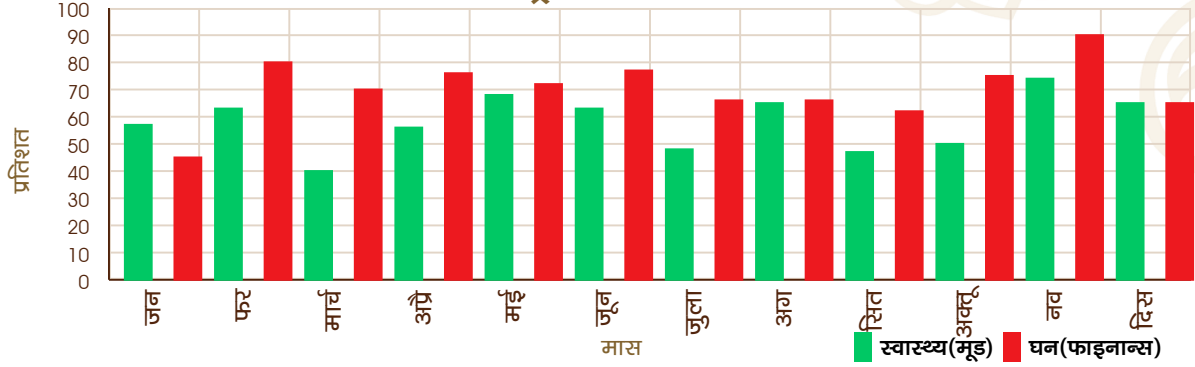
एस्ट्रोग्राफ - 2029



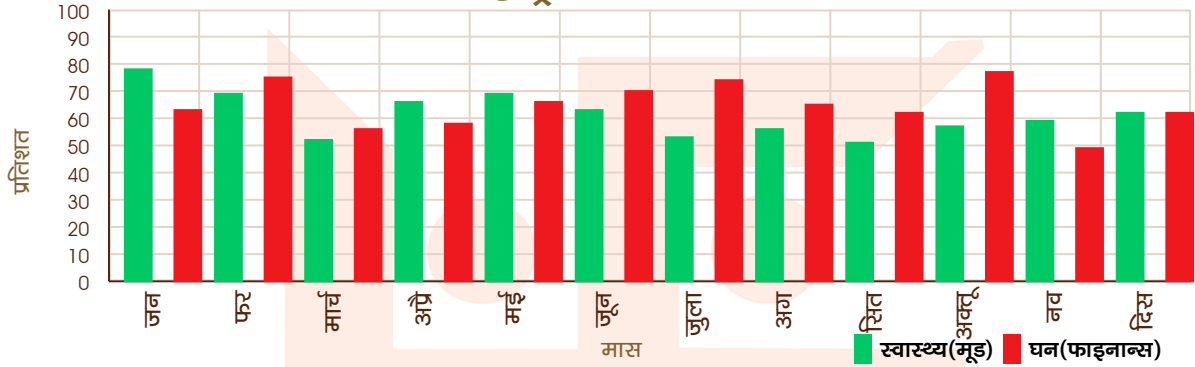
FUTUREPOINT
Astro Solutions



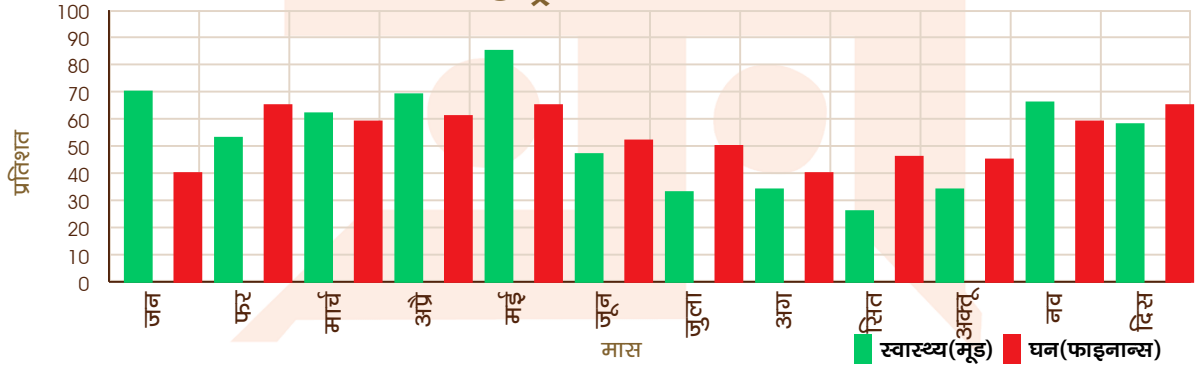
एस्ट्रोग्राफ - 2030



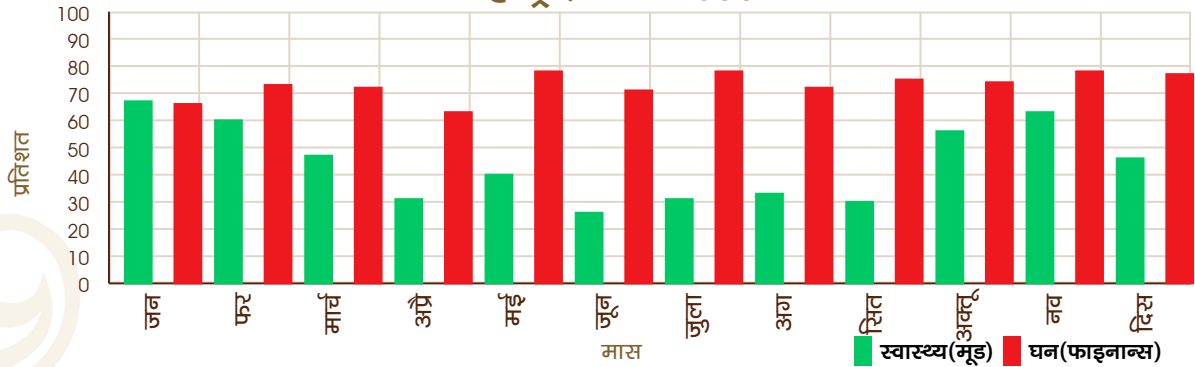
एस्ट्रोग्राफ - 2031



एस्ट्रोग्राफ - 2032



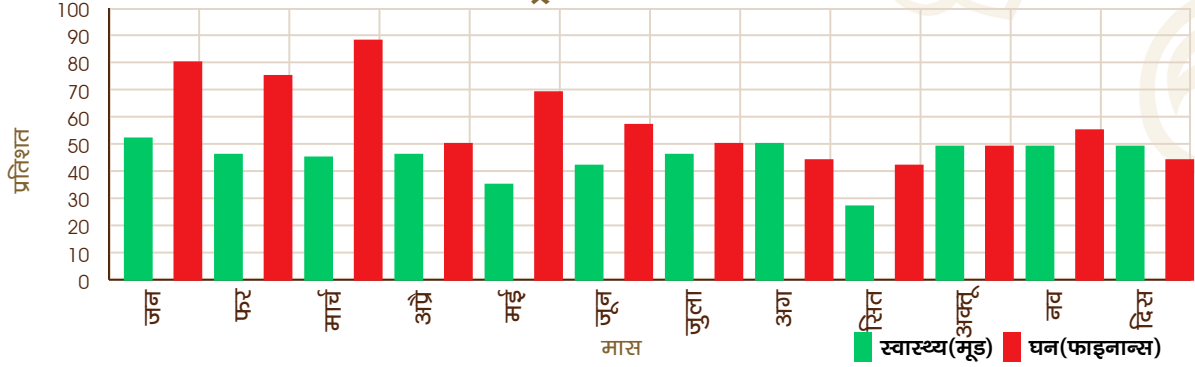
एस्ट्रोग्राफ - 2033



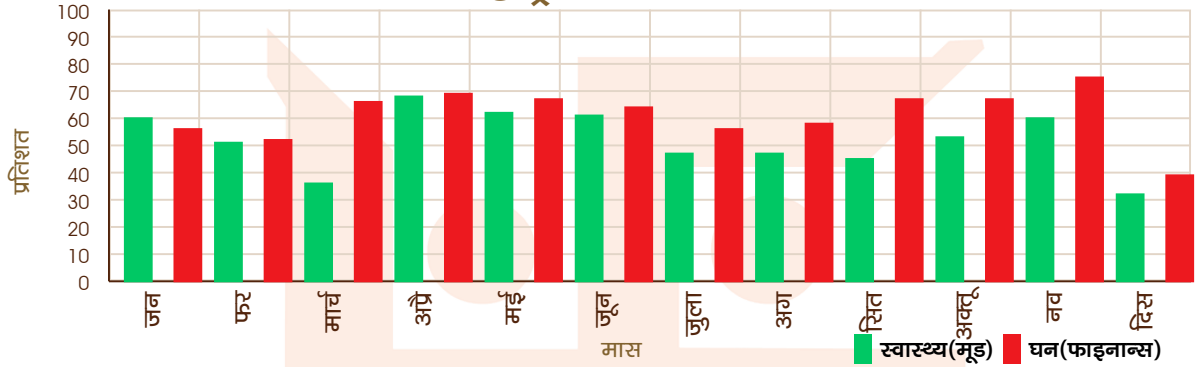
FUTUREPOINT
Astro Solutions



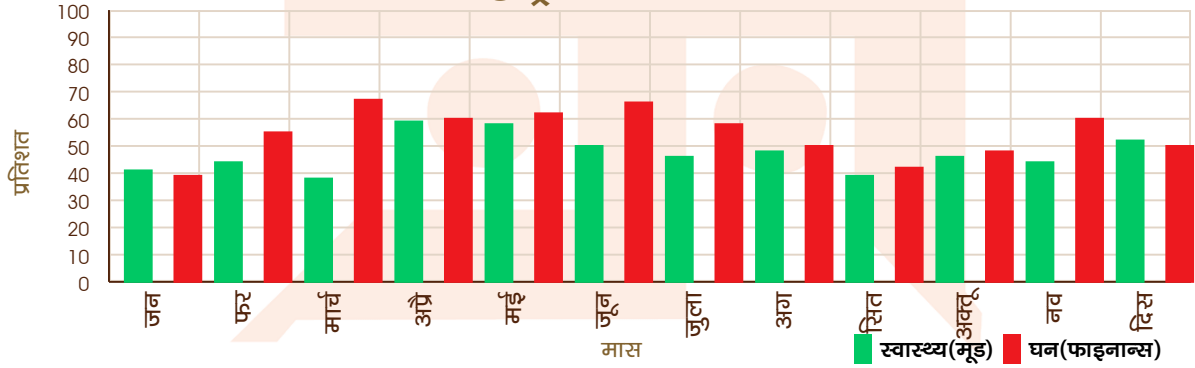
एस्ट्रोग्राफ - 2034



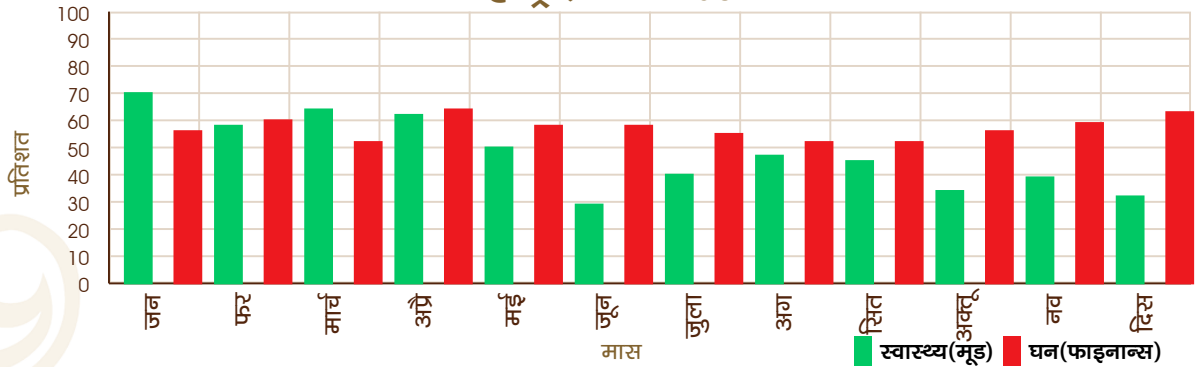
एस्ट्रोग्राफ - 2035



एस्ट्रोग्राफ - 2036



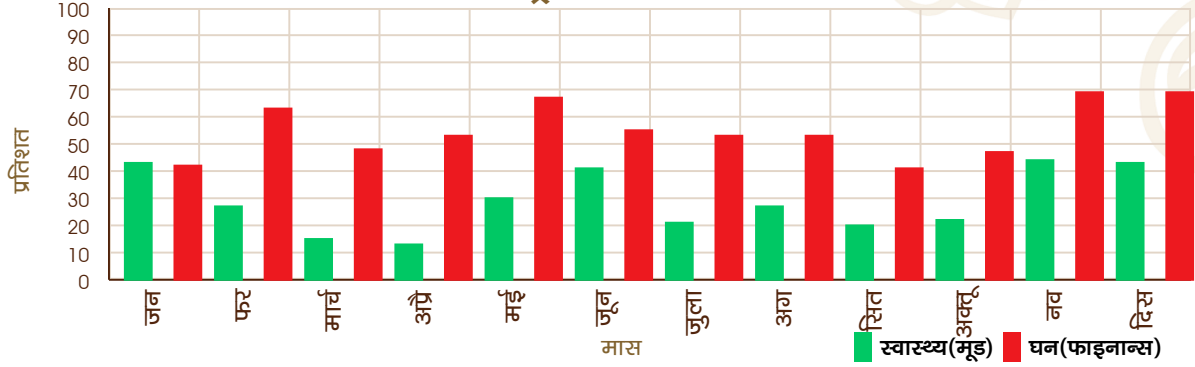
एस्ट्रोग्राफ - 2037



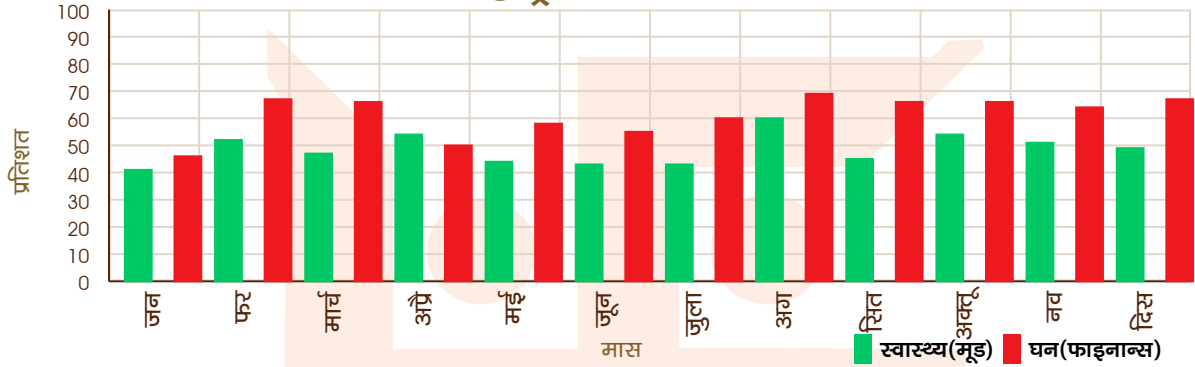
FUTUREPOINT
Astro Solutions



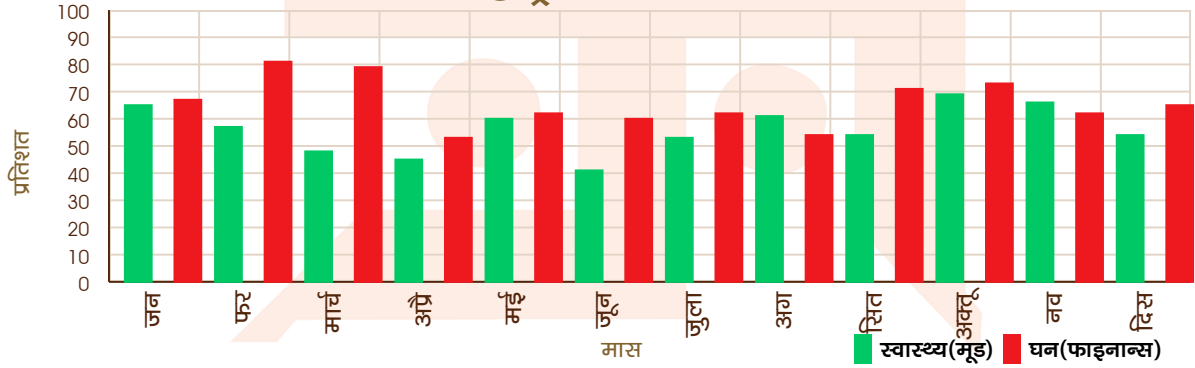
एस्ट्रोग्राफ - 2038



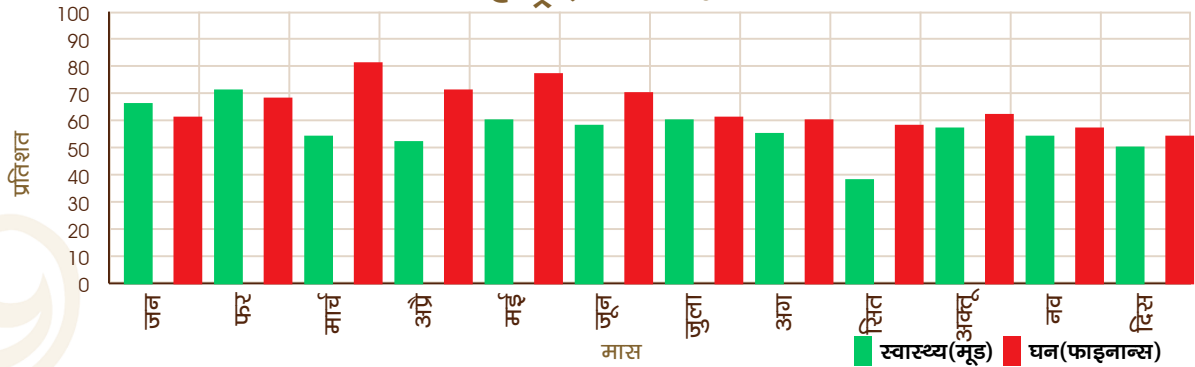
एस्ट्रोग्राफ - 2039



एस्ट्रोग्राफ - 2040



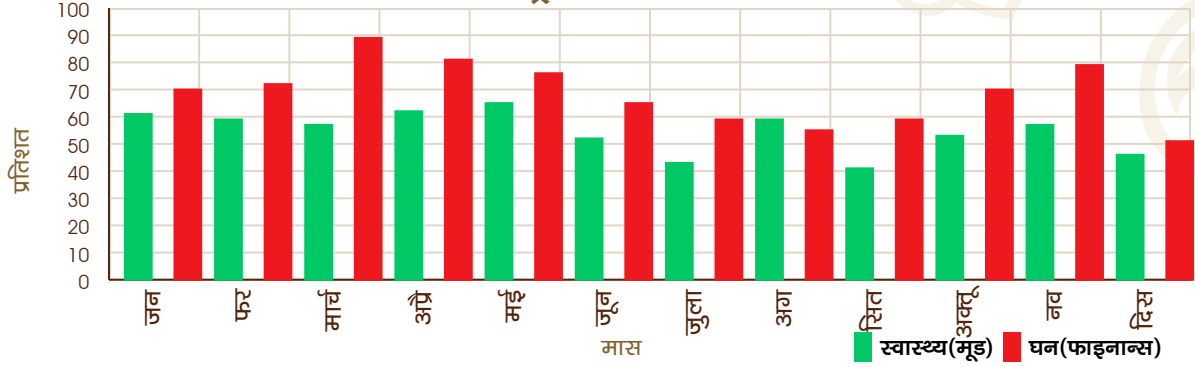
एस्ट्रोग्राफ - 2041



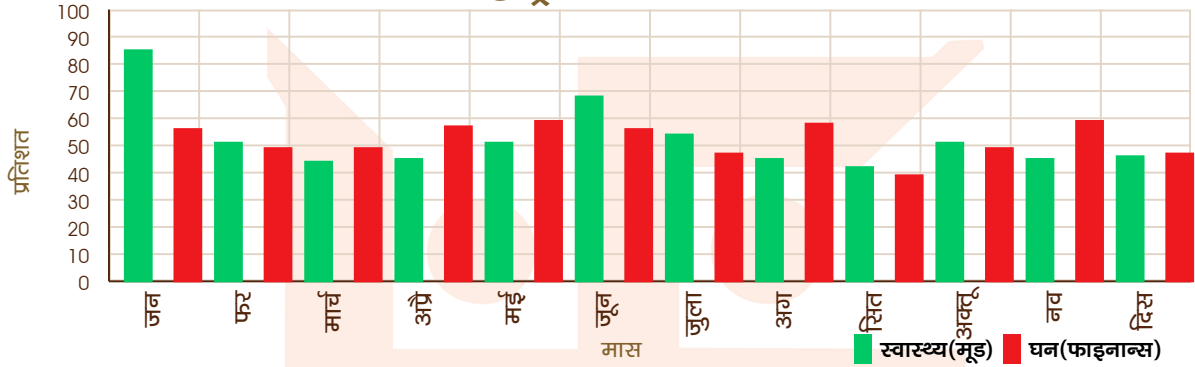
FUTUREPOINT
Astro Solutions



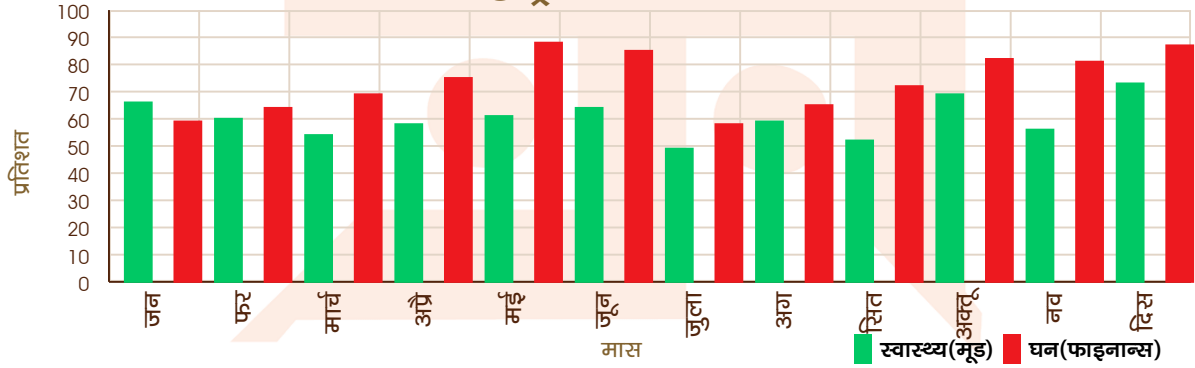
एस्ट्रोग्राफ - 2042



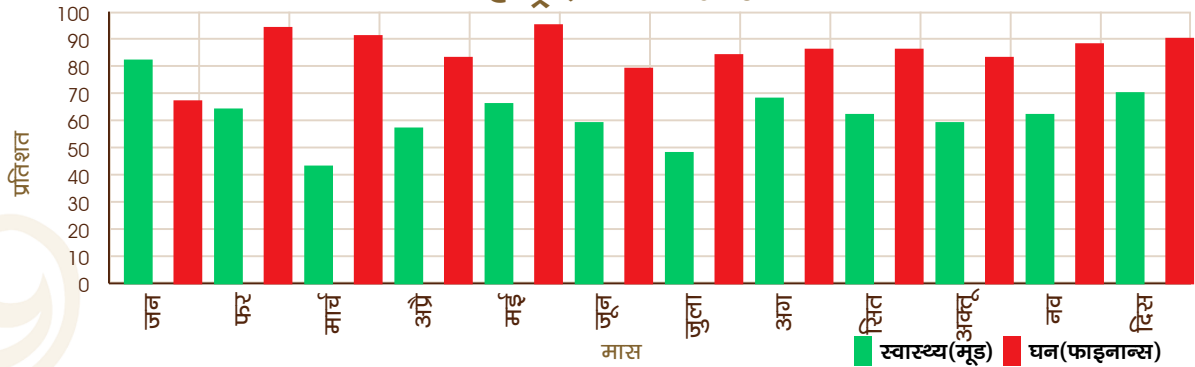
एस्ट्रोग्राफ - 2043



एस्ट्रोग्राफ - 2044



एस्ट्रोग्राफ - 2045



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग

अमलयोग

चन्द्राब्धोमन्यमलाहवयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि ।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान् ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है । फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे ।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।

तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-33 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान्, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-41 ॥

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप विद्वान् एवं धैर्यवान् होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सर्प भय योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।

शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।

शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमात्रीतिमान् भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-32 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥



FUTUREPOINT
Astro Solutions



॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि, चंद्र, शुक्र

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, बुध

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम् ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापक्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20 ॥

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमही सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेसे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।

शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध, गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्याः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात् आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः ।

॥ बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5. ॥

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, चंद्र

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म के कारण धन व्यय योग

शुभेन कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ।

स्वोच्चाभिन्नस्ववर्गस्थ धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.8/व्ययभाव-8 ॥

यदि जन्मपत्रिकामें दशमेश शुभ ग्रह से व्ययेश दृष्ट युक्त हो तथा अपने उच्च, मित्र स्वराशिगतनवांशक में हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु

योग की संभावना : 18 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धार्मिक कार्य में धन व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

‘‘केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।

दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ॥’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ॥

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

‘‘सपारिजातद्युचरः सुखानि ।’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के ‘‘पारिजात’’ भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह ‘‘पारिजात’’ वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



उत्तमवर्ग योग

“नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

“चेत्त्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः॥”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो “केमद्रुम” योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “केमद्रुम” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

“धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।